

असोज - २

# सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष २७, अङ्क १२

२०७५, असोज १६-३१

पूर्णाङ्क ६३०



प्रकाशक

सर्वोच्च अदालत

रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२००७२८, ४२००७२९, ४२००७५० Ext. २५११ (सम्पादन), २५१४ (छापाखाना), २१३१ (बिक्री)

फ्याक्स: ४२००७४९, पो.व.नं. २०४३८

Email: [info@supremecourt.gov.np](mailto:info@supremecourt.gov.np), Web: [www.supremecourt.gov.np](http://www.supremecourt.gov.np)

सम्पादन तथा प्रकाशन समिति

|   |              |
|---|--------------|
| माननीय न्यायाधीश श्री हरिकृष्ण कार्की, सर्वोच्च अदालत                             | - अध्यक्ष    |
| मुख्य रजिष्ट्रार श्री राजनप्रसाद भट्टराई  | - सदस्य      |
| नायब महान्यायाधिवक्ता श्री किरण पौडेल, प्रतिनिधि, महान्यायाधिवक्ताको कार्यालय     | - सदस्य      |
| रजिष्ट्रार श्री महेन्द्रनाथ उपाध्याय  | - सदस्य      |
| अधिवक्ता श्री खम्मबहादुर खाती, महासचिव, नेपाल बार एसोसिएसन                        | - सदस्य      |
| वरिष्ठ अधिवक्ता श्री खगेन्द्रप्रसाद अधिकारी, अध्यक्ष, सर्वोच्च अदालत बार एसोसिएसन | - सदस्य      |
| प्रा.डा.ताराप्रसाद सापकोटा, डिन, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, कानून संकाय              | - सदस्य      |
| सहरजिष्ट्रार श्री भद्रकाली पोखरेल, सर्वोच्च अदालत                                 | - सदस्य सचिव |

सम्पादक : श्री रामप्रसाद पौडेल

सम्पादन तथा प्रकाशन शाखामा कार्यरत्  
कर्मचारीहरू

शाखा अधिकृत श्री निलकण्ठ बराल  
शाखा अधिकृत श्री मन्दीरा शाही  
कम्प्युटर अधिकृत श्री विक्रम प्रधान  
ना.सु. श्री पुष्पराज शर्मा  
ना.सु. श्री अर्जुनबाबु सापकोटा  
सि.कं. श्री ध्रुव सापकोटा  
कम्प्युटर अपरेटर श्री विजय खड्का  
कम्प्युटर अपरेटर श्री अर्जुन सुवेदी  
कार्यालय सहयोगी श्री राजेश तिमल्सिना

भाषाविद् : श्री रामचन्द्र फुयाल

बिक्री शाखामा कार्यरत् कर्मचारी  
डि.श्री नरबहादुर खत्री

मुद्रण शाखामा कार्यरत् कर्मचारीहरू

सुपरभाइजर श्री कान्छा श्रेष्ठ  
मुद्रण अधिकृत श्री आनन्दप्रकाश नेपाल  
सिनियर प्रेसम्यान श्री नरेन्द्रमुनि बज्राचार्य  
सिनियर हेल्पर श्री तुलसीनारायण महर्जन  
सिनियर प्रेसम्यान श्री योगप्रसाद पोखरेल  
सिनियर मेकानिक्स श्री निर्मल बयलकोटी  
सहायक डिजायनर श्री रसना बज्राचार्य  
सिनियर बुकबाइन्डर श्री रमेश बासुकला  
सिनियर बुकबाइन्डर श्री विद्यानन्द पोखरेल  
बुकबाइन्डर श्री यमनारायण भडेल  
बुकबाइन्डर श्री मीरा वाग्ले  
कम्पोजिटर श्री प्रमिलाकुमारी लामिछाने  
प्रेसम्यान श्री केशवबहादुर सिटौला  
बुकबाइन्डर श्री अच्युतप्रसाद सुवेदी

विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त भई यस अङ्कमा  
प्रकाशित निर्णय / आदेशहरू

|               |    |              |    |
|---------------|----|--------------|----|
| संयुक्त इजलास | ११ | इजलास नं. ९  | २  |
| इजलास नं. १   | २  | इजलास नं. १० | १० |
| इजलास नं. २   | २  | इजलास नं. ११ | ५  |
| इजलास नं. ३   | १२ | इजलास नं. १२ | ७  |
| इजलास नं. ४   | ९  | इजलास नं. १३ | ६  |
| इजलास नं. ५   | १० | इजलास नं. १४ | २  |
| इजलास नं. ६   | १  | इजलास नं. १६ | १  |
| इजलास नं. ७   | ९  | इजलास नं. १८ | २  |
| इजलास नं. ८   | १३ | इजलास नं. १९ | ५  |
| जम्मा         | ६९ | जम्मा        | ४० |

कूल जम्मा

६९ + ४० = १०९

# नेपाल कानून पत्रिका

मा प्रकाशित भएका फैसलाहरू (२०१५ सालदेखि  
हालसम्म)

हेर्न, पढ्न तथा सुरक्षित गर्न

**[www.nkp.gov.np](http://www.nkp.gov.np)**

मा जानुहोला ।

## खोज्ने तरिका

सर्वप्रथम **[www.nkp.gov.np](http://www.nkp.gov.np)** लगइन गरेपश्चात् गृहपृष्ठमा देखिने **शब्दबाट फैसला खोज्नुहोस्** भन्ने स्थानमा आफूले खोज्न चाहेअनुसारको कुनै शब्द नेपाली युनिकोड फन्टमा टाइप गर्नुहोस् । यसबाट खोजेअनुसारको फैसला प्राप्त गर्न नसकेमा वेबसाइटको दोस्रो शीर्षकमा रहेको **वृहत् खोज** खोलेर विभिन्न किसिमले फैसला खोज्न सकिनेछ । त्यस अतिरिक्त **नेकाप प्रत्येक वर्ष** र **हाफ्रो बारेमा** समेत हेर्न सक्नुहुनेछ ।

यस पत्रिकाको इजलाससमेतमा उद्धरण गर्नुपर्दा निम्नानुसार गर्नुपर्नेछ:

सअ बुलेटिन, २०७५, ... - १ वा २, पृष्ठ ....

(साल) (महिना)

उदाहरणार्थ: सअ बुलेटिन, २०७५, असोज - २, पृष्ठ १

सर्वोच्च अदालतलगायत मातहतका अदालतहरू एवम् अन्य न्यायिक निकायहरूका कामकारवाहीसँग सेवाग्राहीहरूको कुनै गुनासो, उजुरी र सुझाव भए सर्वोच्च अदालत, प्रधानन्यायाधीशको निजी सचिवालयमा रहेको

**Toll Free Number**

**१६६०-०१-३३३-५५**

वा

इमेल ठेगाना

**[cjs@supremecourt.gov.np](mailto:cjs@supremecourt.gov.np)**

मा सम्पर्क गर्न सकिने छ ।

## विषयसूची

| क्र.सं.              | विषय   | पक्ष / विपक्ष  | पृष्ठ |                    |                |
|----------------------|--|--|-------|--------------------|----------------|
| <b>संयुक्त इजलास</b> |  |  |       | <b>१ - ८</b>       |                |
| १.                   | कर्तव्य ज्यान                                | नेपाल सरकार वि. लौमाया गुरुङ   |       |                    |                |
| २.                   | कर्तव्य ज्यान                                | रिजमानुल्लाह देवान वि. नेपाल सरकार                                   |       |                    |                |
| ३.                   | मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार                    | पवन कैध वि. नेपाल सरकार  |       |                    |                |
| ४.                   | लागु औषध खैरो हेरोइन                         | अवधेशप्रसाद पटेल वि. नेपाल सरकार                                     |       |                    |                |
| ५.                   | जग्गा खिचोला चलन                             | जोगनारायण साह तेलीसमेत वि. रामनारायण साह सोनार                       |       |                    |                |
| ६.                   | तर्फ र क्षेत्रफल यकिन गरी जग्गा छुट्याई पाउँ | यमबहादुर थापा वि. डिलबहादुर खत्री                                    |       |                    |                |
| ७.                   | मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार                    | योगेन्द्र ढकाल वि. नेपाल सरकार                                       |       |                    |                |
| ८.                   | कर्तव्य ज्यान                                | बहादेव कुर्मी वि. नेपाल सरकार  |       |                    |                |
| ९.                   | जबरजस्ती करणी                                | तेजबहादुर श्रेष्ठ वि. नेपाल सरकार                                    |       |                    |                |
| १०.                  | कर्तव्य ज्यान                                | नेपाल सरकार वि. शम्भु ठाकुर  |       |                    |                |
| ११.                  | बन्दी प्रत्यक्षीकरण                          | तनाया गोयन्कासमेत वि. श्यामलाल सरावगीसमेत                            |       |                    |                |
|                      |  |  |       | <b>इजलास नं. १</b> |                |
| १२.                  | बन्दी प्रत्यक्षीकरण                          | पुष्पराज पौडेल वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय, कपिलवस्तु                |       |                    | <b>८ - १०</b>  |
| १३.                  | लागु औषध (अफिम)                              | सिउराम वली वि. नेपाल सरकार   |       |                    |                |
|                      |  |  |       | <b>इजलास नं. २</b> |                |
| १४.                  | आयकर   | गणेशप्रसाद पाण्डेय वि. एल.एम. सुमिर ब्रदर्श प्रा.लि. डाँछी, काठमाडौं |       |                    | <b>१० - १२</b> |
| १५.                  | जबरजस्ती करणी                                | सर्वजित परियार (दमाई) वि. नेपाल सरकार                                |       |                    |                |
|                      |  |  |       | <b>इजलास नं. ३</b> |                |
| १६.                  | जबरजस्ती करणी                                | गिरीजाप्रसाद दाहाल वि. नेपाल सरकार                                   |       |                    | <b>१२ - १८</b> |
| १७.                  | अंश  | केशरबहादुर रावत वि. राजश्री रावतसमेत                                 |       |                    |                |
| १८.                  | दूषित नक्सा र निर्णय बदर                     | चन्द्रबहादुर चन्दसमेत वि. मालपोत कार्यालय, कञ्चनपुरसमेत              |       |                    |                |
| १९.                  | उत्प्रेषण / परमादेश                          | चन्द्रबहादुर सुनार वि. स्वास्थ्य मन्त्रालय, रामशाहपथसमेत             |       |                    |                |
| २०.                  | उत्प्रेषण / परमादेश                          | डिल्ली न्यौपाने वि. राष्ट्रिय वाणिज्य बैंक, के.का. काठमाडौंसमेत      |       |                    |                |
| २१.                  | भ्रष्टाचार                                   | रामभरत मण्डलसमेत वि. नेपाल सरकार                                     |       |                    |                |
| २२.                  | उत्प्रेषण                                    | ब्रमु महर्जन वि. हिरामान महर्जनसमेत                                  |       |                    |                |
| २३.                  | कर्तव्य ज्यान                                | देवकुमार राई वि. नेपाल सरकार   |       |                    |                |

|                    |                           |   |
|--------------------|---------------------------|---|
| २४.                | उत्प्रेषण / परमादेश       | मीरा चौधरीसमेत वि. उच्च अदालत, पाटनसमेत             |
| <b>इजलास नं. ४</b> |                           | <b>१८ - २३</b>                                      |
| २५.                | कर्तव्य ज्यान             | नेपाल सरकार वि. मानबहादुर राई                       |
| २६.                | कर्तव्य ज्यान             | नेपाल सरकार वि. रामबहादुर राई                       |
| २७.                | कर्तव्य ज्यान             | नेपाल सरकार वि. यमान घले                            |
| २८.                | अपहरण तथा शरीर बन्धक      | नेपाल सरकार वि. कर्णबहादुर लामासमेत                 |
| २९.                | कर्तव्य ज्यान             | मोहनबहादुर वि.क. वि. नेपाल सरकार                    |
| ३०.                | बन्दी प्रत्यक्षीकरण       | कम्पलाल चौधरी वि. सुनसरी जिल्ला अदालत, इनरूवासमेत   |
| ३१.                | अंश                       | मलदा मुसलमान वि. महमद रजा मुसलमानसमेत               |
| <b>इजलास नं. ५</b> |                           | <b>२३ - २८</b>                                      |
| ३२.                | मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार | नेपाल सरकार वि. शर्मीला वि.क.                       |
| ३३.                | मोही लगत कट्टा            | राधेश्याम जोशी वि. भुकरेत सरदार वातर                |
| ३४.                | मोही दर्ता नामसारी        | तेजनारायण चौधरी वि. सागरमल दुगड                     |
| ३५.                | उत्प्रेषण / परमादेश       | विश्वनाथ कोइराला वि. मालपोत कार्यालय, कलंकीसमेत     |
| ३६.                | बन्दी प्रत्यक्षीकरण       | सरीता गुरुड वि. महानगरीय परिसर, भक्तपुर             |
| ३७.                | बन्दी प्रत्यक्षीकरण       | नारायण भण्डारी वि. महानगरीय अपराध महाशाखा, टेकुसमेत |

|                    |                                  |   |
|--------------------|----------------------------------|---|
| ३८.                | परमादेश                          | प्रकाशचन्द्र उदास वि. ऋण असुली न्यायाधिकरण, काठमाडौं                                |
| ३९.                | उत्प्रेषण / परमादेश              | उदयचन्द्र पराजुली वि. भूमिसुधार तथा व्यवस्था विभाग, बबरमहल काठमाडौंसमेत             |
| ४०.                | जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाई पाउँ | भगती पार्की वि. नन्दराज पन्त  |
| <b>इजलास नं. ६</b> |                                  | <b>२८ - २९</b>  |
| ४१.                | उत्प्रेषण / परमादेश              | योजितराज प्रधान नेपाली वि. मालपोत कार्यालय, इनरूवा, सुनसरीसमेत                      |
| <b>इजलास नं. ७</b> |                                  | <b>२९ - ३४</b>  |
| ४२.                | उत्प्रेषण / परमादेश              | अग्निप्रसाद पौडेल वि. भूमिसुधार तथा व्यवस्था मन्त्रालय, सिंहदरबारसमेत               |
| ४३.                | उत्प्रेषण / परमादेश              | हरिप्रसाद गिरी वि. मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजार, काठमाडौंसमेत                        |
| ४४.                | उत्प्रेषण                        | चन्द्रबहादुर थापासमेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबारसमेत |
| ४५.                | उत्प्रेषण                        | इन्द्रकुमारी खत्रीसमेत वि. पुनरावेदन अदालत, बुटवलसमेत                               |
| ४६.                | उत्प्रेषण                        | पवनकुमार संघई वि. तराई टेलिभिजन नेटवर्क प्रा.लि.समेत                                |
| ४७.                | अंश                              | कृष्णदत्त जोशी वि. कलावती जोशीसमेत  |

|                     |                        |  |
|---------------------|------------------------|--|
| ४८.                 | उत्प्रेषण              | केशरी पुरी वि. पुनरावेदन अदालत, पाटनसमेत                         |
| <b>इजलास नं. ८</b>  |                        | <b>३४ - ४०</b>   |
| ४९.                 | लागु औषध (ब्राउन सुगर) | राजु विश्वकर्मासमेत वि. नेपाल सरकार                              |
| ५०.                 | जबरजस्ती करणी          | गोविन्द के.सी. वि. नेपाल सरकार                                   |
| ५१.                 | लागु औषध (खैरो हेरोइन) | विनोद परियार, वि. नेपाल सरकार                                    |
| ५२.                 | कर्तव्य ज्यान          | विमलेशप्रसाद यादव वि. नेपाल सरकार                                |
| ५३.                 | कर्तव्य ज्यान          | नेपाल सरकार वि. सोवितबहादुर वि.क.                                |
| ५४.                 | दा.खा. नामसारी दर्ता   | प्रकाश विष्टसमेत वि. सत्यकुमार बाला श्रेष्ठसमेत                  |
| ५५.                 | उत्प्रेषण              | कान्छा मकैसमेत वि. पुनरावेदन अदालत, पाटनसमेत                     |
| ५६.                 | उत्प्रेषण              | दुलियादेवी यादव वि. उच्च अदालत, विराटनगरसमेत                     |
| ५७.                 | कर्तव्य ज्यान          | मकसुधन चौधरी वि. नेपाल सरकार                                     |
| ५८.                 | कर्तव्य ज्यान          | मैया तामाङ वि. नेपाल सरकार                                       |
| ५९.                 | कर्तव्य ज्यान          | नेपाल सरकार वि. कमला वि.क.                                       |
| <b>इजलास नं. ९</b>  |                        | <b>४० - ४१</b>   |
|                     | उत्प्रेषण / परमादेश    | मैया श्रेष्ठ वि. भूमिसुधार कार्यालय, काठमाडौंसमेत                |
| ६०.                 | जिउ मास्ने बेच्ने      | सुरज राई वि. नेपाल सरकार   |
| <b>इजलास नं. १०</b> |                        | <b>४१ - ४७</b>   |
| ६१.                 | परमादेश                | कृष्णानन्द झा वि. स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मन्त्रालय, रामशाहपथसमेत |

|                     |                                    |  |
|---------------------|------------------------------------|--|
| ६२.                 | राजीनामा लिखत दर्ता बदर दर्ता कायम | कञ्चन भगतसमेत वि. रीता गुप्ता रौनियार                  |
| ६३.                 | अंश चलन                            | खगेन्द्र घिमिरेसमेत वि. दिनेश घिमिरे                   |
| ६४.                 | परमादेश                            | माधवेन्द्र विष्ट वि. गुडविल फाइनान्स लिमिटेड           |
| ६५.                 | उत्प्रेषण / परमादेश                | नविन राज सिंहसमेत वि. गुरुप्रसाद दाहाल                 |
| ६६.                 | निषेधाज्ञा                         | प्रेमकुमारी गुरुङसमेत वि. रीता लामासमेत                |
| ६७.                 | कर्तव्य ज्यान                      | नेपाल सरकार वि. शुभाष तामाङसमेत                        |
| ६८.                 | जबरजस्ती करणी                      | लोकबहादुर विष्ट वि. नेपाल सरकार                        |
| ६९.                 | निषेधाज्ञा                         | जोगेन्द्रप्रसाद यादव वि. कुसुमवती यादवनी               |
| ७०.                 | उत्प्रेषण / परमादेश                | डा.दामोदर गजुरेल वि. चाहाना श्रेष्ठसमेत                |
| <b>इजलास नं. ११</b> |                                    | <b>४७ - ५०</b>   |
| ७१.                 | कर्तव्य ज्यान                      | खड्क वि.क. वि. नेपाल सरकार                             |
| ७२.                 | निषेधाज्ञा                         | इसराइल मियाँ अन्सारीसमेत वि. सुल्तान मियाँ अन्सारी     |
| ७३.                 | निषेधाज्ञा                         | कल्पना सापकोटा वि. महानगरीय प्रहरी परिसर, जावलाखेलसमेत |
| ७४.                 | निषेधाज्ञा                         | अरुणबहादुर श्रेष्ठसमेत वि. हरिहरलाल श्रेष्ठसमेत        |
| ७५.                 | निषेधाज्ञा / परमादेश               | हेमन्तकुमार सराफ वि. गोविन्द शर्मा                     |

|                     |  |   |
|---------------------|--|---|
| <b>इजलास नं. १२</b> |  | <b>५० - ५५</b>  |
| ७६.                 | लिखत दर्ता<br>बदर पूर्ववत्<br>दर्ता कायम       | राम पवित्र साह सुडी वि.<br>मिनादेवी मण्डल   |
| ७७.                 | जग्गा<br>खिचोला<br>मेटाई हक<br>कायम<br>गरिपाउँ | भागीरथी कहार वि. बहराईची<br>कलवार   |
| ७८.                 | डाँका चोरी                                     | नेपाल सरकार वि. कमल<br>योगीसमेत   |
| ७९.                 | कर्तव्य ज्यान                                  | शम्भु गौतमसमेत वि. नेपाल<br>सरकार   |
| ८०.                 | जग्गा<br>खिचोला<br>चलन                         | शेख तहिद वि. शेख रहमन<br>अलिसमेत  |
| ८१.                 | उत्प्रेषण /<br>परमादेश                         | अनिल क्षेत्री वि. राष्ट्रिय<br>वाणिज्य बैंक, के.का. सञ्चालक<br>समिति, सिंहदरबारसमेत |
| <b>इजलास नं. १३</b> |  | <b>५५ - ५८</b>  |
| ८२.                 | जग्गा यकिन<br>गरी रोकका<br>फुकुवा              | शंकरलाल मल्लाह वि.<br>नन्दलाल कुर्मिसमेत  |
| ८३.                 | जालसाजी  | लक्ष्मी शर्मा वि. राहुल<br>विश्वकर्मासमेत   |
| ८४.                 | उत्प्रेषण /<br>परमादेश                         | लब्जीबहादुर कार्की वि.<br>काठमाडौं जिल्ला अदालत,<br>बबरमहलसमेत                      |

|                     |                                     |  |
|---------------------|-------------------------------------|--|
| ८५.                 | जबरजस्ती<br>करणी                    | मनबहादुर वि.क. (कामी) वि.<br>नेपाल सरकार                 |
| <b>इजलास नं. १४</b> |                                     | <b>५८ - ६१</b>   |
| ८६.                 | उत्प्रेषण /<br>परमादेश              | रमेशकुमार यादव वि. जिल्ला<br>प्रहरी कार्यालय, सप्तरीसमेत |
| ८७.                 | जबरजस्ती<br>करणी /<br>कर्तव्य ज्यान | बुधबहादुर पौडेलसमेत वि.<br>नेपाल सरकार                   |
| <b>इजलास नं. १६</b> |                                     | <b>६१</b>  |
| ८८.                 | कर्तव्य ज्यान                       | नेपाल सरकार वि. मानबहादुर<br>डाँगी                       |
| <b>इजलास नं. १८</b> |                                     | <b>६१ - ६३</b>   |
| ८९.                 | लागु औषध<br>खैरो हेरोइन             | नेपाल सरकार वि. धर्मराज<br>रैदास चमार                    |
| ९०.                 | अंश नामसारी                         | सीतादेवी शर्मा तिमिल्सिना वि.<br>लवकुश के.सी.            |
| <b>इजलास नं. १९</b> |                                     | <b>६३ - ६८</b>   |
| ९१.                 | जबरजस्ती<br>करणी                    | नेपाल सरकार वि. धनेन्द्र<br>राजवंशी                      |
| ९२.                 | कर्तव्य ज्यान                       | नेपाल सरकार वि. चौतिराज<br>राईसमेत                       |
| ९३.                 | वैदेशिक<br>रोजगार ठगी               | किरण नेपाल वि. नेपाल सरकार                               |
| ९४.                 | आगोलागी                             | नेपाल सरकार वि. सोनेलाल<br>महतोसमेत                      |
| ९५.                 | जबरजस्ती<br>करणी उद्योग             | नेपाल सरकार वि. सर्वेश<br>लोनिया                         |



संयुक्त इजलास

१

स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे, ०७०-RC-०१०६ र ०७१-CR-११०७, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. लौमाया गुरुङ र लौमाया गुरुङ वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादीले मौकाको बयानविपरीत हुने गरी अदालतमा बयान गर्दा घाँटीमा साल बेरिएको मृत बच्चा जन्मिएकोले खाल्डो खनी गाडिदिएको भनी इन्कारी बयान गरे तापनि चिकित्सकद्वारा दिएको शव परीक्षण प्रतिवेदनबाट मृतक नवजात शिशुको मृत्यु श्वासप्रश्वास अवरुद्ध गरिएबाट भएको तथा जन्मदाको अवस्थामा जिउँदै रहेको देखिएको र यदि स्वाभाविक प्राकृतिक रूपबाट मृत्यु भएको भए प्रतिवादीले सो कुरा मौकामा भनेर मात्र मृत्युपछिको संस्कार गर्नुपर्नेमा त्यसो नगरिएको हुँदा र सो इन्कारी बयानको समर्थन हुने ठोस प्रमाण मिसिल संलग्न भएको नदेखिएबाट प्रतिवादी लौमायाउपरको आरोपित कसुर शङ्कारहित ढंगबाट पुष्टि हुन आएकोले निज प्रतिवादीउपर कसुर कायम गरेको सुरु फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, बागलुङको फैसला मिलेकै देखिन आउने।

तसर्थ माथि विवेचित आधार कारणबाट प्रतिवादी लौमाया गुरुङलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याएको सुरु पर्वत जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, बागलुङको मिति २०७०।१०।२१ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

प्रतिवादी लौमाया गुरुङको श्रीमान् १८ महिनाअघिदेखि विदेश कतार गएको अवस्थामा आफ्नै गाउँका देवर नाता पर्ने रामबहादुर गुरुङसँगको यौन सम्पर्कबाट निज गर्भवती भएको देखिएको, निज रामबहादुरले आफ्नै करणीबाट रहन गएको गर्भको बारेमा बेवास्ता गरेको, ३ जना छोरीहरूको लालनपालन, शिक्षादीक्षा, स्वास्थ्योपचारसमेतको जिम्मेवारीसमेत यिनै

प्रतिवादीमा रहेको, निज गर्भवती भई बच्चा जन्माउने अवस्थासम्म आइपुग्दा कसैले सहयोग गरेको अवस्था नदेखिएको, गर्भ बोक्ने महिलाको मन्जुरीले कानूनले तोकेको प्रक्रिया पूरा गरेर गर्भपतन गराउन पाउने कानूनी व्यवस्थाको जानकारी निजलाई भएको नदेखिएको र ग्रामीणस्तरसम्म गर्भपतन तथा प्रजनन स्वास्थ्यको लागि चिकित्सक / अस्पताल / औषधी उपचारको सुविधा नपुगेको कारणबाट लोकलाजबाट बच्नको लागि प्रतिवादीबाट प्रस्तुत वारदात हुन गएको देखिँदा निज प्रतिवादी लौमाया गुरुङलाई उपर्युक्त ऐनबमोजिमको सजाय दिँदा चर्को हुने लागेकोले ४ वर्ष मात्र कैदमा राख्न उपयुक्त देखिने।

इजलास अधिकृत: विदुर काफ्ले

इति संवत् २०७३ साल कात्तिक २९ गते रोज २ शुभम्।

२

स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे, ०७१-CR-०३८१, कर्तव्य ज्यान, रिजमानुल्लाह देवान वि. नेपाल सरकार

जाहेरवालाको प्रतिवादीसँग रिसइवी रहेको देखिएको, मृतक नाबालक बेपत्ता भएदेखि नै प्रतिवादीउपर किटानी जाहेरी परेको, प्रतिवादीकै छोरी इसरत जहानको मौकाको कागज तथा अदालतमा आई गरेको बकपत्रसमेतबाट जाहेरवालासँग प्रतिवादीको मनमुटाव रहेको देखिएको, रिसइवी रहेको कुरामा स्वयम् प्रतिवादीले पनि स्वीकार गरिरहेको अवस्था छ। आफ्नो छोरा हराएपछि जाहेरवालाले मिति २०६८।१।१९ मा प्रतिवादीले आफू र बालबच्चासमेतलाई खतम पारी तेजाब हाली मारिदिन्छु भनी धम्की दिने गरेको थिए भनी निवेदन दिएको, लास जाँच मुचुल्काबाट मृत बालकको पेट, छाती तथा लिङ्गका भाग जलेको पाइनु र शव परीक्षण प्रतिवेदनबाट मृतकको मृत्यु जलेर भएको देखिएबाट जाहेरवालाले उक्त निवेदनमा उल्लेख गरेको भनाइ सिलसिलाबद्ध रूपमा मिल्न आएको देखिन्छ। हदिस मियाँ अन्सारीले मिति २०६८।१।१८ गते बिहान जाहेरवालाको छोराले आफ्नो पसलबाट पापड किनी गएकोमा केही समयपछि निज बेपत्ता भएको सुनेको र

ऐ. २० गते निजको मृत लास फेला परेको भनी मौकामा गरेको कागज तथा यी प्रतिवादी र अपरिचित चालकसमेत भई जाहेरवालाको छोरालाई मिति २०६८।१।१८ गतेको बिहान मोटरसाइकलको बीचमा राखी गण्डकतर्फ लगेको देखेको हुँ भनी वीरेन्द्र साहसमेतको मौकाको कागज तथा अदालतमा गरेको बकपत्रसमेतबाट सिलसिलाबद्ध रूपमा वारदात पुष्टि हुनुको साथै प्रतिवादीको संलग्नता यी प्रतिवादी रिजमानुल्लाह देवानले जाहेरवालाको छोरा वर्षीय सोएब अखतरलाई कर्तव्य गरी मारेको देखिन आउने।

अतः प्रतिवादी रिजमानुल्लाह देवानले अभियोग दाबीबमोजिम कसुर गरेको प्रमाणित भएको हुँदा निजलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं.बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याई सुरु बारा जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गरेको र अपहरणतर्फ समेत प्रतिवादीलाई सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुन नसक्ने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाको मिति २०७०।१०।२८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: विदुर काफ्ले

कम्प्युटर: अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७३ साल कात्तिक २९ गते रोज २ शुभम्।

३

**स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०७१-CR-१३०३, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार, पवन कैध वि. नेपाल सरकार**

कानूनमा कुनै पनि महिला वा बालिकालाई अभिभावकको मन्जुरीबेगर मुलुकबाहिर र मुलुकभित्र ओसारपसार गर्न मिल्दैन भन्ने व्यवस्था रहेको छ यो कानूनको परिपालना गर्नुपर्दछ। यसलाई जान्दिन भन्न मिल्दैन। प्रतिवादीहरूले बालिकालाई अभिभावकको मन्जुरीबेगर ओसारपसार गर्ने उद्देश्यबाट लिई गएको देखिन्छ। नाबालकहरू माटोको भाँडा हुन् तिनमा आफूमाथि आइपर्ने खतराबारेमा महसुस हुँदैन। यसको अतिरिक्त महिला वा नाबालिका ओसारपसार गर्ने

कार्य र चेलीबेटी बेचबिखन गर्ने जस्तो अपराध कठोर दायित्व (Strict Liability) भित्रको विषयक्षेत्रभित्र पर्दछ। यस्ता अपराधमा मुलुकबाहिर मन्जुरीबेगर लैजानु मात्र पनि अपराध हुन्छ। यसमा मनसाय तत्त्वको परीक्षण आवश्यकसमेत नहुने।

बेचबिखनमा परेका भनिएका पीडितहरू बालबालिका रहेको र राज्य र समाजको संरक्षण अत्यावश्यक पर्ने अवस्थाका बालबालिकालाई उनीहरूको इच्छाविरुद्ध काममा समेत लगाउन नसकिने अवस्थामा बेचबिखन नै गरिएको कार्यलाई अदालतले उदार दृष्टिकोण र नरम नीति अपनाउँदै जाने हो भने यसप्रकारका अपराधले समाजमा प्रश्रय पाउँदै जान सक्ने अवस्था रहने।

तसर्थ माथि विश्लेषण गरिएका आधार कारण र प्रमाणहरूसमेतबाट निज प्रतिवादीहरूले पीडित परिवर्तित नाम २०७०(१७) ए समेतलाई ललाई फर्काई प्रभाव र झुक्यानमा पारी निजहरूको अभिभावकको मन्जुरी नै नलिई भारतको पन्जाब हरियाणा बजारस्थित डान्सबार रेस्टुरेन्टमा आउने ग्राहकहरूसँग अवैध यौन कार्यमा लगाउने उद्देश्यले नेपाल भारतको सिमाना सुनौलीसम्म लगेकोले निज प्रतिवादीहरूलाई अभियोग माग दाबीबमोजिम नै मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा १५(१)(ड)(२) बमोजिम जनही ११ वर्ष कैद र रु.१०००००।- (एक लाख) जरिवानासमेत हुने ठहर्‍याएको सुरु रूपन्देही जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, बुटवलको मिति २०७१।४।२८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

मुद्दाको विषयवस्तु तथा अपराधको गाम्भीर्यलाई विचार गर्दा, यस्तो अपराधको नियन्त्रण तथा न्यूनीकरण गर्नको लागि अपराधको रोकथाम परिणाममुखी उपायहरू अवलम्बन गर्नुपर्ने महसुस गरी सम्बन्धित सरोकारवालाहरू नेपाल सरकार महिला बालबालिका तथा समाज कल्याण मन्त्रालय तथा प्रहरी प्रधान कार्यालय र महान्यायाधिवक्ताको कार्यालयका नाममा निम्न लिखित निर्देशनात्मक आदेश जारी

गरिदिएको छः

(क) महिला हिंसा, चेलीबेटी बेचबिखन अपराधको अनुसन्धान, अभियोजन गर्ने निकायहरू तथा प्रत्यक्ष नीतिगत निर्णय गर्ने सरोकार रहेको महिला बालबालिका तथा समाज कल्याण मन्त्रालयका बीचमा समन्वय गरी किन यस्तो आपराधिक कार्यहरूमा अपेक्षित परिणाममुखी नियन्त्रण हुन नसकेको हो ? आवश्यक परे यस क्षेत्रमा काम गर्ने गैरसरकारी संस्था अन्तर्राष्ट्रिय गैरसरकारी संस्थासमेतसँग समन्वय गरी अपराध नियन्त्रणका उपायहरू कार्यान्वयनमा ल्याउने ।

(ख) आर्थिक अभाव, अशिक्षा जस्ता कारणबाट नै अधिकांश सोझा ग्रामीण भेगका चेलिबेटी ओसारपसार हुने गरेको तथ्य रहेको देखिन्छ । महिलाहरूको आय आर्जनको लागि सरकारी तथा संस्थाहरूमा रोजगारी सिर्जना गर्ने व्यापार गर्न बैंकिङ ऋण लगानीमा सहज पहुँचको उपाय खोजी ग्रामीण क्षेत्रका महिलाहरूको आय आर्जनमा अभिवृद्धि गर्ने कार्य गर्ने ।

(ग) बालबालिकाहरूलाई विद्यालयस्तरमा नै सचेतना कार्यक्रमहरू सञ्चालन गरी बेचबिखनमा परी उद्धार गरी फर्केका महिलाले पाएका यथार्थ वास्तविक पीडाहरूको श्रव्यदृश्य (फिल्म) निर्माण गरी ग्रामीण महिलाहरूमा चेतना अभिवृद्धि गर्नेलगायतका आवश्यक र उपयुक्त निरोधात्मक उपायहरू अवलम्बन गर्ने ।

इजलास अधिकृतः रामप्रसाद बस्याल

इति संवत् २०७३ साल मङ्सिर १२ गते रोज १ शुभम् ।

४

स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री विध्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०७१-CR-१०४८, लागु औषध खैरो हेरोइन, अवधेशप्रसाद पटेल वि. नेपाल सरकार सहप्रतिवादी सविना लामाले अधिकारप्राप्त

अधिकारीसमक्ष र अदालतमा समेत गरेको बयानमा बरामद भएको लागु औषध प्रतिवादी अवधेश पटेलले दिएका हुन् भनी कसुरमा साबिती भई पुनरावेदक अवधेश पटेललाई पोल गरेको देखिन्छ । सो पोल बयान बरामद भएको भौतिक सबुदबाट पुष्टि भएकै छ । कसुरमा आफू साबिती भई सो कसुरमा संलग्न व्यक्तिहरूको नाउँ खुलाई गरेको पोललाई बिनाआधार अन्यथा भनी मान्न मिल्ने हुँदैन । पुनरावेदक प्रतिवादीसमेत अन्य प्रतिवादीहरू सविना लामा र कृष्ण पटेल भन्ने कृष्ण महतो नुनिया एकैस्थानमा रहेको अवस्थामा पक्राउ परेको अवस्था छ । वस्तुतः भारत रक्सौलबाट लागु औषध खरिद गरी ल्याई दुर्व्यसनीहरूलाई बिक्री गर्ने उद्देश्यले यी तिनै प्रतिवादीहरूको एक आपसमा सम्पर्क भई गैरकानूनी कार्य गर्न सहमति भएको पाइयो । अन्य प्रतिवादीहरूले कसुर ठहर भएकोमा पुनरावेदन नै गरेको देखिँदैन । लागु औषध प्रतिवादी सविना लामाबाट बरामद भए तापनि सो लागु औषध कारोबारमा पुनरावेदक प्रतिवादी अवधेश पटेलको समेत प्रत्यक्ष सहभागिता रहेको प्रमाणबाट पुष्टि हुने ।

निरपेक्ष दायित्व Strict Liability अन्तर्गतका अपराधमा कसुरदारको आपराधिक मनसायको समेत परीक्षण गरिरहनुपर्ने अवस्था हुँदैन । प्रतिवादीको साथबाट लागु औषध बरामद हुनु नै पर्याप्त हुन जान्छ । अनुसन्धान अधिकारीसमक्षको बयान बेहोरा डरधाक धम्कीको आधारमा भएको भए सो कुराको जिकिरसमेत लिई पुष्टि गराउने पर्याप्त प्रमाण प्रतिवादीले पेस गर्न सक्नुपर्ने हुन्थ्यो । प्रस्तुत मुद्दाका सन्दर्भमा लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १२ बमोजिम निजको इन्कारी बयान प्रमाणित गर्ने भार पुनरावेदक प्रतिवादीमै रहेको देखिन्छ । तर अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष भएको बयान झुठ्ठा हो भन्नेबाहेक उक्त बयान झुठ्ठा स्थापित हुने कुनै वस्तुनिष्ठ प्रमाण पुनरावेदक प्रतिवादीले प्रस्तुत गर्न सकेको नदेखिँदा प्रतिवादी लागु औषध अपराधमा निर्दोष रहेछन् भनी मान्न मिल्ने अवस्था नदेखिने ।

तसर्थ माथि विश्लेषण गरिएका आधार कारण र प्रमाणहरू तथा मिसिल संलग्न रहेको बरामदी एवम्

खानतलासी मुचुल्का, प्रहरी प्रतिवेदन, परीक्षण प्रतिवेदन, वस्तुस्थिति मुचुल्का, प्रतिवादीहरूको अनुसन्धान अधिकारी एवम् अदालतसमक्षको बयानसमेतका मिसिल संलग्न कागज प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी अवधेशप्रसाद पटेललाई लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४(ड) र (च) को कसुरमा सोही ऐनको दफा १४(१) (छ)(२) बमोजिम १० (दश) वर्ष कैद र रू.७५,०००।- (पचहत्तर हजार) जरिवाना हुने ठहर्‍याई सुरु पर्सा जिल्ला अदालतबाट मिति २०६९।१।१५ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाको मिति २०७१।६।२८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : रामप्रसाद बस्याल

कम्प्युटर: विकेश गुरागाई

इति संवत् २०७३ साल मङ्सिर १२ गते रोज १ शुभम्।

५

**स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा**, ०६५-CI-०७८८, जग्गा खिचोला चलन, जोगनारायण साह तेलीसमेत वि. रामनारायण साह सोनार

प्रतिवादीले जग्गा खिचोला गरेको भनी दाबी गर्नेले उक्त जग्गामा आफ्नो हक स्वामित्व स्थापित भएको प्रमाण पेस गर्न सक्नु पर्ने।

जग्गाको दर्ता, तिरोलगायतका कुनै स्रोत देखाउन नसकी १९८३ सालमा नापी भएको जग्गालाई ऐलानी जग्गा भएको र आफूले भोगचलन गरेको भनी दाबी गरेको पाइयो। अदालतबाट भएको नक्सा मुचुल्काबाट विवादित जग्गा रामनारायण साह तेलीको भोगचलनमा रहेको देखिएको छ। निजलाई प्रतिवादी नै बनाएको देखिँदैन। विवादित जग्गामा वादीको हक भोग र स्वामित्व नै स्थापित भएको देखिँदैन। खिचोलातर्फको दाबी ठहर हुनका लागि सो जग्गामा वादीको हक स्वामित्व रहेको तथ्य प्रमाणित हुनुपर्दछ। त्यसप्रकारको अवस्था प्रस्तुत विवादका सन्दर्भमा देखिन आएन। यस अवस्थाको जग्गा प्रतिवादीहरूले खिचोला गरेकोले

खिचोला मेटाई चलनसमेत चलाउने ठहर गरी भएको सुरु अदालतको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, जनकपुरबाट भएको फैसला मनासिब देखिन नआउने।

अतः उपर्युक्त विवेचना गरिएका आधार प्रमाणहरूबाट विवादित कि.नं. १२३२ को जग्गामा वादीले आफ्नो हक स्थापित भएको देखिने दर्ता, तिरो, भोगलगायतका प्रमाण पेस गरी जग्गामा स्वामित्व प्रमाणित गर्न सकेको नदेखिएको हुँदा वादी दाबीबमोजिम खिचोला गरेको ठहर गरी सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, जनकपुरबाट मिति २०६३।८।४ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई वादीले खिचोलातर्फ लिएको फिरोद दाबी पुन नसक्ने।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद खनाल

कम्प्युटर: विकेश गुरागाई

इति संवत् २०७३ साल माघ ४ गते रोज ३ शुभम्।

६

**स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा**, ०६८-CI-१०९९, तर्फ र क्षेत्रफल यकिन गरी जग्गा छुट्याई पाऊँ, यमबहादुर थापा वि. डिलबहादुर खत्री

तत्काल निर्माण भएका घर गोठको संख्या उल्लेख नगरी केवल घर गोठ निर्माण गरी बसेको भनी लिएको जिकिरका आधारमा हाल नक्सा मुचुल्कामा उल्लेख भएका अन्य संरचना तथा कच्ची घरसमेत सोही बखत बनेका हुन् भनी अनुमान गरी यसअघि भएको फैसलाप्रतिकूल हुने गरी पुनरावेदक / प्रतिवादीले जिकिर लिएका र नक्सा मुचुल्कामा उल्लेख भएका संरचना र ती संरचनाले चर्चेको जग्गा प्रतिवादीको कायम हुने ठहर गर्न मिल्ने देखिँदैन। पहिलेका कुनै कागज प्रमाणबाट न.नं. २, ३ र ६ मा बाहेक अन्य ठाउँमा कुनै प्रकारको घर गोठजस्ता भौतिक संरचना निर्माण भएका थिए भन्ने देखिँदैन। दुई चारवटा किला खुट्टा गाडेर कुनै सामान्य कच्ची घर गोठ बनाएको थियो भने पनि केवल

यति कुराको आधारमा जग्गामा हक वा स्वामित्व प्राप्त हुन नसक्ने ।

आफ्नो हक नै नपुग्ने जग्गामा अनाधिकृत तवरबाट किला खुट्टा गाडेर घर टहरा निर्माण गर्ने, त्यसपछि सोही निर्माण भएको अवस्था देखाएर जग्गा नै कब्जा गर्ने कुरा सर्वथा अनुचित हो । यसप्रकारको दाबीलाई स्वीकार गर्न सकिँदैन । गैरकानूनी कब्जालाई हक स्वामित्वको आधारका रूपमा ग्रहण गर्नु हुँदैन । त्यसैले न.नं. २, ३ र ६ मा देखिएको जग्गा र भौतिक संरचनाको हकमा यस अदालतको मिति २०६२।१२।६ को फैसलाले हक स्वामित्वको निरूपण भइसकेको देखिँदा सो हदसम्मको क्षेत्रफल ०-१-१५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> जग्गा प्रतिवादीको कायम हुने ठहर गरेकोलाई अन्यथा भन्न मिल्ने । सो न.नं. २, ३ र ६ मा देखिएको जग्गामा बाहेक अन्य न.नं. मा उल्लेख भएको जग्गामा पुनरावेदक / प्रतिवादी यमबहादुर थापाको हक पुग्ने अवस्था देखिन आएन । तसर्थ न. नं. २ मा बनेको घर, न.नं. ३ मा बनेको गोठ र न.नं. ६ मा बनेको चर्पी र ती संरचनाले चर्चेको ०-१-१५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> जग्गासम्म प्रतिवादीको हुने ठहर गरी भएको सुरु अदालतको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, बुटवलबाट भएको फैसला अन्यथा भयो भन्ने पुनरावेदकको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

अतः उपर्युक्त विवेचना गरिएका आधार प्रमाणहरूबाट विवादित कि.नं. १५ को जग्गामध्ये नक्सा मुचुल्कामा उल्लिखित नक्सा नं. २ मा बनेको घर र सो घरले चर्चेको जग्गा, न.नं. ३ मा बनेको गोठ र न.नं. ६ मा बनेको चर्पी र ती संरचनाले चर्चेको जग्गा क्षेत्रफल ०-१-१५<sup>१</sup>/<sub>२</sub> जग्गासम्म प्रतिवादीको हुने र सोबाहेकको अन्य जग्गा वादीको कायम हुने ठहर गरी सुरु नवलपरासी जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, बुटवलबाट मिति २०६७।५।३० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद खनाल

कम्प्युटर: विकेश गुरागाई

इति संवत् २०७३ साल माघ ४ गते रोज ३ शुभम् ।

७

स.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०६८-CR-०८९०, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार, योगेन्द्र ढकाल वि. नेपाल सरकार

आफूउपरको अभियोग अन्यथा हो भनी प्रमाणित गर्ने र पीडितहरूलाई बिक्री गर्ने उद्देश्यले नभई अरु नै कानूनसम्मत उद्देश्यले विदेश लगेको भन्ने कुराको वस्तुनिष्ठ र विश्वसनीय प्रमाण प्रतिवादीले प्रस्तुत गर्न सक्नु पर्ने ।

प्रतिवादीले अभिभावकको मन्जुरीबिना बालकहरूलाई भारतमा सिनेमामा काम लगाई दिने भनी ललाई फर्काई भारततर्फ लगेको भन्ने तथ्य पुष्टि भइरहेको स्थितिमा भारतमा पुगेपछि बालकहरूले प्रतिरोध गरेपछि प्रतिवादीले ती बालकहरूलाई नेपालको सीमाभित्र ल्याई वीरगञ्जको एउटा होटलमा छाडेको देखिन्छ । यदि बिक्री गर्ने उद्देश्यले लिएको थिएन भने आफ्नो साथमा गएका बालकहरूलाई आफूसँगै लिएर नआई आफू मात्र घरडेरा फर्केको देखिन्छ । मैले बिक्री गर्न लगेको भए त फर्काएर नेपाल ल्याई वीरगञ्जमा काममा लगाउने थिएन भन्ने प्रतिवादीको जिकिर निजलाई सफाइ दिने आधार बन्न नसक्ने ।

तसर्थ माथि विश्लेषण गरिएका आधार कारण र प्रमाणहरूसमेतबाट जाहेरवालाका बालक छोराहरूलाई प्रतिवादीले जाहेरवालाहरूको मन्जुरीबिना विदेश भारतको पटनासम्म पुऱ्याएको र पीडित बालकहरू त्यहाँबाट अगाडि जान नमानेको कारणबाट प्रतिवादीले उनीहरूलाई वीरगञ्जसम्म ल्याई त्यहाँको एउटा होटलमा छाडिदिएको भन्ने प्रमाणबाट स्थापित भइरहेको देखिँदा पुनरावेदक प्रतिवादी योगेन्द्र ढकालले मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा ४(२)(क) को कसुर गरेको ठहर्‍याई सोही ऐनको दफा १५(१)(ड)(१) बमोजिम निजलाई १५ वर्ष कैद र रू. १,००,०००।- (एक लाख) जरिवाना हुने ठहर्‍याएको सुरु ललितपुर जिल्ला अदालतको मिति २०६८।२।५ को फैसलालाई सदर हुने ठहर्‍याएको

पुनरावेदन अदालत, पाटनको मिति २०६८।७।८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: रामप्रसाद बस्याल

कम्प्युटर: विकेश गुरागाईं

इति संवत् २०७३ साल मङ्सिर १५ गते रोज ४ शुभम् ।

८

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र, ०६८-CR-१३४६, कर्तव्य ज्यान, बह्यदेव कुर्मी वि. नेपाल सरकार**

प्रतिवादीले अदालतमा गरेको बयानमा आफूले गोली प्रहार गरेको होइन भनी उनाउ मानिसहरू आई रक्सी खाई विवाद गरी गोली हानाहान गरेको अवस्थामा मृतकलाई गोली लाग्न गई घाइते भएका हुन् भनी इन्कारी बयान गरेको भए तापनि ती दुईजना उनाउ व्यक्तिहरू को हुन्, के कति कारण तिनले निज प्रतिवादीको घरमा आई गोली प्रहार गरेका हुन् भन्ने कुरा प्रतिवादीले खुलाउन सकेको देखिँदैन । प्रतिवादीको घरमा पूजाआजा भई आमन्त्रित घर गाउँलेहरूको बीचमा कुनै अन्य व्यक्तिबाट मृतकलाई गोली प्रहार भएको भए सोही बेहोराको प्रमाणहरू संकलित हुनुपर्नेमा त्यस्तो भएको पाइँदैन । प्रतिवादीले अख्तियारप्राप्त अधिकारीसमक्ष बयान गर्दा आफूलाई मौकामा प्रहरीले कुटपिट गरी बयान गराएका हुन् भने तापनि प्रतिवादीले सोको पुष्ट्याईको लागि ठोस प्रमाण पेश गर्न सकेको देखिँदैन । यसका अतिरिक्त जाहेरवाला मन्सी महतो कोइरी, वस्तुस्थिति मुचुल्काका मानिस हिरा महतो कोइरी एवम् हिरालाल सहनी महतो, घटनास्थल मुचुल्काका मानिस ईन्द्रासन महतोसमेतको बकपत्रबाट वारदातको पुष्टि भई यिनै प्रतिवादीको प्रहारबाट मृतकको मृत्यु भएको तथ्य पुष्टि हुन आउने ।

जाहेरवालाको किटानी जाहेरी, निजको जाहेरीलाई समर्थन गर्ने बकपत्र, अन्य वस्तुस्थिति मुचुल्काका मानिसहरूको कथन एवम् बकपत्र, शव परीक्षण प्रतिवेदनसमेतका प्रमाणबाट प्रतिवादी ब्रम्हदेव कुर्मीकै प्रहारबाट मृतकको मृत्यु भएको पुष्टि हुन आएकोले पुनरावेदक प्रतिवादी ब्रम्हदेव राउत कुर्मीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(१) नं. बमोजिम

सर्वस्वसहित जन्मकैद सजाय हुने ठहर्‍याएको पर्सा जिल्ला अदालतको मिति २०६८।२।१७ को फैसलालाई सदर ठहर गरी पुनरावेदन अदालत, हेटौंडाबाट मिति २०६८।१०।२४ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: रामप्रसाद बस्याल

कम्प्युटर: विकेश गुरागाईं

इति संवत् २०७३ साल असार ६ गते रोज २ शुभम् ।

९

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र, ०७०-CR-०५१८, जबरजस्ती करणी, तेजबहादुर श्रेष्ठ वि. नेपाल सरकार**

मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणी महलको ३ नं. अनुसार कसुर सजाय ठहर गरेपछि ऐ.ऐ. १० नं. बमोजिमले क्षतिपूर्ति भराइदिनुपर्ने बाध्यात्मक कानूनी व्यवस्था हो । अदालतले क्षतिपूर्ति भराउँदा उपर्युक्त आधारमा क्षतिपूर्ति भराउनु पर्ने व्यवस्था गरेको भए पनि अदालतले क्षतिपूर्ति भराउने वा नभराउने भनी स्वविवेक प्रयोग गर्न पाउने अवस्था उक्त १० नं. मा भएको कानूनी व्यवस्थाले देखिँदैन । उपर्युक्त व्यवस्थाको शाब्दिक अर्थ केलाउँदा पनि अदालतले क्षतिपूर्ति भराउन सक्नेछ भन्ने व्यवस्था नभई भराउनुपर्नेछ भन्ने बाध्यात्मक व्यवस्था गरिएको देखिन्छ । पीडित वर्ष ११ की नाबालिग देखिन्छन् । निजले अदालतमा बकपत्र गर्दा अपराध गरेको होइन भनी बकपत्र गरे पनि घटना क्रमको तथ्य र प्रमाणबाट अपराध भएको पुष्टि भइसकेको अवस्थामा अर्काको बहकाउ वा लहलहमै लागी बकपत्र गर्न सक्ने प्रवल सम्भावना पीडितको उमेर र अवस्थाबाट देखिन आएको छ । पीडित नाबालिगले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष गरेको कागजको विपरीत हुने गरी अदालतमा भएको बकपत्रलाई नै आधार मानी कसुर ठहर भइसकेपछि पीडित हुने बालिकाले पाउने मनासिब माफिक क्षतिपूर्तिको हकमा समेत छुट पाउने भनी अर्थ गर्दा उक्त १० नं. मा भएको कानूनी व्यवस्थाविपरीत हुन जाने ।

तसर्थ विश्लेषण गरिएका आधार, कारण र

प्रमाणहरूसमेतबाट प्रतिवादी तेजबहादुर श्रेष्ठले पीडित रेश्मा आले (परिवर्तित नाम) लाई जबरजस्ती करणी महलको ३(२) नं. अनुसारको कसुर अपराध गरेको ठहर्‍याई प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको ३(२) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरेको सुरू रामेछाप जिल्ला अदालतको फैसला सदर हुने र ऐ.ऐ. को १० नं. बमोजिम क्षतिपूर्ति भराउन नपर्ने गरी गरेको उक्त सुरू रामेछाप जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गरी ऐ.ऐ. को १० नं. बमोजिम पीडितले रु. २५,०००।- (पच्चीस हजार) प्रतिवादीबाट क्षतिपूर्तिसमेत बापत भराई पाउने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, जनकपुरको मिति २०६९।३।२० को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: रामप्रसाद बस्याल

कम्प्युटर: विकेश गुरागाईं

इति संवत् २०७३ साल वैशाख ३० गते रोज ५ शुभम्।

१०

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल, ०७१-RC-००६९, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. शम्भु ठाकुर**

लासजाँच प्रकृति मुचुल्काबाट समेत मृतकको टाउको तथा दायाँ कञ्चटमा धारिलो हतियारले प्रहार गरी काटेको गहिरो चोट रहेको, घरभित्र तथा लास नजिकसमेत रगत जमेको ताल रहेको भन्नेसमेत बेहोरा उल्लेख भएको देखिन्छ। मृतकको टाउकोमा लागेको चोटको कारणबाट मृत्यु भएको भन्ने मिसिल संलग्न पोस्टमार्टम रिपोर्टसमेतबाट देखिएको छ। मृतक र प्रतिवादीको छोरी निर्सिकुमारीसमेतको कागजबाट यिनै प्रतिवादीले मृतकलाई बञ्चरोले प्रहार गरी हत्या गरेको पुष्टि हुन्छ। वस्तुस्थिति मुचुल्काका मानिस हरिप्रसादसमेतले आफ्नो बकपत्रमा प्रतिवादी शम्भु ठाकुरले निजको श्रीमती राजवतीलाई घरमा बञ्चरोले टाउकोमा प्रहार गरी मारेका हुन् भनी उल्लेख गरी वरदातको पुष्टि गरिएको देखिने।

प्रतिवादीले मृतकलाई परपुरुष बेचन यादव भन्नेसँग अनैतिक सम्बन्ध रहेको कारण सोही रिसइवीबाट बञ्चरोले पटकपटक प्रहार गरी कर्तव्य गरी

मारेको हो भन्ने कुरालाई अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष साबित भए तापनि अदालतको बयानमा आत्मरक्षाको तर्क प्रस्तुत गरी मृतकले आफूलाई हँसियाले प्रहार गर्न लाग्दा सोही कारणबाट आफूले पनि बञ्चरो प्रहार गरेको तर्क (Plea) लिए तापनि सोको पुष्टि गर्ने ठोस प्रमाण प्रस्तुत गर्न सकेको देखिँदैन। यदि परपुरुषसँग मृतकको अवैध सम्बन्ध रहेभएको भए पनि सोको कानूनी उपचार प्रतिवादीले पाउन सक्ने नै थिए। सोतर्फ केही नगरी धारिलो एवम् जोखिमी हतियारले टाउकोजस्तो संवेदनशील अङ्गमा प्रहार गर्दा मान्छे मर्छ भन्ने कुरा प्रत्यक्ष देखिँदादेखिँदै प्रहार गरी हत्या गरेको पुष्टि हुन आएकोले मृतकले आफूलाई हँसियाले प्रहार गर्न लाग्दा सोही कारणबाट आफूले पनि बञ्चरोले प्रहार गरेको भन्ने आत्मरक्षाको तर्क (Plea) पुष्टि हुन सकेको नदेखिने।

अतः उल्लिखित पोस्टमार्टम रिपोर्ट, लासजाँच प्रकृति मुचुल्का, प्रत्यक्षदर्शी छोरी निर्सिकुमारीको कागज, वस्तुस्थितिका व्यक्तिको कथन र स्वयम् प्रतिवादीले मृतकमाथि गरेको अपराधको कथन आदिबाट निज प्रतिवादीले मृतकमाथि हिंसात्मक तरिकाबाट बञ्चरोले प्रहार गरी हत्या गरेको पुष्टि हुन आएको देखिएकोले निज प्रतिवादी शम्भु ठाकुरलाई अभियोग दाबीअनुसार मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १ नं. को कसुरमा ऐजन महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्ने गरेको सुरू धनुषा जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर हुने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत, जनकपुरबाट मिति २०७०।८।१९ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृत : रामप्रसाद बस्याल

कम्प्युटर: विकेश गुरागाईं

इति संवत् २०७३ साल असोज ७ गते रोज ३ शुभम्।

११

**स.का.मु.प्र.न्या.श्री सुशीला कार्की र मा.न्या. श्री जगदीश शर्मा पौडेल, ०७२-WH-००५०, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, तनाया गोयन्कासमेत वि. श्यामलाल सरावगीसमेत**

नाबालिग छोरी तनाया गोयन्का र छोरा

शिवांश गोयन्कालाई आमाले आफ्नो साथमा राखी पालनपोषण, शिक्षादीक्षासमेत व्यवस्था गरेको देखिँदा निवेदन मागबमोजिम विपक्षीहरूले कानूनविपरीत बन्दी बनाई राखेको भन्ने पुष्टि हुन सकेन । अतः नाबालिग छोरी तनाया गोयन्का र छोरा शिवांश गोयन्कालाई विपक्षी खुसुबु सरावगीले कानूनविपरीत बन्दी बनाई प्राकृतिक संरक्षक बाबुसँग भेटघाटसम्म गर्न नदिएको हुँदा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरी विपक्षीहरूको कब्जा जिम्माबाट छुटाई बाबु निकुञ्ज गोयन्काको जिम्मा लगाइ पाउँ भन्ने निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी हुने अवस्थाको विद्यमानता रहेको नदेखिँदा प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने ।

निवेदकहरू नाबालिग तनाया गोयन्का एवम् शिवांश गोयन्काको हकमा निजका बाबु आमा दुवैले निजप्रति माया, ममता प्रदर्शन गर्न पाउने वातावरणको निर्माण गरी नाबालिगको कलिलो मन मष्तिष्कमा घर परिवार, बाबु आमा र समाजप्रति नकारात्मक दृष्टिकोण पैदा हुन नदिनेतर्फ दुवै पक्ष सचेत हुनु जरूरी देखिन्छ । साथै निजहरूको भरणपोषण, पठनपाठन र स्वास्थ्यको उचित व्यवस्था गर्ने जिम्मेवारी स्वभावतः निज रहे बसेको ठाउँ अर्थात् आमा खुसुबु सरावगीबाट नै बहन गर्नुपर्ने हुँदा बाबु आमासँगको सान्निध्य र माया ममता पाउने निजको हकको संरक्षणका लागि देहायबमोजिमको व्यवस्था मिलाउनु अपरिहार्य देखिएको हुँदा निम्न आदेश जारी गरिएको छ :

- (१) बाबु निकुञ्ज गोयन्काले छोरी तनाया गोयन्का र छोरा शिवांश गोयन्कालाई भेट्न र फोन सम्पर्क गर्न चाहेका बखत भेटघाट र फोन सम्पर्क गर्न पाउने गरी आवश्यक व्यवस्था आमा खुसुबु सरावगीले मिलाउने ।
- (२) निज छोरी तनाया गोयन्का र छोरा शिवांश गोयन्कालाई स्कूलमा अध्ययनरत रहेको अवस्थामा बाबु निकुञ्ज गोयन्काले विद्यालयमा भेट्न चाहेमा विद्यार्थीको पठनपाठनमा प्रतिकूल असर नपर्ने गरी विद्यालयको नियमअनुसार भेट्ने सुविधा

प्रदान गर्न विपक्षीहरूले विद्यालयसँग समन्वय गरिदिने ।

- (३) माथि उल्लेख भएका बुँदाहरूलाई नाबालिग तनाया गोयन्का र शिवांश गोयन्काको सर्वोत्तम हितलाई ध्यानमा राखी रिट निवेदक स्वयम् र विपक्षीहरूले परिपालना गर्ने गराउने, परिपालना नभए नगरेको भनी कुनै पक्षले अदालतलाई जानकारी गराएमा सो विषयलाई स्वतः अदालतको अपहेलनाको विषय मानी कारबाही गरिने ।
- (४) यो आदेशको विषय बालबालिकाको अधिकारसँग जोडिएको र यसको परिपालना नभएको अवस्थामा अदालतको अपहेलना भएको मानी कारबाही गरिने अवस्था रहेको हुँदा यसको अभिलेख राख्नु भनी यस अदालतको फैसला कार्यान्वयन निर्देशनालयलाई समेत लेखी पठाउनु ।

इजलास अधिकृतः रामप्रसाद बस्याल

कम्प्युटरः विकेश गुरागाई

इति संवत् २०७३ साल वैशाख २८ गते रोज ३ शुभम् ।

इजलास नं. १

१

मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ, ०७२-WH-००७६, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, पुष्पराज पौडेल वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय, कपिलवस्तु

नेपालको कुनै कानूनको उल्लङ्घन वा अपराधजन्य कार्य नगरेसम्म कसैलाई पक्राउ गर्न, हिरासतमा राख्ने, बन्दीगृहमा राख्ने, बालसुधार गृहमा राख्ने कार्य कानून असङ्गत हुने हुन्छ । संविधान र कानून प्रदत्त व्यक्तिको स्वतन्त्रताको हक एवम् अन्तर्राष्ट्रिय दस्तावेजद्वारा प्रदत्त मानवअधिकारको उल्लङ्घन गरिने कार्य उचित ठहर हुन सक्दैन । कानूनबमोजिम बाहेक वा कानूनको उचित प्रक्रिया नपुऱ्याई कसैको वैयक्तिक



स्वतन्त्रता (Personal freedom) मा अनुचित बन्देज लगाई अपहरण गर्न मिल्ने हुँदैन। व्यक्तिको स्वतन्त्रताको संवैधानिक एवम् कानूनी हकलाई सम्मान गरी पालना गर्नुपर्नेमा त्यसो नगरी बालहितको लागि भनि कुनै अभियोग विना, सूचना वा सुनुवाइ विना बालसुधार गृहमा राख्नेसमेतको कार्य गैरकानूनी नै देखिने।

निवेदक प्रवास कोनारउपर के कुन कसुर वा अभियोगमा थुना वा कैद भुक्तान गराउनसमेत विपक्षी बाल सुधार गृह सानोठिमीमा राखेको भन्ने लिखित जवाफबाट नदेखिए तापनि परिवर्तित नाम प्रवाश कोनार मिति २०७१।१०।१५ गतेबाट विपक्षी बालसुधार गृह सानोठिमीमा बसेको देखिएको र कुनै कसुर वा बालबिज्याईबिनाका कुनै पनि आधार वा कारणले बालसुधार गृहमा राख्ने कार्य बाल न्याय प्रशासन विरुद्धको देखिने हुन्छ। त्यस्तो कार्य बालकको सर्वोत्तम हितअनुरूपको समेत मान्न नमिल्ने।

तसर्थ बाल न्याय प्रशासनको विधि र प्रक्रिया नअपनाउने, कसुर वा बिज्याई विना बालकलाई कुनै पनि आधारमा बालसुधार गृहमा राख्ने कार्य नेपालको संविधान, कानून र मानव अधिकारसँग सम्बन्धित राष्ट्रिय र अन्तर्राष्ट्रिय दस्तावेजसमेतको विपरीत भई गैरकानूनी देखिँदा निवेदन मागबमोजिम बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी भई निज निवेदक परिवर्तित नाम प्रवास कोनार थुनामुक्त हुने।

इजलास अधिकृत: हर्कबहादुर क्षेत्री

कम्प्युटर: रामशरण तिमिल्सिना

इति संवत् २०७३ साल असार १७ गते रोज ६ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री गोपाल पराजुली र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०७१-CR-०८४०, लागु औषध (अफिम), सिउराम वली वि. नेपाल सरकार**

पुनरावेदक फरार रहेको अवस्थामा निजको अंश रोक्का गर्ने कारबाही भएको देखियो। सो अंश रोक्का मुचुल्कामा पुनरावेदक प्रतिवादीको बाबु, बाजेको नाउँसमेत खुलाई देखिएको र मूल अशियाराहरूको ९ भाग लगाई ९ भागको १ भागमध्ये ६ भागको १ भाग

शिवराज वलीको अंशभाग रोक्का गर्ने मुचुल्का भई रोक्कासमेत भएकोमा सो मुचुल्कासमेतका कार्य बेरीतको वा गैरकानूनी रहेको भनी यी प्रतिवादीले कुनै जिकिर लिन सकेको देखिँदैन। सो मुचुल्कामा शिवराज वली भन्ने सिउराम वली भन्ने उल्लेख भएको र सो मुचुल्कामा उल्लिखित वतन र बाबुको नाम निज प्रतिवादीले अदालतमा गरेको बयानमा निज प्रतिवादीको वतन सुर्खेत कल्याण गा.वि.स. र बाबुको नाउँ सहवीर वली उल्लेख भई मिलेको देखिँदा निज प्रतिवादीको यकिन पहिचान नभई अंश रोक्काको कारबाही अदालतबाट भएको भनी मान्न मिल्ने नदेखिने।

अंश रोक्का मुचुल्कासमेतका आधार प्रमाणबाट शिवराज भन्ने सिउराम वली एकै व्यक्ति हुन् भन्ने देखिन आएकोले सो तथ्यलाई तर्कसङ्गत वा सबुद प्रमाणबाट खण्डन नगरेकोसम्म शिवराज वली भन्ने सिउराम वली एकै व्यक्ति हुन् भनी मान्नु पर्ने देखिन आयो। सो कुराको खण्डन गरी शिवराज र सिउराम भन्ने व्यक्ति एकै नभई फरकफरक व्यक्ति हुन् भनी प्रतिवादीले जिकिर लिएकोमा प्रतिवादी पक्षले ठोस सबुद प्रमाण पेस गरी आफ्नो दाबी जिकिर पुष्टि गर्नुपर्ने हुन्छ। सोअनुरूप यी पुनरावेदक प्रतिवादी सिउराम वलीले प्रतिवादी शिवराज र सिउराम वली फरक व्यक्ति हुन् भनी पुष्टि गराउन सकेकोसमेत नदेखिँदा पुनरावेदक / प्रतिवादी सिउराम वलीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

सामान्यतः लागु औषधको उत्पादन, सञ्चय, ओसारपसार र कारोबार कुनै एक व्यक्ति विशेषको प्रयासबाट मात्र सम्पन्न हुन कठिन कुरा हो। लागु औषध सञ्चयकर्ता, खरिदकर्ता, ओसारपसार गर्ने र बिक्री वितरणको व्यवस्था मिलाउने व्यक्तिसम्मका विभिन्न भूमिकाका व्यक्ति वा सङ्गठित समूहबाट आपराधिक कार्य सम्पन्न हुने अवस्था रहने।

लागु औषध बरामद भएको अवस्था र लागु औषध खरिद गरेको व्यक्तिको नाम किटान गरी सहअभियुक्तहरूले पोल गरेको अवस्थामा सो तथ्यलाई प्रतिवादी सिउराम वलीले वस्तुनिष्ठ प्रमाण पेस गरी

खण्डन गर्न नसकेको र सहअभियुक्तको पोललाई बरामदी मुचुल्का, अफिम रहेको भन्ने परीक्षण प्रतिवेदनसमेतका मिसिल कागजातबाट समर्थित भएको देखिँदा पुनरावेदक प्रतिवादीले अभियोग दाबीको कसुर गरेको पुष्टि भएको देखिन आउने।

अतः प्रतिवादीहरू डिल्लीबहादुर खड्का र राजा खान भन्ने इर्साद खानसमेतका व्यक्तिबाट बरामद भएको १.५ के.जि. अफिम लागु औषध यी प्रतिवादी शिवराज वली भन्ने सिउराम वलीबाट खरिद गरेको पुष्टि भइरहेकोले निजले लागु औषध नियन्त्रण ऐन, २०३३ को दफा ४ को घ, ङ, च को कसुर गरेको देखिन आएकोले ऐ. ऐनको दफा १४(१)(छ) को (३) बमोजिम १५(पन्ध्र) वर्ष कैद र रु. पाँच लाख जरिवाना हुनेसमेत गरी सुरु सुर्खेत जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।१०।६ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, सुर्खेतको मिति २०७१।५।४ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: हर्कबहादुर क्षेत्री

कम्प्युटर: अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०७३ साल कात्तिक २ गते रोज ३ शुभम्।

इजलास नं. २

१

मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी र मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र, ०७२-RB-०४५०, आयकर, गणेशप्रसाद पाण्डेय वि. एल.एम. सुमिर ब्रदर्थ प्रा.लि. डाँछी, काठमाडौं

मर्मत खर्च सम्बन्धमा करदाताले पेस गरेको वित्तीय विवरण हेर्दा सवारीसाधनमा समेत मर्मतबापत जम्मा रु.१८,६६,१९१।- बराबरको खर्च दाबी गरेको तर स्वयम् कर निर्धारण आय विवरणमा पेस गर्दा भने उक्त शीर्षकको खर्च रकम रु.२५,५६,५५५।- दाबी गरी वित्तीय विवरणमा उल्लिखित रकमभन्दा रु.६,९०,३६४।- बढी खर्च दाबी गरेको देखिन्छ। सो सम्बन्धमा आयकर ऐन, २०५८ को व्यवस्था हेर्दा दफा १६ को उपदफा २ मा मर्मत तथा सुधार खर्च

कट्टी गर्दा सो आय वर्षको अन्त्यमा रहेको सम्पत्तिको समूहको हास आधार रकमको ७ प्रतिशतभन्दा बढी हुने छैन भनी उल्लेख भएको पाइन्छ। यसरी करदाताले वित्तीय विवरणमा उल्लेख गरेकोभन्दा बढी दाबी गरेको रु.६,९०,३६४।- र वित्तीय विवरणमा उल्लेख भएको मध्ये सवारी साधनमा हास आधारको ७ प्रतिशतले भन्दा बढी दाबी गरेको रु.१,७७,४७७।५६ समेत दुवै गरी रु.८,६७,८४२।- बराबरको दाबी गरेको मर्मत खर्च कट्टी गर्न नपाउनेमा ७% भन्दा बढी कट्टी गरेको राजस्व न्यायाधिकरणको फैसला मिलेको नदेखिने।

गल्फकोर्ष र इक्विपमेन्टमा करदाताको आ.व.०६०।६१ मा रु.४७,७१,२६,९०५।- बराबरको सम्पत्ति थप भएको भन्ने कुरामा कुनै विमति देखिन्न। सो सम्बन्धमा राजस्व न्यायाधिकरण काठमाडौंको आदेशानुसार प्राप्त यस आ.व.मा थप भएको सम्पत्तिको विवरण एवम् गत वर्षको आय र यस वर्षको आयको तुलनात्मक विवरण हेर्दा आय रकम आ.व. ०५९।६० को तुलनामा आ.व. ०६०।६१ मा उल्लेख्य वृद्धि भएको भन्ने देखिन आउँदैन। के कस्तो अवस्थामा हास खर्च कट्टी गर्न पाइन्छ भन्ने सम्बन्धमा आयकर ऐन, २०५८ को दफा १९(१) को कानूनी व्यवस्था हेर्दा कुनै व्यक्तिले कुनै आय वर्षमा कुनै व्यवसाय वा लगानीबाट भएको आय गणना गर्ने प्रयोजनको लागि सो व्यवसाय वा लगानीबाट सो व्यक्तिको आय आर्जन गर्न सो वर्षमा आफ्नो स्वामित्वमा रही प्रयोग गरेको हासयोग्य सम्पत्तिको हास भएबापत अनुसूची-२ बमोजिम हास खर्च कट्टी गर्न पाउनेछ" भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ। उपर्युक्त कानूनी व्यवस्थाअनुसार सोही आर्थिक वर्षमा थप भएको सम्पत्तिको हास खर्च कट्टा गर्न नपाउनेमा कट्टा गर्ने गरेको राजस्व न्यायाधिकरणको फैसला मिलेको नदेखिने।

|                  |                   |                  |
|------------------|-------------------|------------------|
| करदाताको         | मूल्य             | अभिवृद्धि        |
| कर विवरणअनुसारको | बिक्री            | कारोबार          |
| रु.२,९७,४०,४४०।- | देखिन्छ           | भने नाफा नोक्सान |
| हिसाबमा          | रु.२,७३,३२,९१८।-  | उल्लेख भएको      |
| पाइन्छ।          | यस आधारमा फरक रकम | रु.२४,०७,५२२।-   |

भन्ने देखिन आउँछ । सो रकममध्ये रु. १३,७९,६७५।- रकम आगामी आ.व.को लागि प्राप्त भएको भन्ने देखिन्छ । आय विवरण तयार गर्ने सम्बन्धमा आयकर ऐन, २०५८ को दफा ७ को कानूनी व्यवस्था हेर्दा, “कुनै व्यक्तिको कुनै आय वर्षमा कुनै व्यवसाय सञ्चालनबाट भएको मुनाफा र लाभहरू सो व्यक्तिको सो व्यवसायको सो वर्षको आयमा गणना गर्नुपर्नेछ” भन्ने उल्लेख भएको देखिन्छ । उक्त कानूनी व्यवस्थाको आधारमा एक आर्थिक वर्षमा प्राप्त हुन आएको आम्दानी र खर्चको विवरण समावेश गर्नुपर्ने हुँदा त्यस्तो रकम अग्रिम रूपमा प्राप्त भएको भएपनि जुन आय वर्षमा रकम प्राप्त भयो सोही आर्थिक वर्षको आय मान्नुपर्ने देखिएबाट उक्त रकमलाई आ.व.०६०।६१ को आयमा गणना नगरेको राजस्व न्यायाधिकरणको फैसला मिलेको नदेखिने ।

अतः उपर्युक्त प्रकरणहरूमा विवेचित आधार र कारणहरूबाट मर्मत खर्च र हास खर्च अमान्य गरी तथा आय विवरण र मूल्य अभिवृद्धि कर विवरणमा फरक परेको बिक्रीलाई आयमा समावेश गर्ने गरी भएको कर निर्धारण आदेश तथा सो आदेशलाई समर्थन गर्ने गरी भएको आन्तरिक राजस्व विभागबाट भएको निर्णय बदर गर्ने गरी राजस्व न्यायाधिकरण काठमाडौँबाट मिति २०६८।१०।१७ मा भएको फैसला नमिलेको देखिँदा सो हदसम्म केही उल्टी भई सो सम्बन्धमा आन्तरिक राजस्व कार्यालय, क्षेत्र नं. १ को मिति २०६५।१।२९ को निर्णय यथावत् कायम हुने ।

इजलास अधिकृत: शकुन्तला कार्की

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७३ साल चैत १६ गते रोज ४ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री दीपकराज जोशी र मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे, ०७१-CR-०१९९ र ०७१-CR-०४२६, जबरजस्ती करणी, सर्वजित परियार (दमाई) वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. सर्वजित परियार (दमाई)**

पीडितले जबरजस्ती करणीको आरोप लगाई जाहेरी दिई बकपत्रसमेत गरेको अवस्था छ । पीडित र आफूबीच माया प्रेम बसेको थियो भनी प्रतिवादीले भन्न

सकेको अवस्था पनि छैन । पीडितको अनुसन्धान र अदालतमा भएको बयान, अवस्था र व्यवहारले पनि सहमति देखाउँदैन । पीडित करिब ५० वर्ष उमेर पुगेकी छोराछोरीसमेत भएकी महिला देखिन्छन् । सो उमेरमा प्रतिवादीउपर निजको विशेष आकर्षण हुनुपर्ने थियो भन्ने कुनै प्रमाण प्रतिवादीबाट पेस हुन सकेको छैन । बरु प्रहरी कर्मचारी हुँदा आफ्नो पदीय हैसियत प्रयोग गरी प्रतिवादीले पीडितलाई निजको शारीरिक अवस्था कमजोर भएको मौका छोपी जबरजस्ती करणी गर्न सक्ने हैसियतमा नै रहेको पाइन्छ । सहमति थियो भन्ने कुरा प्रतिवादीले प्रमाणित गर्न नसकेको अवस्था हुँदा प्रतिवादीको कार्य मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ र ३(५) नं. विपरीत देखिँदा उक्त ऐनबमोजिम प्रतिवादीलाई जबरजस्ती करणीमा सजाय गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला मिलेकै देखिने ।

डाक्टरको परीक्षण प्रतिवेदन हेर्दा पीडितको शरीरको देब्रे हर कमजोर भएको भन्ने आधारमा डाक्टरले निष्कर्ष निकालेको देखिन्छ । तर देब्रे हर कमजोर भएर अपाङ्गता हुने अवस्थामा नै पुगेको हो होइन भन्ने कुनै प्रमाणिक आधार पेस गरेको देखिँदैन । उक्त घटना घट्नुअघि वा राय लेख्नुपूर्व पीडितको देब्रे हर कमजोर भएको भन्नलाई रक्त परीक्षण, एक्सरे वा नसाको परीक्षण वा एम.आर. आई. वा अन्य त्यस्तै कुनै परीक्षण गरेर पीडित पूर्व अपाङ्गता भएको वा निजको देब्रे हर नचल्ने भएको हो भन्ने कुनै केही प्रमाण भेटिएको अवस्था छैन । तसर्थ स्पष्ट तथा वस्तुनिष्ठ प्रमाणको अभावमा डाक्टरले लेखिदिएकै भरमा पीडित अपाङ्ग रहिछिन् भन्न मिल्ने नदेखिने ।

पीडितले आफूलाई प्यारालाइसिस भएको हो भनी जाहेरीमा लेखाएकोमा अदालतमा आई गरेको बकपत्रको सबाल जवाफ १३ मा तपाई अशक्त भई हार गुहार गर्न सकिन भनेर बेहोरा लेखाउनु भएको छ के हो ? भनी सोधनी गर्दा पीडितले के के लेख्नु भएको हो मलाई थाहा भएन भनी जवाफ लेखाएको देखिन्छ । उपर्युक्त आधारमा मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(क) नं. बमोजिम प्रतिवादीलाई थप

कैदको कुरा स्थापित हुन नसकेको थप कैदको सजाय गरेको हदसम्म सुरु जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गरेको पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुर दाङको फैसला मनासिबै देखिन आउने ।

तसर्थ माथि उल्लिखित तथ्य, व्यवस्था एवम् विवेचनासमेतको आधारमा प्रतिवादी सर्वजित परियार (दमाई) ले पीडित परिवर्तित नाम थर जिल्ला प्रहरी कार्यालय, दाङ ढ लाई जबरजस्ती करणी गरी मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ र ३(५) नं. को कसुर अपराध गरेको देखिँदा उक्त नं. को कसुर कायम गरेको हदसम्म सुरु दाङ देउखुरी जिल्ला अदालतको मिति २०७०।१।८ को फैसला सदर हुने तर पीडित अपाङ भन्ने स्थापित नहुँदा ३(क) नं. बमोजिम समेत थप ५ वर्ष कैद गरेको हदसम्म मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई प्रतिवादी सर्वजित परियार (दमाई) लाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(५) नं. बमोजिम पाँच वर्ष कैद सजाय भई सोही महलको १० नं. बमोजिम प्रतिवादीबाट रु.२०,०००।- (अक्षरेपी बीस हजार रुपैयाँ) क्षतिपूर्ति पीडितले भराई पाउने ठहरेको पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुर दाङको मिति २०७१।२।२६ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: शकुन्तला कार्की

कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट

इति संवत् २०७४ साल जेठ १ गते रोज २ शुभम् ।

### इजलास नं. ३

१

मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा., ०७२-CR-२०८७, जबरजस्ती करणी, गिरीजाप्रसाद दाहाल वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादीले मौकामा तथा अदालतसमक्ष गरेको बयानमा समेत पीडित र आफू गुम्बा होटलको रुम नं.११९ मा सँगै बसेको तथ्यलाई स्वीकार गरी पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेकोमा भने इन्कार रहेको देखिन्छ । पीडितले आफूलाई जबरजस्ती करणी

गरेपश्चात् होटलको कोठाबाट बाहिर निस्की ट्वाइलेटमा बसेको भनी जाहेरी तथा बकपत्रमा उल्लेख गरेकोमा निजले कोठाबाट बाहिर निस्केपश्चात् वा सोभन्दा अगाडि कुनै किसिमको हो हल्ला गरेको वा प्रतिकार गरेको भन्ने र कसैले सुनेको भन्ने कहिँकतैबाट पुष्टि भएको देखिन आउँदैन । यसर्थ प्रतिवादीले मौकामा तथा अदालतसमक्ष कसुरमा इन्कार रही गरेको बयान, पीडितको स्वास्थ्य जाँच परीक्षणको प्रतिवेदन र पीडितले मौकामा होटलबाटै वारदातको बारेमा फोन सम्पर्क गरेकी देवकला कार्कीले अदालतसमक्षको बकपत्रमा पीडितले जबरजस्ती करणी गरेको भनी भनेकी थिइन् भनी उल्लेख गरेकोसमेतबाट पीडितले जाहेरीमा तथा अदालतसमक्षको बकपत्रमा आफूलाई जबरजस्ती करणी गरेको भनी लेखाएको बेहोराको पुष्टाई शंकारहित रूपले अन्य प्रमाणहरूबाट हुनुपर्नेमा सो हुन सकेको देखिन नआउने ।

प्रतिवादीले प्रहरीसमक्षको बयानमा पीडितसित एउटै कोठामा बसी निज पीडितले नै ढोकाको चुकुल लगाएपश्चात् कोठामा एउटामात्र बेड भएकाले सोही बेडमा सुती निजको जिउमा समाती हात हालेको भनी लेखाएको देखिँदा एउटै कोठाको एउटै बेडमा सुतेको अवस्थामा प्रतिवादीले जबरजस्तीसँग करणी गर्न सक्ने स्थितिको पूर्वअनुमान गरेर नै पीडितको जिउमा समाती हात हालेको भन्ने तथ्य स्थापित हुन आउनुका साथै प्रतिवादीले केही नगरेको भए जाहेरवालीले आफ्नो नारी अस्मितालाई दाउमा राखेर उजुरी गर्न आवश्यक हुन आउँदैनथ्यो होला यसर्थ प्रतिवादीले कोठामा बसेको अवस्थाको फाइदा उठाउने अभिप्रायले पीडितलाई निजको शरीरमा समाती हात हालेको तथ्य समर्थित भए पनि मेडिकल रिपोर्टसहितका वस्तुनिष्ठ प्रमाणबाट जबरजस्ती करणी गरेको बेहोरा वस्तुपरक तवरले यकिन हुन नसकेको र प्रतिवादी स्वयम्ले पीडितको जिउमा समाती हात हालेको भनी बयान गरेको देखिन आएबाट निजले जबरजस्ती करणी गरेको नभई सो कसुरको उद्योग गरेको पुष्टि हुन आएकोले पुनरावेदन अदालत, धनकुटाको फैसला केही उल्टी भई निज प्रतिवादीले मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ५ नं.

बमोजिम जबरजस्ती करणीको उद्योगको कसुर गरेको ठहर्छ । सो ठहर्नाले प्रतिवादी गिरिजाप्रसाद दाहाललाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(५) नं.ले हुने सजायको आधा २ वर्ष ६ महिना कैद सजाय हुने ठहर्छ र जबरजस्ती करणीको उद्योगको कसुर ठहरेकाले पीडितलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १० नं.बमोजिम क्षतिपूर्ति भराई रहन नपर्ने ।

इजलास अधिकृत: कृष्णप्रसाद अधिकारी

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७४ साल वैशाख ६ गते रोज ४ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०७२-सी-०४७४, अंश, केशरबहादुर रावत वि. राजश्री रावतसमेत**

कि.नं. २११ र कि.नं. २०६ को जग्गा निजी आर्जनको भएकाले बन्डा लाग्नु पर्ने होइन भन्ने पुनरावेदक प्रतिवादीको जिकिरतर्फ हेर्दा, यी पुनरावेदक वादीहरूको पति तथा पिता रहेको तथ्यमा विवाद नरही घरको मुख्य मानिस भएको देखिन आउँछ । घरको मुख्य मानिस भएका पति तथा पिताले जुनसुकै तवरबाट प्राप्त गरेको सम्पत्ति निजको श्रीमती तथा छोराछोरीहरूको लागि पैतृक सम्पत्ति हुने ।

कानूनी व्यवस्था तथा प्रतिपादित कानूनी सिद्धान्तबमोजिम पति तथा पिताको नाउँमा जुनसुकै तवरबाट प्राप्त गरेको सम्पत्ति श्रीमती र छोराछोरीलाई पैतृक सम्पत्ति हुने, पति तथा पिताले निजी ज्ञान, श्रम, प्रविधि प्रयोग गरी बढे बढाएको सम्पत्ति होस् वा निजले पनि पैतृक तवरबाट प्राप्त गरेको सम्पत्ति होस् सो स्थितिमा श्रीमती र छोरा छोरीलाई पैतृक नै हुन्छ । यस अवस्थामा प्रतिवादीले बकसपत्रबाट प्राप्त गरेको भनी दाबी लिएको कि.नं. २११ र २०६ को जग्गा श्रीमती तथा छोराहरूको हकमा पैतृक सम्पत्ति भई अंशहक लाग्ने नै देखिन आउने ।

अतः माथि विवेचित तथ्य, उल्लिखित कानूनी व्यवस्था तथा प्रतिपादित कानूनी सिद्धान्तको आधारमा मिति २०६९।७।१४ गते पेस गरेको तायदाती

फाँटवारीमा देखाएको सम्पूर्ण सम्पत्तिलाई ४ भाग लगाई सो सम्पत्तिबाट पुनरावेदक प्रतिवादीको १ भाग पर सारी बाँकी ३ भाग प्रत्यर्थी / वादीहरूले अंश पाउने ठहर्नाई भएको सुरु दाङ देउखुरी जिल्ला अदालतको मिति २०६९।१०।१८ गतेको फैसला मनासिब ठहर गरी फैसला गरेको पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुरको मिति २०७०।३।१० गतेको फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद भट्टराई

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल जेठ ३१ गते रोज ४ शुभम् ।

यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन्:

- यसै लगाउको ०७२-सी-०४७६, माना चामल, केशरबहादुर रावत वि. राजश्री रावतसमेत
- यसै लगाउको ०७२-सी-०४७५, अंश, केशरबहादुर रावत वि. राजश्री रावतसमेत

३

**मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ, ०६७-सी-१००७, दूषित नक्सा र निर्णय बदर, चन्द्रबहादुर चन्दसमेत वि. मालपोत कार्यालय, कञ्चनपुरसमेत**

वादीले यस अदालतमा पुनरावेदन गर्दा आफू अ.बं. २९(८) नं. बमोजिम फिराद गर्न नआएको भई २९(१) बमोजिम फिराद गर्न आएको भनी जिकिर लिए पनि उक्त २९(१) मा भएको कानूनी व्यवस्था व्यक्तिव्यक्तिबीच विवाद भई चल्ने मुद्दाको सन्दर्भमा आकर्षित हुने देखिन्छ । यसका अतिरिक्त २९(८) को कानूनी व्यवस्थाले अड्डाको काम कारबाही समावेश भएको विवादमा सो २९ नं. मा भएका अन्य व्यवस्थाहरूलाई बाहेक गरेको हुँदा प्रस्तुत मुद्दाको सन्दर्भमा २९(१) आकर्षित हुन सक्ने नदेखिने ।

कुनै अड्डाबाट भए गरेको कुनै कार्यबाट असर पर्ने पक्षले सो अड्डालाई प्रतिवादी बनाएमा जिल्ला अदालतमा र सो अड्डाको सम्बन्धित कर्मचारीसमेतलाई प्रतिवादी बनाएमा पुनरावेदन अदालतमा मुद्दा लाग्ने

अर्थ गरियो भने त्यस्तो व्याख्या मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको २९ नं. मा भएका कानूनी व्यवस्थाहरूको प्रयोगमा अन्योलता सिर्जना गर्दछ । कानूनको व्याख्या सम्बन्धित कानूनमा भएको अस्पष्टतालाई हटाई विधायिकी मनसाय पत्ता लगाई त्यसको प्रयोगमा एकरूपता एवम् सरलता ल्याउनको लागि गरिन्छ तर कानून आफैँमा स्पष्ट भइरहेको अवस्थामा जबरजस्ती व्याख्या गरी विधायिकी मनसायविपरीत त्यसको अर्थ निकाल्न नमिल्ने ।

पुनरावेदक वादीहरूलाई निजहरूको हकमा असर पर्ने गरी काम कुरा भए गरेका अड्डाको सम्बन्धित कर्मचारीलाई प्रतिवादी कायम गरी मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको महलको २९(८) नं. ले निर्दिष्ट गरेको सम्बन्धित पुनरावेदन अदालतमा फिराद दर्ता गर्नुपर्नेमा सम्बन्धित कार्यालयलाई प्रतिवादी बनाई जिल्ला अदालतमा दायर गरेको फिराद क्षेत्राधिकारविहिन दायर भएको देखिएकोले त्यसलाई खारेज गर्ने गरी भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न मिल्ने । सो फैसलामा मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको महल २९(१) तथा (८) को व्याख्यात्मक त्रुटि रहेको नदेखिँदा उक्त फैसला उल्टी हुनुपर्दछ भन्ने वादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ माथि विवेचित आधार कारण एवम् यस अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतको आधारमा कार्यालयउपर नालेस लाग्न सक्ने प्रावधान मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको महलको २९(८) नं. मा भएको नदेखिएकोले फिराद खारेज हुने ठहर्नाई कञ्चनपुर जिल्ला अदालतबाट भएको फैसला सदर हुने ठहर्नाएको पुनरावेदन अदालत, महेन्द्रनगरको मिति २०६७।३।२२ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: रामु शर्मा  
कम्प्युटर: रमेश आचार्य

इति संवत् २०७४ साल भदौ ६ गते रोज ३ शुभम् ।

४

मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा, ०७३-WO-०६५३, उत्प्रेषण

/ परमादेश, चन्द्रबहादुर सुनार वि. स्वास्थ्य मन्त्रालय, रामशाहपथसमेत

निवेदकलाई स्वास्थ्य सेवा विभागको मिति २०७३।७।२९ को निर्णयले बुंकोट स्वास्थ्य चौकी गोरखाबाट जिल्ला जनस्वास्थ्य कार्यालय, तनहुँअन्तर्गत गरेको सरुवाका विषयमा उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाअनुसार निवेदकले सरुवाबाट मर्का पर्न गएमा आधार र कारण खुलाई सरुवा गर्ने अधिकारीभन्दा एक तहमाथिको सरुवा गर्ने अधिकारीसमक्ष निवेदन दिनुपर्नेमा स्वास्थ्य सेवा विभागले गरेको सरुवाको निर्णय सम्बन्धमा सोही विभागमा निवेदन दिएको देखियो । यसरी निवेदकले कानूनबमोजिमको कार्यविधि पूरा गरेको देखिन नआउने ।

तसर्थ, वैकल्पिक उपायको रूपमा रहेको स्वास्थ्य सेवा नियमावली, २०५५ को नियम ३१(घ) बमोजिमको कार्यविधि पूरा नगरी असाधारण क्षेत्राधिकारअन्तर्गत यस अदालतमा रिट क्षेत्रबाट प्रवेश गरेको हुँदा निवेदकको मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न मिल्ने । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: शिवहरी पौड्याल

कम्प्युटर: वासुदेव गिरी

इति संवत् २०७४ साल वैशाख २४ गते रोज १ शुभम् ।

५

मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०७०-WO-०९४०, उत्प्रेषण / परमादेश, डिल्ली न्यौपाने वि. राष्ट्रिय वाणिज्य बैंक, के.का. काठमाडौंसमेत

वस्तु बिक्रीसम्बन्धी करारको मुख्य प्रयोजन नै वस्तु खरिद बिक्री गर्ने भएकोले वस्तु नै करारको मूल विषय हुन्छ । त्यस्तो वस्तु खरिद बिक्री गर्ने सम्झौता लिखित वा मौखिक मात्रै भए पनि यदि सामान लेनदेनको कुरा भएको छ भने त्यसले करारको मान्यता पाउने ।

मूल ऋणीको रूपमा रहेको अस्लेषा ट्रेडर्सले विपक्षी हिमालयन स्न्याक्सको हितमा पेस गरेको ३० लाखको बैंक ग्यारेन्टीको दाबी विपक्षी कम्पनीले बैंकमा

गरे तापनि सो रकम भुक्तानी दिने अन्तिम दायित्व मूल ऋणी अस्लेषा ट्रेडर्सको भएकोले बैंकले मूल ऋणी अस्लेषा ट्रेडर्सलाई रकम भुक्तानी गर्ने सम्बन्धमा ताकेता गर्ने र रकम नतिरेमा बैंक ग्यारेन्टीबाट असुलउपर गर्न सक्ने नै देखिने।

वस्तु बिक्री करारका पक्षहरूको बीचको विवादमा बैंकको कुनै भूमिका हुँदैन। यदि हितकारीको पक्षमा बैंक ग्यारेन्टी जारी भएको छ र हितकारीले म्यादभित्र दाबी गर्छ भने मात्र उसलाई बिनासर्त ग्यारेन्टीको रकम तिर्नुपर्छ। बैंक जमानतमा मूल करारका पक्षबीचमा कुनै कारोबार भएको होस् वा नहोस् त्यसमा कुनै सम्बन्ध राख्दैन। मुख्य ऋणीले ऋण तिर्नबाट पन्छिएमा वा ऋणीसँगको कारोबार गरेको भए वा नभए पनि जमानतको भुक्तानी दिने दायित्व बैंकको रहन्छ भन्ने नै देखिन्छ। नेपाल र भारतका अदालतहरूबाट व्यक्त अवधारणाहरूले यहि कुरालाई स्पष्ट गरेको छ। यसरी लामो समयदेखि विकसित न्यायिक धारणाको विपरीत जान र तर्क गर्न सकिने आधार प्रस्तुत विवादमा रहे भएको नदेखिने।

विपक्षी हिमालयन स्न्याक्स कम्पनीले निवेदक अस्लेषा ट्रेडर्ससँग खाद्य सामाग्री बेचबिखन गर्नको लागि ३० लाखको बैंक ग्यारेन्टी मागेकोमा रिट निवेदक र वाणिज्य बैंक विशालनगरबीच सन् २०११ डिसेम्बर ११ मा १ वर्षका लागि B.G. No. Pg 47/01, बैंक ग्यारेन्टी एग्रीमेन्ट भई हिमालयन स्न्याक्सको हितमा बैंक ग्यारेन्टी जारी भएको र सो सम्झौताको समयवधिभित्र विपक्षी हिमालयन स्न्याक्स कम्पनीले बैंक ग्यारेन्टी रकम विपक्षी बैंकसँग दाबी गरेको अवस्था हुँदा सो दायित्वबाट बैंक पन्छिन मिल्ने अवस्था देखिँदैन। अर्कोतिर रिट निवेदकले बुझाउन कबुल गरेअनुसारको रकम बुझाई सकेको अवस्था नदेखिएकोसमेतबाट निवेदक डिल्ली न्यौपानेले आफ्नै अनुरोधमा जारी गराएको वित्तीय जमानतबाट सृजित हुने दायित्वबाट निजले उन्मुक्ति पाउने अवस्था नदेखिने।

तसर्थ उल्लिखित तथ्य, कानूनी व्यवस्था एवम् विवेचनासमेतको आधारमा बैंक ग्यारेन्टीको म्यादभित्र

विपक्षी हिमालयन स्न्याक्स एण्ड नुडल्स प्रा.लि. बैंक ग्यारेन्टी दाबीमा आएको, निवेदक कम्पनी र हिमालयन स्न्याक्सबीच व्यापारिक कारोबार भएको देखिएकोसमेत आधारमा राष्ट्रिय वाणिज्य बैंक मुख्य शाखा कार्यालय, विशाल बजार काठमाडौंले मिति २०७१।३।१७ मा जारी गरेको बैंक ग्यारेन्टी दाबी रकम बैंकमा तुरुन्त दाखिला गर्नु भन्ने बेहोराको पत्र कानूनबमोजिमकै रहे भएको हुनाले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।  
इजलास अधिकृत: शकुन्तला कार्की  
कम्प्युटर: मन्दिरा रानाभाट  
इति संवत् २०७४ साल आसार १३ गते रोज ३ शुभम्।

६

**मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा,** ०७०-CR-०६९९, ०७०-CR-०७३८, ०७१-CR-०१४० र ०७१-CR-०२९९, भ्रष्टाचार (अनियमितता), रामभरत मण्डल वि. नेपाल सरकार, हरिप्रसाद मण्डल वि. नेपाल सरकार, रामभक्त शर्मा वि. नेपाल सरकार र मल्ल बुढा वि. नेपाल सरकार

विवाद देखाइएको कालापाल्ता सिंचाई कुलो मर्मत कार्य सम्पन्न भई मिति २०६७।६।२१ मा अन्तिम भुक्तानी भएको देखिन्छ। यसरी मिति २०६७।६।२१ अगाडि नै सम्पन्न भएको कार्यको सम्बन्धमा मिति २०६८।४।२३ मा उजुरी दर्ता भई प्रस्तुत मुद्दाको अनुसन्धान कार्य प्रारम्भ भई मिति २०६८।१२।१८ मा स्थलगत अवलोकनको क्रममा मुचुल्का तयार भएको देखिन्छ। उक्त मुचुल्कासँगै पेस भएको कालापाल्ता सिंचाई कुलोको स्थलगत अवलोकन प्रतिवेदनमा उल्लेख भएअनुसार कुलो रहेको ठाउँको भू-बनोटसमेतलाई मध्यनजर गरी हेर्दा काम सम्पन्न भएको यति लामो समयपश्चात् भएको स्थलगत अवलोकनले मर्मत गरिएको भनिएको कुलोको अवस्थाको यथार्थ चित्रण गर्न नसक्ने।

हिमाली क्षेत्रमा रहेको उक्त कुलो मर्मत भएको केही महिनाभित्र नै भत्किने वा पुरिने सम्भावना बढी रहेको अवस्थामा कार्य सम्पन्न भएको लगभग १ वर्ष ६ महिना लामो समयपश्चात् भएको स्थलगत अवलोकन

मुचुल्काको आधारमा मात्र मर्मत नै नभएको भन्ने निष्कर्षमा पुग्न न्यायोचित हुने नदेखिने ।

भ्रष्टाचारजन्य कार्यले व्यक्तिहरूको मानव अधिकारको संरक्षण, सम्मान र प्रवर्द्धन गर्ने दायित्व पूरा गर्ने राज्यको क्षमतामा क्षयीकरण गराउँछ । मानव अधिकारहरू अविभाज्य एवम् एकअर्कासँग अन्तरसम्बन्धित हुन्छन् र नागरिक, राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक एवम् साँस्कृतिक अधिकार सँगसँगै विकासको अधिकारलगायतका सबै मानव अधिकारमा भ्रष्टाचारले बहुआयामिक नकारात्मक प्रभाव पार्नेमा द्विविधा हुन सक्दैन । भ्रष्टाचारले राज्यको आर्थिक अवस्थालाई कमजोर बनाउनुका साथै राज्यका सेवाप्रदायक निकायद्वारा प्रदान गरिने सेवामा समेत गम्भीर रूपले असर पार्दछ । यसरी आर्थिक अवस्थामा सुधार नभएसम्म संविधानद्वारा प्रत्याभूत गरिएको आवास, खाद्यान्न, सम्पत्ति, स्वच्छ वातावरण, शिक्षा जस्ता मौलिक हकका साथसाथै यी अधिकारहरू उल्लङ्घन भएको अवस्थामा सजिलै उपचार खोज्न न्यायसम्बन्धी अधिकार पनि प्रभावकारी रूपमा उपभोग हुन नसक्ने ।

विकासले सम्बन्धित क्षेत्रका जनताको आर्थिक अवस्थामा सुधार ल्याई उल्लिखित हकहरूको प्रयोग निर्वाध रूपमा हुन सक्ने क्षमता अभिवृद्धि भएको हुन्छ । यसको विपरीत विकास आयोजनाको सञ्चालनमा भ्रष्टाचारजन्य क्रियाकलाप हुन गएमा विकासमा बाधा पुग्न गई परिणामतः जनताको आर्थिक स्तरमा हास आउँछ । भ्रष्टाचार र आर्थिक हिनामिनाले गर्दा सम्बन्धित क्षेत्रका बासिन्दाको मौलिक हकको प्रयोगसमेत कुण्ठित हुन जाने हुँदा कसैले भ्रष्टाचारजन्य कसुर गरेको प्रमाणित हुन आएमा कठोर रूपमा सम्बोधन हुनु समाजको लागि हितकर हुने ।

विवाद देखाइएको कुलोमा पानी उपलब्ध भइरहेको कुरा मिसिल संलग्न वादीसमेतका साक्षीहरूको बकपत्र, स्थलगत अवलोकन मुचुल्कासमेतबाट देखिएकोमा कुलो मर्मत नै नभएको हो भने त्यसमा पानी आउने अवस्थासमेत हुँदैन । प्रतिवादी मल्ल बुढाले अन्य

मानिसहरूको हस्ताक्षर कित्ते गरी उपभोक्ता समिति गठन गरेको भनी दाबी गरे पनि सो सम्बन्धमा जुम्ला जिल्ला अदालतमा चलेको कित्ते मुद्दामा मिति २०७०।२।१९ मा फैसला हुँदा कित्ते ठहर भएको नदेखिँदा कुलो मर्मत नै नगरी रकम खाई मासी भ्रष्टाचार गरेको भन्ने अभियोगको पुष्ट्याई ठोस र शंकारहित तवरबाट भएको नदेखिएकोले प्रतिवादीहरूलाई आरोपित कसुरमा अभियोग दाबीबमोजिम सजाय हुने गरी भएको फैसला कायम रहन सक्ने नदेखिने ।

तसर्थमाथिविवेचित आधार, कारणरप्रमाणबाट प्रस्तुत मुद्दामा प्रतिवादीहरूले अभियोग दाबीबमोजिम भ्रष्टाचारजन्य कार्य गरेको आरोपको पुष्ट्याई शंकारहित रूपमा भए गरेको नपाइएकोले अनुमानको भरमा सजाय गर्न न्यायोचित नहुँदा भ्रष्टाचार निवारण ऐन, २०५९ को दफा ८(१) बमोजिम प्रतिवादी हरिप्रसाद मण्डललाई कैद महिना ६(छ) र जरिवाना रु.४,७४,३४७।६८, प्रतिवादी रामभक्त शर्मालाई कैद महिना ६(छ) र जरिवाना रु.१,८९,०३१।५२, प्रतिवादी रामभरत मण्डललाई कैद महिना ६(छ) र जरिवाना रु.२,८५,३९६।९६ तथा प्रतिवादी मल्ल बुढालाई सोही दफा ८ को उपदफा (४) बमोजिम १(एक) वर्ष कैद हुने ठहर्‍याई विशेष अदालत, काठमाडौँबाट मिति २०७०।३।२३ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई प्रतिवादीहरू हरिप्रसाद मण्डल, रामभक्त शर्मा, रामभरत मण्डल र मल्ल बुढाले आरोपित कसुरबाट सफाई पाउने ।

इजलास अधिकृत: रामु शर्मा

कम्प्युटर: रमेश आचार्य

इति संवत् २०७४ साल पुस ३ गते रोज २ शुभम् ।

७

**मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा**, ०७०-WO-०८२८, उत्प्रेषण, ब्रमु महर्जन वि. हिरामान महर्जनसमेत

निवेदक ब्रमु महर्जनले घर निर्माण गर्न नक्सा पासको लागि निवेदन गरेपश्चात् सो कार्य रोक्न हिरामान महर्जनको निवेदन पर्दा ललितपुर नगरपालिकाले अदालतसरहको अधिकार प्रयोग गरी प्रमाण बुझी



वकिलको बहससमेत सुनी भन्दा र साझा चोक निकास यथावत कायम राखी बाँकी प्रक्रिया पूरा गरी मापदण्डअनुसार नक्सा पास हुने ठहर्‍याई निर्णय गरेको देखिन्छ। विपक्षी ललितपुर उपमहानगरपालिकाको उक्त निर्णयमाथि उल्लिखित स्थानीय स्वायत्त शासन ऐन, २०५५ को दफा १५५(३) को कानूनी व्यवस्था एवम् यस अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्तप्रतिकूल रहेको देखिन आएकोले सो निर्णय कायम रहन सक्ने नदेखिने।

तसर्थ माथि विवेचित आधार कारण एवम् यस अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतको आधारमा चोक निकास र भन्दा साझा कायम गर्ने गरी ललितपुर उपमहानगरपालिकाबाट मिति २०७०।१२।१३ को निर्णय कानूनविपरीत रहेको देखिँदा उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरिएको छ। अब सो सम्बन्धमा कानूनबमोजिम जे जो गर्नुपर्ने हो सो गर्नु गराउनु भनी विपक्षीहरूको नाममा परमादेशसमेत जारी हुने।

इजलास अधिकृत: रामु शर्मा

कम्प्युटर: रमेश आचार्य

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर १९ गते रोज ३ शुभम्।

८

**मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल**, ०७२-CR-२१४७, कर्तव्य ज्यान, देवकुमार राई वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादीले अनुसन्धानको क्रममा आरोपमा साबित भई गरेको बयान बेहोरा जाहेरी दरखास्त अनुसन्धानको क्रममा तयार पारिएको घटना विवरण कागज वस्तुस्थिति मुचुल्काबाट सिलसिलेवार रूपमा समर्थित भएको छ। प्रतिवादीले जाहेरवाला निजको जार भए पनि निजसँग नराप्रो सम्बन्ध रहेको निज प्रतिवादीको प्रतिकूल गई बकपत्र गर्नुपर्ने अवस्था रहेको कुरा मिसिल संलग्न कागज प्रमाणबाट देखिँदैन। प्रतिवादीले आफू निर्दोष भएको भनी अदालतसमक्ष बयान गरेको एवम् पुनरावेदन जिकिर लिएको भए पनि आफ्नो निर्दोषिताको प्रमाण पेश गर्न सकेका छैनन्। यसरी अनुसन्धानको क्रममा भएको निजको बयान मिसिल संलग्न अन्य प्रमाणबाट समर्थित भइरहेको र अनुसन्धानको क्रममा

भएको निजको बयान निजलाई कुटपिट गरी धाक धम्की देखाई वा यातना दिई गराइएको रहेछ भनी प्रतिवादी जिकिरसमेत नभएकोले त्यस्तो बयान बेहोरालाई प्रमाणमा लिनु नपर्ने कुनै कारण नदेखिने।

मृतकको शरीरमा भएको चोटपटक हेर्दा निज विरुद्ध निर्मम तरिकाले कुटपिट भएको देखिन्छ। यसरी पहिलादेखि रिसझवी नभएको भए त्यसरी निर्मम तरिकाले कुटपिट गर्नुको अर्को कुनै कारण प्रतिवादीले देखाउन सकेका छैनन्। प्रस्तुत वारदातमा अन्य कुनै मानिसको संलग्नता रहेको कुरा पनि मिसिल संलग्न कागज प्रमाणबाट देखिँदैन। यसरी मिसिल संलग्न जाहेरी दरखास्त बेहोरा विभिन्न मानिसहरूले अनुसन्धानको क्रममा गरिएको घटना विवरण कागज, वस्तुस्थिति मुचुल्का, प्रतिवादीले अनुसन्धानको क्रममा गरेको बयान एक आपसमा मेल खाई घटनालाई सिलसिलेवार रूपले वर्णन गरेको सो कार्यमा यी प्रतिवादी दोषी देखिएको अवस्थामा अदालतमा निजले गरेको इन्कारी बयान जुन कुनै सबुद प्रमाणबाट प्रमाणित हुन सकेको छैन, त्यस्तो बयानको आधारमा मात्र निज निर्दोष रहेको मान्न मिल्ने। प्रतिवादीले आफू निर्दोष रहेको भनी लिएको जिकिर प्रमाणित गर्ने दायित्व पनि निजको नै भएको तर निजले सो दायित्व पूरा गर्न सकेको नदेखिँदा यी प्रतिवादीलाई आरोपित कसुरमा सजाय गर्ने गरेको फैसला अन्यथा मान्न नमिल्ने।

प्रतिवादीले मृतकउपर पटकपटक प्रहार गरेको र तिखो वस्तुले घोची निर्मम तरिकाले कुटपिट गरी मारेको देखिएको हुँदा प्रतिवादीले यस अदालतमा पुनरावेदन गर्दासमेत अपराध भइसकेपश्चात् कुनै पश्चातापको लक्षणसमेत नदेखाएको अवस्थामा यी प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्नु नै उचित देखिने।

तसर्थ माथि विवेचित आधार कारण एवम् प्रमाणले प्रतिवादीले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३(३) नं. को कसुर गरेको देखिएकोले निज प्रतिवादी देवकुमार राईलाई ऐ.महलको १३(३)

नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्‍याएको झापा जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, इलामबाट मिति २०७२।९।२६ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: रामु शर्मा

कम्प्युटर: कृष्णमाया खतिवडा

इति संवत् २०७४ साल भदौ ४ गते रोज १ शुभम्।

९

**मा.न्या.श्री ओमप्रकाश मिश्र र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल**, ०७३-WO-०७९०, उत्प्रेषण / परमादेश, मीरा चौधरीसमेत वि. उच्च अदालत, पाटनसमेत

साधारण क्षेत्राधिकारबाट उपचार हुने निवेदकको वैकल्पिक उपचारको व्यवस्था हुँदै सो अधिकारको अभ्यास गरिरहेकै अवस्थामा समानान्तर तवरले अर्को असाधारण उपचारको मार्ग अवलम्बन गर्ने अधिकार निवेदकलाई भएको देखिनसमेत आएन। निवेदकको माग उचित र कानूनसङ्गत भए दोहोर्‍याई पाउँ भन्ने निवेदनबाट इन्साफ हुने नै हुँदा साधारण क्षेत्राधिकारबाट बोलिने विषयवस्तुमा असाधारण क्षेत्राधिकार ग्रहण गरी विवादको निरूपण गर्न असाधारण क्षेत्राधिकारको दृष्टिले कानूनसङ्गत हुने देखिन आएन। साथै प्रत्यर्थी कमला चौधरीको लिखित जवाफबाट निजले फैसलाबमोजिम प्राप्त गर्ने घर जग्गा मिति २०७३।५।८ गतेको फैसला कार्यान्वयनको सिलसिलामा निजको नाउँमा दा.खा. भई लालपुर्जा प्राप्त भइसकेको बेहोराको लिखित जवाफसमेत लगाएको सन्दर्भमा प्रस्तुत रिटको औचित्यसमेत समाप्त भएको देखिन आउने।

तसर्थ, उल्लिखित तथ्य, विवेचित आधार कारणको आधारमा फैसला कार्यान्वयन अधिकारीबाट मिति २०७३।३।२२ गते भएको आदेश सदर गरेको उच्च अदालतको मिति २०७३।८।२३ गतेको आदेश फैसला कार्यान्वयनको दृष्टिले कानूनसम्मत नै देखिएको र जुन फैसला कार्यान्वयनको निर्णय बदरको माग भएको हो सो फैसला कार्यान्वयनको सिलसिलामा मीरा चौधरीको नाउँमा दा.खा. भई लालपुर्जा प्राप्त भइसकेको बेहोराको

जानकारी लिखित जवाफबाट प्राप्त भएको अवस्थामा निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नु कुनै औचित्य नरहेकाले प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद भट्टराई

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल जेठ २५ गते रोज ५ शुभम्।

- यसै लगाउको ०७३-WO-०७९२, उत्प्रेषण / परमादेश, कमल चौधरी वि. उच्च अदालत, पाटनसमेत भएको मुद्दामा पनि यसै अनुसार फैसला भएको छ।

इजलास नं. ४

१

**मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा.**, ०७३-RC-०१२९, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. मानबहादुर राई

मानबहादुरले मेरो बायाँ कोखामा छुरी प्रहार गरेको हो भनी विश्व धिमालले जीवित छँदै उपचारार्थ कोशी अञ्चल अस्पताल विराटनगरमा रहेको अवस्थामा कागज गरेको देखिन्छ। मानबहादुर राईले आफ्नो साथमा भएको छुरीले विश्व धिमालको कोखामा प्रहार गरी भागेको हो भनी सूर्यबहादुर राईले कागज गरेको देखिन्छ। पशुरामले मीरा राईलाई विवाह गर्ने कुरा गरिरहेको अवस्थामा धिमाल केटाहरू आएका र निजहरूसँग विवाद हुँदा मानबहादुरले छुरी प्रहार गरेको भन्ने प्रतिवादीहरू पशुराम राई, मीरा राई र सिंहबहादुर राईको मौकाको बयान कागजबाट देखिन्छ। मृतक विश्व धिमालसँग घटनास्थलमा पुगेका देवराज धिमाल, रमेश धिमालसमेतले मानबहादुर राईले परिचय गरौं न भनी विश्व धिमाललाई अंगालो मारी छुरी प्रहार गरेको हो भनी कागज गरेको देखिन्छ। मृतकलाई छुरा प्रहार गर्ने मानबहादुर राई हो भनी वस्तुस्थिति मुचुल्कामा उल्लेख भएको देखिन्छ। यी तथ्य एवम् कागज प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी मानबहादुर राईले छुरा प्रहार गरेको कारण जाहेरवालाको छोरा विश्व धिमालको मृत्यु भएको भन्ने

पुष्टि हुन आएको र निज प्रतिवादीले अदालतसमक्ष आई निजउपरको आरोपको खण्डन गर्न सकेको नदेखिँदा निज प्रतिवादी मानबहादुर राईलाई अभियोग दाबीबमोजिम कसुरदार कायम गरी सजायसमेत हुने ठहर्‍याएको सुरु तथा पुनरावेदन अदालतको फैसला मनासिब नै देखिन आउने।

अतः उपर्युक्तबमोजिम विवेचित आधार प्रमाणबाट प्रतिवादी मानबहादुर राईको कर्तव्यबाट मृतक विश्व धिमालको मृत्यु भएको भन्ने पुष्टि हुन आएकोले निज प्रतिवादीलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याएको सुरु फैसला सदर गरेको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत, विराटनगरको मिति २०७३।३।१६ को फैसला मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृत: महेश खनाल

कम्प्युटर: हर्कमाया राई

इति संवत् २०७४ साल वैशाख १० गते रोज १ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा., ०७३-RC-०१२२, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. रामबहादुर राई**

प्रतिवादी रामबहादुर तामाडले श्रीमतीलाई खुकुरी प्रहार गरी मारेको हुँ भनी अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष र अदालतमा समेत कसुरमा साबित रही बयान गरेको र निजको बयान बेहोरा जाहेरी दरखास्त, वस्तुस्थिति मुचुल्का, घटना विवरण कागज तथा वादीका साक्षीहरूको बकपत्रबाट समेत समर्थित भएको हुँदा निजकै कर्तव्यबाट नै मृतक चन्द्रकलाको मृत्यु भएको देखियो। यस अवस्थामा निजलाई अभियोग मागबमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्‍याएको सुरु तथा पुनरावेदन अदालतको फैसला मिलेकै देखिने।

प्रतिवादीको सजायको हकमा सुरु तथा पुनरावेदन अदालतबाट अ.बं. १८८ नं. बमोजिम ५ वर्ष सजाय हुन राय व्यक्त भएको देखिए तापनि निज प्रतिवादीले योजनाबद्ध रूपमा नै श्रीमतीलाई पानी ल्याउन

लगाई ढोका थुनी खुकुरीले प्रहार गरी टाउकोसमेत छिनाली मगजसमेत बाहिर निस्कने गरी अत्यन्तै क्रूर र नृसंस तरिकाले श्रीमती चन्द्रकलालाई मारेको मिसिल प्रमाणबाट देखिएको छ। मृतक चन्द्रकलाले मलाई मान्यो भनी गुहार मागेको सुनी प्रतिवादीको बाबु सर्वजित तामाङ घटनास्थलमा पुग्दा निजलाई समेत खुकुरी प्रहार गरी घाइते बनाएको देखिन आएको छ। प्रतिवादीले सेतो मच्छडले टोकेकोले उपचार गराई दबाई खाइरहेको तथा औषधी नल्याइदिएको कारण श्रीमतीसँग झगडा भइरहने गरेको र उक्त दिन पनि पानी नल्याइदिएको कारण एक्कासी रिस उठी काटी मारेको हुँ भनी साबित रहेको हुँदा निजले श्रीमतीलाई मार्ने मनसायले नै खुकुरीजस्तो गम्भीर हतियार प्रहार गरेको देखिन आउने।

प्रतिवादीले आफूले गरेको कामको परिणाम थाहा नभई बेहोसमा उक्त वारदात घटाएको भन्न सकिने अवस्था देखिन आएको छैन। सामान्य निहुँमा निर्दोष श्रीमती माथि खुकुरीजस्तो जोखिमी हतियार प्रहार गरी घाँटीसमेत छिनाली निकै दर्दनाक किसिमले हत्या गरेको कार्यलाई सामान्य कसुर मान्न मिलेन। अपराधशास्त्रअनुसार गम्भीर किसिमको फौजदारी कसुरमा अपराधीलाई कैद सजाय गर्नुको उद्देश्य निजलाई पुनः अपराध गर्नबाट रोक्नु तथा समाजलाई आपराधिक भयबाट सुरक्षित राख्नु हो। प्रतिवादीबाट भएको उक्त जघन्य कसुरको प्रकृति हेर्दा निजलाई मुलुकी ऐन, अ.बं. १८८ नं. बमोजिम सजायमा कमी हुने गरी सजाय निर्धारण गर्नु न्यायोचित हुने देखिएन। तसर्थ सुरु तथा पुनरावेदन अदालतबाट प्रतिवादीको हकमा ५ वर्ष कैद सजाय हुन अ.बं. १८८ बमोजिम व्यक्त भएको रायसँग सहमत हुन सकिएन। तसर्थ प्रतिवादीलाई लागेको कैद अ.बं. १८८ नं. बमोजिम घटाउन नपर्ने।

अतः उपर्युक्तबमोजिमको आधार प्रमाणबाट प्रतिवादी रामबहादुर तामाडलाई अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने गरी भएको सुरु फैसला सदर गरेको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत, विराटनगरको मिति २०७३।१।२४ को फैसला

मिलेकै देखिँदा साधक सदर हुने ।  
इजलास अधिकृत: महेश खनाल  
कम्प्युटर: हर्कमाया राई  
इति संवत् २०७४ साल वैशाख १० गते रोज १ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल**, ०७०-CR-०२२८ र ०७०-CR-११७१,  
कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. यमान घले र यमान घले वि. नेपाल सरकार

घटनास्थल प्रकृति मुचुल्का र लास जाँच प्रकृति मुचुल्कामा उल्लिखित बेहोरा तथा मृतकको शव परीक्षण प्रतिवेदनसमेतबाट प्रतिवादी यमान घलेले तत्काल भनाभन भएको अवस्थामा उठेको रिसको झोकमा आफ्नो हातमा रहेको लाठीले भीमबहादुर घलेको कानमाथि कन्चेटमा प्रहार गरेको चोटको पीडाबाट भीमबहादुर घलेको मृत्यु भएको देखिन आयो । प्रतिवादी यमान घले र मृतक भीमबहादुर घलेबीच पूर्वरिसइवी रहे भएको देखिँदैन । मनसायपूर्वक हत्याको कसुर हुनको लागि पूर्वरिसइवी भएको मारौं भन्ने पूर्वयोजनाका साथ प्रयास गरेको वा विष खुवाएको वा जोखिमी हतियारको प्रयोग गरेकोसमेतका अवस्थाहरू हुनु वा देखिनु पर्दछ । प्रस्तुत मुद्दाको वारदातको अवस्थालाई हेर्दा जोखिमी हतियार प्रयोग भएको वा विष खुवाई मारेको भन्ने देखिँदैन । लाठीले प्रहार गरी घाइते भएपछि प्रतिवादीले आफैँले समाई राखेको र गाउँलेहरूले छोडी गएको अवस्था देखिन्छ । थप उपचार वा लास व्यवस्थापनसमेतका सन्दर्भमा कोही कसैले सहयोग नदिएकोले पहराको कापमा लगी लास छोडी केही माटो हाली फर्केको भन्ने देखिन्छ । दुई पक्षबीच भनाभन हुँदा तत्काल उठेको रिस थाम्न नसकी हातमा रहेको लाठीले भीमबहादुर घलेको कन्चेटमा प्रहार गरेको चोटपीडाबाट मृतक भीमबहादुर घलेको मृत्यु भएको पुष्टि हुन आएकोले सुरु गोरखा जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादीको कार्य मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. र १४ नं. अनुसार आवेशप्रेरित हत्याको कसुरभिन्न पर्ने देखिँदा

सोही महलको १४ नं. बमोजिम प्रतिवादी यमान घलेलाई १० (दश) वर्ष कैद सजाय हुने ठहर्‍याई मिति २०६९।०३।२८ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पोखराबाट मिति २०६९।१२।२० मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा अन्यथा गरी रहन नपर्ने ।

प्रत्यक्षदर्शी मृतककी श्रीमती चुन्द्री घलेले बकपत्र गर्दा बच्चाले दिशा गरी फोहोर भएको विषयमा विवाद निकाली प्रतिवादीले रिसको आवेशमा आई मोटो गोलो दाउराले दाहिनेपट्टि कान नजिक पर्ने गरी प्रहार गरेको भन्ने तथ्यसमेतले आवेशप्रेरित हत्याको कसुरलाई थप प्रमाणिकता प्रदान गरेको छ । रिसको आवेशमा आई टाउकोमा प्रहार गरेकोलाई भवितव्य परी मानिस मर्न गएको भनी भन्न नमिल्ने ।

अतः माथि विवेचित आधार, कारण, र प्रमाणहरूसमेतबाट प्रतिवादी यमान घले र मृतक भीमबहादुर घलेबीच भनाभन भई तत्काल उठेको रिस थाम्न नसकी पुनरावेदन / प्रतिवादी यमान घलेले लाठीले प्रहार गरेको चोट पीडाबाट मृतक भीमबहादुर घलेको मृत्यु हुन गएको पुष्टि हुन आएकोले त्यसरी प्रहार गरेको कार्य ज्यानसम्बन्धी महलको १.नं. र १४ नं. अनुसार आवेशप्रेरित हत्याको कसुरभिन्न पर्ने देखिँदा सोही नं. अनुसार १० वर्ष कैदको सजाय हुने ठहर्‍याई सुरु गोरखा जिल्ला अदालतबाट मिति २०६९।०३।२८ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पोखराबाट मिति २०६९।१२।२० मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । अभियोग दाबीबमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर तथा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको ५ नं. अनुसार भवितव्य ज्यानको कसुर ठहर्‍याई सोही महलको ६(४) बमोजिम सजाय गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदक / प्रतिवादी यमान घलेको पुनरावेदन जिकिर पुग्नु नसक्ने ।  
इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल  
कम्प्युटर: सिजन रेग्मी  
इति संवत् २०७३ साल असोज ३० गते रोज १ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल**, ०७०-CR-०७२०, अपहरण तथा शरीर बन्धक, नेपाल सरकार वि. कर्णबहादुर लामासमेत

मुलुकी ऐन, अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको १२ नं. मा, “यस महलको १,२ वा ३ नं. बमोजिम कसुर गरे गराएको कुरा प्रमाणित हुन आएमा ..... अपहरण गर्ने वा शरीर बन्धक लिने व्यक्तिले छुटकारा रकम (फिरौती) वा अन्य कुनै लाभ लिइसकेको रहेछ भने सोसमेत सम्बन्धित व्यक्तिलाई फिर्ता गराई त्यस्तो व्यक्तिलाई यस महलबमोजिम हुने सजायको अतिरिक्त बिगोबमोजिम जरिवानासमेत गर्नुपर्छ” भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको पाइन्छ । उपर्युक्त कानूनी व्यवस्थाअनुसार, अतिरिक्त बिगोबमोजिम जरिवानासमेत गर्नको लागि अपहरण गर्ने र शरीरबन्धक लिने व्यक्तिले छुटकारा रकम वा अन्य कुनै लाभ लिइसकेको हुनुपर्छ, सो फिरौती रकम लिइसकेको रहेछ भने सो रकम सम्बन्धित व्यक्तिलाई फिर्ता गराई त्यस्तो व्यक्तिलाई यस महलअन्तर्गत हुने सजायको अतिरिक्त बिगोबमोजिम जरिवानासमेत गर्नुपर्ने ।

अतः माथि उल्लिखित आधार र कारणहरूसमेतबाट प्रतिवादीहरू माहिला लामा र आशिष लामाको मिलोमतो र सल्लाहमा जाहेरवालालाई बन्धक बनाई राखी निजको परिवारहरूसँग सम्पर्क गरी फिरौती रकमसमेत लिएको प्रमाणित भएको देखिएको र प्रतिवादीहरूको उक्त कसुर मुलुकी ऐन, अपहरण गर्ने तथा शरीरबन्धक लिनेको महलको १ र २ नं. विपरीतको कसुर हुँदा सोही महलको ३ नं. बमोजिम कसुरको मात्राअनुसार प्रतिवादीमध्येका माहिला लामालाई ८ वर्ष कैद र रु. ५०,०००/- जरिवाना र प्रतिवादी आशिष लामालाई ७ वर्ष कैद र रु. ५०,०००/- जरिवाना हुने ।

प्रतिवादीरूलाई अपहरण तथा शरीर बन्धक लिनेको महलको ७ नं. ले थप २ वर्ष कैदसमेत हुने र सोही महलको १२ नं.ले निजहरूबाट पीडित शिवबहादुर खड्कालाई रु. १०,०००/- क्षतिपूर्ति भराइदिने र प्रतिवादीहरू सुनिल तामाङ, कर्णबहादुर लामा र श्याम

लामाले अभियोग दाबीबाट सफाई पाउने ठहर्‍याई सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८।०८।२७ मा भएको फैसला प्रत्यर्थी / प्रतिवादीहरू सुनिल तामाङ, कर्णबहादुर लामा र श्याम लामालाई अभियोग दाबीबाट सफाई दिने गरी भएको फैसला सो हदसम्म मिलेको नदेखिँदा केही उल्टी भई निज प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, अपहरण तथा शरीरबन्धक लिनेको महलको १ र २ नं.को कसुरमा ऐ. ३ नं. बमोजिम जनही ७(सात) वर्ष कैद र रु. ५०,०००/- (पचास हजार) जरिवाना हुने ठहरी निज प्रतिवादीहरूलाई सोही महलको ७ नं. बमोजिम जनही थप २(दुई) वर्ष कैदसमेत हुने र अरूमा सुरु सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०७०।१।३१ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल भदौ २४ गते रोज ६ शुभम् ।

५

**मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल**, ०७१-CR-०८४८, कर्तव्य ज्यान, मोहनबहादुर वि.क. वि. नेपाल सरकार

मृतकको लास जाँच प्रकृति मुचुल्का, शव परीक्षण प्रतिवेदन, मौकामा बुझिएका मानिसहरूको घटना विवरण कागज, प्रतिवादीको मौकामा अनुसन्धान अधिकारी तथा सुरु अदालतसमक्ष भएको साबिती बयानसमेतको आधारमा प्रतिवादी मोहनबहादुर वि.क.ले मृतक फूलमाया वि.क.लाई आग्लोजस्तो दाउराले टाउकोमा ४ पटक प्रहार गरी मृतकको घटनास्थलमा नै मृत्यु हुन गएको तथ्य पुष्टि हुन आएको देखिँदा पुनरावेदक / प्रतिवादी मोहनबहादुर वि.क.लाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद गर्नुपर्नेमा ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. बमोजिम १०(दश) वर्ष कैद गर्ने गरेको चितवन जिल्ला अदालतको मिति २०७०।५।३१ को फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी गरी प्रतिवादी मोहनबहादुर वि.क.लाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम

सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, हेटौंडाबाट मिति २०७१।०४।२० मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने ।

उल्लिखित सजाय पुनरावेदक / प्रतिवादीलाई गर्दा चर्को पर्न जाने हो कि भन्ने सन्दर्भमा विचार गर्दा, मृतक यी प्रतिवादीको आफ्नै श्रीमती रहेको देखिन्छ । आफ्नै श्रीमतीलाई यी प्रतिवादीले मारुपर्नेसम्मको पूर्वसिद्धि केही देखिँदैन । मृतक र प्रतिवादी श्रीमान् श्रीमतीबीच कहिलेकाहीँ झगडा हुनु स्वाभाविकै मानिन्छ । आफ्नो श्रीमतीले परपुरुषसँग शारीरिक सम्पर्क गरिरहेको देखी सोही कारणबाट आग्लोले कुटपिट गर्दा मृतकको मृत्यु हुन गएको देखिएको छ । प्रतिवादीले आफूले गरेको कसुर स्वीकार गरी अनुसन्धानका क्रममा र अदालतमा समेत बयान गरी न्याय सम्पादनमा सहयोग पुऱ्याएको देखिएकोले वारदात हुँदाको परिस्थिति र परिवेशलाई समेत विचार गर्दा, पुनरावेदक / प्रतिवादी मोहनबहादुर वि.क.लाई अभियोग दाबीबमोजिम ठहर भएको सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्दा चर्को पर्न जाने देखिएकोले यी पुनरावेदक / प्रतिवादी मोहनबहादुर वि.क.लाई मुलुकी ऐन, अ.ब. १८८ नं. बमोजिम १४(चौध) वर्ष मात्र कैद सजाय हुने ।  
इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल  
कम्प्युटर: सिजन रेग्मी  
इति संवत् २०७३ साल असोज ३० गते रोज १ शुभम् ।

६

**मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल**, ०७२-CR-०८९२, बन्दीप्रत्यक्षीकरण, कम्पलाल चौधरी वि. सुनसरी जिल्ला अदालत, इनरूवासमेत

बढी साहुको जाहेरीले वादी नेपाल सरकार प्रतिवादी कम्पा चौधरीसमेत भएको २०६१ सालको स.फौ.नं.२९९ कर्तव्य ज्यान मुद्दाको अभियोग पत्रमा सुनसरी जिल्ला, डुम्राहा गा.वि.स. वडा नं. ४ बस्ने भुटाई चौधरीको छोरा कम्पा चौधरीसमेतलाई प्रतिवादी बनाई अभियोग दायर भएको देखिन्छ । उक्त मुद्दामा प्रतिवादीमध्येका कम्पा चौधरी फरार रहेका भन्ने

अभियोग पत्रमा उल्लेख भएको पाइन्छ । निज प्रतिवादी कम्पा चौधरीको बाबुको नाम भुटाई चौधरी हो भन्ने पनि मिसिल संलग्न कागजातहरूबाट देखिन आएको छ । अभियोग पत्रमा उल्लिखित वतनमा अदालतबाट समाह्वान जारी हुँदा कम्पा चौधरी फेला नपरी घरका अन्य सदस्यलाई बुझाउन खोज्दा बुझ्न नमानेको हुँदा अ.ब.११० नं.बमोजिम निजको घर दैलोमा टाँस गरेको भनी तामेल भएको म्यादमा कालिम चौधरी, दिपनारायण साह र मो. अलाउद्दिनसमेत रोहबरमा बसेको देखिन्छ । उक्त तामेली बेहोराबाट डुम्राहा-४ बस्ने भुटाईको छोरा नै कर्तव्य ज्यान मुद्दाको प्रतिवादी भएको भन्ने स्पष्ट देखिन आउने ।

मिति २०६०।१२।२६ को खानतलासी तथा बरामदी मुचुल्कामा समेत निज कम्पा चौधरीका दुवै श्रीमतीहरू रोहबरमा बसी सहिछाप गरेको देखिन्छ । निजहरूलाई प्रतिवादी कम्पा चौधरीले आफ्नो श्रीमती होइनन् भनी भन्न सकेको देखिँदैन । सुरु अदालतबाट मिति २०६१।८।१२ मा भएको अंश रोकका मुचुल्कामा फरार प्रतिवादी कम्पा चौधरीको त्यो बेलाको उमेर ४५।४६ वर्ष भनी लेखाइदिएबाट हाल निवेदकले बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिट निवेदनमा उल्लेख गरेको निजको उमेर समर्थित भएको देखिने ।

निवेदकले दाबी गरेअनुरूप डुम्राहा-४ मा कम्पा चौधरी भन्ने अन्य व्यक्तिको अस्तित्व निजले देखाउन सकेको पाइएन । बाबुको नाम, वतन, उमेर तथा अन्य कुराहरू नै मिलेको अवस्थामा कम्पा चौधरी र कम्पलाल चौधरी दुई फरक-फरक व्यक्ति भएको भए अनुसन्धानको क्रममा तथा अदालतमा उपस्थित भई सोही बेहोराको जानकारी दिनुपर्नेमा सो नगरी फरार रहेको र हाल पक्राउ परेपछि मात्र ठोस आधार प्रमाण विना आफू कम्पा चौधरी होइन भनी लिएको निवेदन जिकिर सत्य तथ्यमा आधारित रहेको नदेखिने ।

अतः उल्लिखित आधार प्रमाणबाट निवेदक कम्पलाल चौधरी र कम्पा चौधरी एकै व्यक्ति हो भन्ने पुष्टि हुन आएको र निवेदकलाई गैरकानूनी रूपमा थुनामा राखेको देखिन नआएकोले बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश

जारी नहुने ठहर्‍याएको तत्कालीन पुनरावेदन अदालत, विराटनगरको मिति २०७२।३।१३ को आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: महेश खनाल

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७४ साल वैशाख १४ गते रोज ५ शुभम्।

७

**मा.न्या.श्री देवेन्द्र गोपाल श्रेष्ठ र मा.न्या.डा. श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०६८-CI-१०३५, अंश, मलदा मुसलमान वि. महमद रजा मुसलमानसमेत**

मिसिल संलग्न फिराद एवं प्रतिउत्तर पत्रसाथ पेस भएका प्रमाण कागजातहरूबाट वादीको आमा खातिजा अन्य प्रतिवादीहरूसँग आफ्नो अंश हक छुट्याई अलग भई बसेको देखिन आउँदैन। यी वादी मलदाले आफ्नो आमा साबिकमै यी प्रतिवादीहरूसँग आफ्नो अंश हक लिई अलग भिन्न भई बसी आएको भनी आफ्नो फिराद पत्रमा दाबी लिन सकेको पनि देखिएन। वादी मलदाले मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको महलको र अपुतालीको महलअन्तर्गत मृत्यु भइसकेकी आमाको अंश अपुताली परेको भनी दाबी गरेको पाइन्छ। वादी मलदा मुसलमानले आफ्नो विवाह भइसकेको भनी फिराद पत्रमा उल्लेख गरी आफूले विवाह गरेको तथ्य स्वीकार गरेको देखिएबाट यी वादीले प्रतिवादीहरूसँग अंश पाउने अंशियार नभएको तथ्यमा कुनै विवाद नहुँदा विवाहिता छोरीले आफ्नो आमाको अंश हक अन्य अंशियारहरूसँग कानूनबमोजिम अंशबन्डा नहुँदै आमाको मृत्यु भइसकेको अवस्थामा आमाको अंश हकको सम्पत्तिमा भाग शान्ति भोग गरेको छु भनी अंशसरह दाबी गर्न अंशबन्डाको महलको कानूनी व्यवस्थाबाट देखिन नआउने।

अतः उपर्युक्त विवेचित, आधार र प्रमाणहरूबाट यी वादीका आमाले नै प्रतिवादीहरूसँग आफ्नो अंश हक प्राप्त गरी आफ्नो आफ्नो अंश हक नै कायम नगराउँदै निजको २०३३ सालमा मृत्यु भइसकेको अवस्थामा निजको अंश हक निजको मृत्युसँगै समाप्त भइसकेको मान्नु पर्ने हुँदा आमाको नै अंश हक कायम नहुँदै विवाह

भइसकेकी छोरी यी पुनरावेदक / वादीले बाबु आमाको अंश नै कायम भई नसक्दै विवाह भई आफ्नो घर गइसकेको देखिँदा आमाको अपुतालीमा दाबी गर्न पाउने अवस्था नभएको देखिएकोले विवाह भई गइसकेकी छोरी यी वादीको आमाको अंश अपुतालीमा हक कायम गराई पाउँ भन्ने वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्‍याई सुरु कपिलवस्तु जिल्ला अदालतबाट मिति २०६६।८।१ मा भएको फैसला सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, बुटवलबाट मिति २०६७।३।२ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल कात्तिक ३ गते रोज ४ शुभम्।

यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन्:

- ०६८-CR-०९६९, जालसाजी, मलदा मुसलमान वि. महमद रजा मुसलमानसमेत
- ०६८-CI-१०३६, फैसला बदर, मलदा मुसलमान वि. महमद रजा मुसलमानसमेत

इजलास नं. ५

१

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या. श्री सारदाप्रसाद घिमिरे, ०७१-CR-०५३८, मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार, नेपाल सरकार वि. शर्मिला वि.क.**

पीडित र प्रतिवादीबीच भारतको कोठीमा भेट भएको र एकै गाउँकी भएकोले निजलाई पनि आफूजस्तै वेश्यावृत्तिको काममा लगाएको देखिन्छ। तर निजले पीडित परिवर्तन नुवाकोट “ए” लाई नेपालदेखि भारतसम्म मगाएको, कोठीमा वेश्यावृत्तिको काम गर्ने गरी बिक्री वितरण गरेको कुरा मिसिल संलग्न कागज प्रमाणहरूबाट देखिन नआएको निजले यी पीडितलाई बिक्री वितरण गरेको र नेपालबाट भारत कोठीसम्म वेश्यावृत्तिको लागि मगाएको नभई आफूसँग भेट भएपछि

आफ्नो जस्तै वेश्यावृत्तिको काममा लगाएको पाइने ।

प्रतिवादी शर्मीला वि.क.ले परिवर्तन नाम नुवाकोट “ए” लाई माथि वर्णित कार्यमा लगाएको कुरा माथि विवेचित मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट पुष्टि हुन आयो । निजले पीडित “ए” (परिवर्तन नाम) लाई किन्ने वा बेच्ने गरेको कुरा पुष्टि हुन नसकेकोले निजलाई बिक्री वितरणमा सजाय गरिपाउँ भन्न पुनरावेदक वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

अतः विवेचित आधार प्रमाण कारणहरूबाट प्रतिवादी शर्मीला वि.क.लाई मानव बेचबिखन तथा ओसारपसार (नियन्त्रण) ऐन, २०६४ को दफा १५(१) (ख) बमोजिम १० वर्ष कैद र रु.५०,०००।- जरिवाना हुने र ऐ. ऐनको दफा १७ बमोजिम पीडितलाई प्रतिवादी शर्मीला वि.क. बाट रु.२५,०००।- क्षतिपूर्ति भराई दिने ठहर्‍याई भएको सुरु नुवाकोट जिल्ला अदालतको मिति २०६९।२।२५ को फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालत, पाटनको मिति २०७१।१।१९ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: मुकुन्द आचार्य

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७३ साल चैत २७ गते रोज १ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०७३-CI-००३८, मोही लगत कट्टा, राधेश्याम जोशी वि. भुकरेत सरदार वातर**

हिरालाल सरदार तथा निजको हकदार कोही पनि नभएको भनी म्याद तामेलीको बेहोरामा उल्लेख भएको पाइयो । म्याद तामेलीको बेहोरामा सो कुरा उल्लेख भएको भए तापनि मिसिल संलग्न प्रतिवादीको नागरिकता प्रमाण पत्रको प्रतिलिपि र मतदाता परिचयपत्रको प्रतिलिपिबाट निज हिरालाल सरदार प्रतिवादी भुकरेत सरदार वातरको पिता भएको र निजको ठेगाना मोरङ जिल्ला थलाहा गा.वि.स. वडा नं. ७ नै भएको देखिन्छ । यसरी प्रतिवादीले पेस गरेको नागरिकता र मतदाता परिचयपत्रको प्रतिलिपिबाट निज

मोही हिरालाल सरदारको छोरा भएको स्पष्ट हुँदा हुँदै हिरालाल सरदारको अपुताली परी बुझ्ने हकदार कोही नभएको भन्ने बेहोरा जनाई तामेल भएको म्याद मुलुकी ऐन, अ.बं.११० नं. बमोजिम रीतपूर्वक तामेल भएको मान्न मिल्ने नदेखिने ।

कुनै निर्णयबाट कसैको हक अधिकारमा आघात पर्दछ भने निर्णय गर्नुभन्दा अगाडि सुनुवाइको मौका दिइनुपर्छ । सुनुवाइको मौका नदिइकन गरेको निर्णयले न्यायिक प्रक्रियामा वैधानिकता प्राप्त गर्न नसक्ने ।

विवादित जग्गाको मोही हिरालाल सरदार भएको र प्रतिवादी भुकरेत सरदार हिरालालको छोरा भएको स्पष्ट हुँदाहुँदै हिरालालको हकदार कोही नभएको भन्ने गलत बेहोरा उल्लेख गरी बेरीतपूर्वक म्याद तामेल गरी भूमिसुधार कार्यालय, मोरङले गरेको मोही लगत कट्टा गर्ने निर्णयमा प्रतिवादीलाई सुनुवाइको मौका दिएको नदेखिने ।

तामेल भएको भनिएको म्यादमा गलत बेहोरा उल्लेख गरी मुलुकी ऐन, अ.बं.११० नं. विपरीत तामेल भएको बेरीतको तामेली म्यादको आधारमा मोहीको हकवालालाई प्रतिवाद गर्नबाट समेत वञ्चित गरी भागी बेपत्ता भन्ने अर्थ गरी सुरु भूमिसुधार कार्यालय, मोरङले गरेको निर्णय त्रुटिपूर्ण देखिन्छ । अतः मोही लगतमा उल्लिखित मोहीको हकदारलाई प्रतिवादको मौका दिई सबुद प्रमाणको मूल्याङ्कन गरी कानूनबमोजिम निर्णय गर्नु भनी उपस्थित पक्षहरूलाई सुरु भूमिसुधार कार्यालयमा हाजिर हुन जानु भनी तारेख तोकी सम्बन्धित मिसिलसमेत सोही कार्यालयमा पठाइदिनु भनी पुनरावेदन अदालत, विराटनगरले गरेको मिति २०७२।१।१३ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: सन्देश श्रेष्ठ

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७४ साल भदौ ९ गते रोज ६ शुभम् ।

- यसै लगाउको ०७३-CI-००३९, मोही लगत कट्टा, राधेश्याम जोशी वि. बाबुनन्द सरदार



३

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०७१-CI-०२५९, मोही दर्ता नामसारी, तेजनारायण चौधरी वि. सागरमल दुगड**

वादीको बुबाले जग्गाको लगत भरी जग्गा रहेको गा.वि.स. को वडामा बुझाउनु पर्नेमा सो नगरी आफ्नो बसोबास रहेको तेरहौता गा.वि.स. वडा नं. ७ मा बुझाएको कारणले उक्त प्राविधिक त्रुटिसम्म हुन गएको देखिन्छ । तर वादीको बाबुले १ नं. लगत कायम भई २ नं. अनुसुची प्रकाशित भई ४ नं. बमोजिम जोताहाको अस्थायी निस्सासमेत पेस गरेको तथा अस्थायी निस्सामा उल्लिखित बेहोरालाई प्रतिवादीले अन्यथा प्रमाणित गर्न नसकेको अवस्थामा वादीको बाबुले जग्गाको लगत विवरण भरी बुझाउँदा जग्गा रहेको स्थानभन्दा फरक स्थानमा बुझाएकै मात्र कारणले वर्षौंदेखि जोती कमाई आएको जग्गाबाट मोही हक स्वतः मेटिने भन्न न्यायका दृष्टिले मिल्ने देखिँदैन । समाजमा विद्यमान अशिक्षा र चेतनाको कमीको कारणले हुन गएको यस प्रकारको प्राविधिक त्रुटिलाई मात्र निर्णयाधार बनाउनु समन्यायको दृष्टिकोणबाट समेत उचित मान्न नमिल्ने ।

अस्थायी निस्सामा उल्लिखित पृथ्वीराज दुगड यी प्रतिवादी सागरलाल दुगडको हजुरबा नाताको व्यक्ति भएकोमा कुनै विवाद छैन । प्रतिवादीले पृथ्वीराज दुगड आफ्नो हजुरबा नाताको व्यक्ति भएको तथ्यलाई कर्हिकतै खण्डित गर्न सकेको अवस्था छैन । हजुरबुबाको नाममा जग्गा रहेकोमा पछि स्वामित्व हस्तान्तरण हुँदा नातिसम्म आइपुगेकोमा जग्गाधनीको नाम फरक परेको भनी मोही हकबाट मोहीलाई वञ्चित गराउन नमिल्ने ।

अतः विवेचित कारण र आधारमा सुरु भूमिसुधार कार्यालय, सप्तरीको फैसला उल्टी गरी वादी दाबी नपुग्ने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, राजविराजको फैसला नमिलेको हुँदा पुनरावेदन अदालत, राजविराजको मिति २०७०।१०।२ को फैसला उल्टि भई वादी दाबीबमोजिम वादी तेजबहादुर चौधरीको नाममा भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २५(१) र २६(१) बमोजिम मोही दर्ता गरी मोही नामसारी हुने ठहर्‍याएको

भूमिसुधार कार्यालय, सप्तरीको मिति २०६८।१२।८ को निर्णय सदर कायम हुने ।

इजलास अधिकृतः सन्देश श्रेष्ठ

कम्प्युटरः वासुदेव गिरी

इति संवत् २०७४ साल भदौ ९ गते रोज ६ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७३-WO-०२३६, उत्प्रेषण / परमादेश, विश्वनाथ कोइराला वि. मालपोत कार्यालय, कलंकीसमेत**

मालपोत कार्यालयमा दर्ता भइरहेको र सो निवेदनमा अन्तिम निक्क्यौल नभई कारबाहीयुक्त अवस्थामा रहेकोमा जग्गा (नाप जाँच) ऐन, २०१९ को दफा १४, दफा १५ र जग्गा (नाप जाँच) नियमावली, २०५८ को नियम २२(१)(३) क, ख, ग, घ, ङ, च, छ र ज लाई निष्प्रयोजन तुल्याउने र मालपोत कार्यालय, कलंकीमा रिट निवेदकले कि.नं.१०६४ को जग्गा क्षेत्रफल ०-४-०-० को स्रेस्ता र नापी अध्यावधिक गरिपाउँ भनी दिएको निवेदनलाई प्रभावहीन बनाउने गरी कुनै आदेश गर्न कानूनतः मिल्ने अवस्था नदेखिने ।

संविधान कानून भनेको समाज, नागरिक र व्यक्ति सुरक्षित हुन् भनी व्यक्तिको हितार्थ बनेको हो । मानिस कानूनका लागि जन्मिने नभई संविधान, कानून मानिसको हितार्थको लागि बनेका हुन् । यसरी एकातर्फ चलिरहेको कारबाहीलाई निष्प्रभाव तुल्याई अर्कोतर्फ फैसला गर्दै जाँदा न्यायको जनआस्थामा विचलित हुन जाने ।

कार्यालयमा कुनै विषयमा निवेदन परेपछि सो निवेदनको सम्बन्धमा कुनै ठोस निर्णय गरी टुङ्ग्याउनु पर्ने हुन्छ । कालान्तरसम्म कारबाही नगरी त्यसै राखी राख्न मिल्दैन । कार्यालयमा परेको निवेदन कारबाही गरी टुङ्ग्याउनु त्यस कार्यालयका कार्यालय प्रमुखको नैतिक एवम कानूनी दायित्व हुन आउँछ । प्रत्यर्थी मालपोत कार्यालय, कलंकीले हाल साबिक निवेदनमा कारबाही नगरेकोले अन्यायको वातावरण सिर्जना भएकोले सो निवेदनउपर कारबाही गर्नु भनी विपक्षीहरूको नाममा

परमादेशको आदेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: जयराम श्रेष्ठ

कम्प्युटर: देवीमाया खतिवडा

इति संवत् २०७४ साल जेठ १६ गते रोज ३ शुभम् ।

५

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.**

**श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७४-WH-००१०,**

बन्दीप्रत्यक्षीकरण, सरीता गुरुङ वि. महानगरीय परिसर, भक्तपुर

कुनै मुद्दाको सिलसिलामा कानूनको परिधिभित्र रही थुनामा राख्दा कानूनले तोकिएको प्रक्रिया तथा कार्यविधि अपनाउनु नै पर्छ । कुनै मुद्दामा कानूनी प्रक्रिया अपनाई थुनामा राख्दा पनि निजसंग मानवोचित व्यवहार गरी निजलाई शारीरिक तथा मानसिक यातना दिनु वा दुर्व्यवहार गर्नु हुँदैन । यदि उपर्युक्तानुसारको सीमा नाघी कसैलाई थुनामा राखेमा वा बन्दी बनाएमा अदालतले व्यक्तिको संवैधानिक तथा कानूनी हक रक्षार्थ बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरी बन्दीलाई गैरकानूनी थुनामुक्त गर्न सक्ने ।

बन्दीप्रत्यक्षीकरणको रिटमा अदालतले थुनाको वैधता विभिन्न कोणबाट हेरी यदि थुना अवैध देखिए बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गरी बन्दीलाई थुनामुक्त गर्ने ।

ठगी मुद्दा सरकारी मुद्दासम्बन्धी ऐन, २०४९ को अनुसूची (१) मा उल्लिखित सरकारवादी भई चल्ने मुद्दा भएकोले सोमा जाहेरी लिनु र सोअनुसार अनुसन्धानको प्रक्रिया अगाडि बढाउनु प्रहरी कार्यालयको कानूनी कर्तव्य भएको हुँदा प्रहरी परिसरले खड्गकुमारी मगरलाई ठगी मुद्दामा अनुसन्धानका लागि पक्राउ पुर्जीसमेत दिई पक्राउ गरी प्रहरी हिरासतमा राख्न सक्ने नै देखिने ।

ठगीमा जाहेरी परी अनुसन्धानका लागि म्याद थप गरिपाउँ भनी आएकोमा अदालतले उपयुक्त देखेमा कानूनको परिधिभित्र रही म्याद थप गर्न पाउने नै हुँदा भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट म्याद थप गरिएको कार्यलाई गैरकानूनी भन्न नमिल्ने ।

बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदनबाट थुनाको वैधता मात्र परीक्षण गरिने ।

बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदनबाट प्रहरीसमक्ष परेको ठगी मुद्दामा पक्राउ गर्न, अनुसन्धान गर्न नपाउने तथा अनुसन्धानका लागि थुनामा राख्न नपाउने भन्न मिल्दैन । प्रस्तुत रिट निवेदनमा थुनामा राख्नु पर्ने आधार र कारण नभएको, थुनामा राख्दाको प्रक्रिया नअपनाएको तथा थुनामा पनि कानूनबमोजिमको उचित व्यवहार नगरेको भन्ने जस्ता थुनामा राख्दा संवैधानिक तथा कानूनी प्रावधानको पालना नभएको भनी निवेदकले देखाउन सकेकोसमेत पाइँदैन । थुना गैरकानूनी भएको भन्ने प्रस्तुत मिसिल र प्रमाणका लागि झिकाइएका मिसिलहरूबाट समेत देखिँदैन । यस्तो अवस्थामा ठगी मुद्दामा अनुसन्धान गर्न पाउने निकायले कानूनबमोजिम पक्राउ गरी अनुसन्धानको सिलसिलामा मुद्दा हेर्ने सक्षम निकायबाट अनुमति लिई म्याद थप गरी हिरासतमा राखेको कार्यलाई गैरकानूनी थुना भनी व्याख्या गर्न नमिल्ने ।

अतः विवेचित तथ्य तथा प्रमाणको आधारमा विपक्षीमध्येका कालिका श्रेष्ठको जाहेरीले ठगी मुद्दामा विपक्षी महानगरीय प्रहरी परिसर भक्तपुरबाट रिट निवेदकलाई पक्राउ गरी कानूनबमोजिम अनुसन्धान गर्नका लागि भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट म्याद थपसमेत भई सोअनुसार थुनामा राखेको कार्यलाई अवैध तथा गैरकानूनी थुना भनी निवेदन मागअनुसार विपक्षीहरूका नाममा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको आदेश जारी गर्न मिलेन । रिट निवेदन खारेज हुने ।

उपरजिष्टार: इन्दिरा शर्मा

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर ७ गते रोज ५ शुभम् ।

६

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.**

**श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७४-WH-००२५,**

बन्दीप्रत्यक्षीकरण, नारायण भण्डारी वि. महानगरीय अपराध महाशाखा, टेकुसमेत

निवेदकको निवेदनमा पक्राउ पर्नाको कारणसमेत नदिई विपक्षीहरूले पक्राउ गरेका र

आफन्तसँग भेटघाट गर्नसमेत नदिई अमानुसिब तवरबाट थुनामा राखिएको भन्ने जिकिर लिएको देखिन्छ । पक्राउ गर्नाको कारण नदिई पक्राउ गरी थुनुवापुर्जिसमेत नदिई थुनामा राखिएको अवस्थामा त्यस्तो थुनालाई कानूनसम्मतको थुना मान्न मिल्दैन । तर प्रस्तुत मुद्दामा रिट निवेदकलाई पक्राउ पुर्जी दिएको भन्ने विपक्षी महानगरीय प्रहरी परिसरको लिखित जवाफबाट खुल्न आएको पाइयो । पक्राउको जानकारी दिएर पक्राउ गरी थुनुवा पुर्जिसमेत दिएको भनी परेको लिखित जवाफलाई रिट निवेदकले अदालतमा उपस्थित भई खण्डन गरी रिट निवेदकलाई गरिएको पक्राउ र थुनालाई गैरकानूनी भनी पुष्टि गराउने दायित्व यी रिट निवेदकमा रहेको अवस्थामा सो दायित्व पूरा नगरी तोकिएको तारेख नै गुजारी बसेको भन्ने मिसिलबाट देखिन्छ । यस्तो अवस्थामा बन्दीप्रत्यक्षीकरणको निवेदन दिएको भन्ने मात्र आधारमा रिट जारी हुन सक्ने हुँदैन । रिट खारेज हुने ।

उपरजिष्टारः इन्दिरा शर्मा

इति संवत् २०७४ साल मार्ग ७ गते रोज ५ शुभम् ।

७

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल**, ०७१-सी-००१६, परमादेश, प्रकाशचन्द्र उदास वि. ऋण असुली न्यायाधिकरण, काठमाडौं

बैंक तथा वित्तीय संस्थाको ऋण असुली नियमावली, २०५९ को नियम २१ मा गरिएको व्यवस्थाअनुसार न्यायाधिकरणको निर्णयउपर पुनरावेदन न्यायाधिकरणसमक्ष पुनरावेदन लाग्न सक्ने व्यवस्था रहेको देखिएको छ । बैंक तथा वित्तीय संस्थाको ऋण असुली ऐन, २०५८ को दफा ४ बमोजिम उक्त न्यायाधिकरणको स्थापना गरेको र सोको पुनरावेदन सुन्न सोही ऐनको दफा ८ ले पुनरावेदन न्यायाधिकरणको व्यवस्था गरेको देखिन्छ । ऋण असुली न्यायाधिकरणको स्त्रेस्तेदारले उक्त निवेदनको सम्बन्धमा गरेको आदेशउपर प्रचलित कानूनबमोजिम न्यायाधिकरणसमक्ष निवेदन दिनु पर्नेमा यी रिट निवेदकले सोतर्फ निवेदन नगरी

वैकल्पिक उपचारको बाटो देखिँदादेखिँदै न्याय प्रशासन ऐन, २०४८ को दफा ८(२) अन्तर्गत रिट निवेदन दायर गरेको देखिन आउने ।

निवेदकले ऋण असुली न्यायाधिकरणमा दिएको निवेदन मिसिलसाथ राख्ने भनी स्त्रेस्तेदारबाट भएको उक्त प्रारम्भिक आदेशमा कुनै त्रुटि रहेकोसमेत देखिएको छैन । मिसिल सामेल राख्ने आदेशबाट नै उक्त निवेदन मिसिल संलग्न रहन जाने र तत्पश्चात् उक्त निवेदनको माग सम्बोधन हुने निकायसमक्ष पेस भई सो निवेदनको अन्तरवस्तुमा प्रवेश गरी आदेश गर्ने नगर्ने भनी सोही न्यायाधिकरणबाट आदेश हुनेमा स्त्रेस्तेदारबाट भएको आदेशका उपर परमादेश जारी गरिपाउँ भनी रिट दायर गरिएको देखिएको हुँदा उक्त रिट निवेदनलाई कानूनबमोजिम दायर हुन आएको मान्न मिल्ने देखिएन । तसर्थ उक्त रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्‍याई सुरु पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट भएको उक्त मिति २०७१।०२।०१ को आदेश मिलेकै देखिन आएको हुँदा यी पुनरावेदकको प्रस्तुत पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

तसर्थ, विवेचित आधार र कारणबाट निवेदकको रिट निवेदन खारेज हुने ठहरी सुरु पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट भएको मिति २०७१।२।१ को आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : सुरथप्रसाद तिमल्सेना

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७४ साल जेठ २९ गते रोज २ शुभम् ।

८

**मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल**, ०७१-सी-०५३९, उत्प्रेषण / परमादेश, उदयचन्द्र पराजुली वि. भूमिसुधार तथा व्यवस्था विभाग, बबरमहल काठमाडौंसमेत

निवेदकले भोग गरेको जग्गाको क्षेत्रफल र सो जग्गाको नक्साको क्षेत्रफलमा एकरूपता कायम गर्नका लागि नै नापी कार्यालबाट फिल्ड प्रतिवेदन, भोगको नक्सा ट्रेस, नक्सामा रहेको जग्गाको ट्रेस, नापजाँच तथा सर्जमिन मुचुल्का गरी जग्गाको क्षेत्रफल यकिन गरी

उक्त कि.नं.११८ को जग्गामा रहेको भोगको आधारमा देखिएको क्षेत्रफल र नक्सामा देखिएको क्षेत्रफलमा एकरूपता कायम गर्नका लागि नापी कार्यालयबाट प्राप्त भएको फिल्ड प्रतिवेदन, भोगको नक्सा ट्रेस, नक्सामा रहेको जग्गाको ट्रेस नापजाँच तथा सर्जमिन मुचुल्कासमेतबाट उक्त जग्गाको क्षेत्रफल ०८२.४२ वर्ग मी. कायम रहेको अवस्था विद्यमान रहेबाट निवेदकले आफ्नो रिट निवेदनमा उल्लेख गरेबमोजिम निजको उक्त कि.नं.को जग्गाको क्षेत्रफलका सम्बन्धमा प्राविधिक जाँच प्रतिवेदन एवम् भोगभन्दा बढी हुने गरी कायम गर्न कानूनतः मिल्ने पनि नहुने।

निवेदकको जग्गाको हाल साबिक सम्बन्धमा कानूनी प्रक्रिया अवलम्बन गरिएको उक्त मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजारको मिति २०७०।३।५ को पत्र तथा नापी कार्यालय, डिल्लीबजारको मिति २०६९।१।१९ को पत्र तथा सोसम्बन्धी निर्णयले निवेदकको कुनै नागरिक हक हनन् भएको अवस्था नदेखिएकोले उक्त रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्न्याई सुरु पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट भएको उक्त मिति २०७१।३।३२ को आदेश मिलेकै देखिन आएको हुँदा यी पुनरावेदकको प्रस्तुत पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार र कारणबाट निवेदकको रिट निवेदन खारेज हुने ठहरी सुरु पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट भएको मिति २०७१।३।३२ को आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : सुरथप्रसाद तिमल्सेना

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७४ साल जेठ २९ गते रोज २ शुभम्।

९

मा.न्या.श्री चोलेन्द्र शमशेर ज.ब.रा. र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७२-CI-०६९५, जग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाई पाउँ, भगती पार्की वि. नन्दराज पन्त

सुरु अदालतबाट भई आएको मिति २०७१।१।१६ को स्थलगत नक्सा मुचुल्काअनुसार न.नं.२२ को पूरै र न.नं.२३ को उत्तरतर्फको

६ व.मि. जग्गासमेत वादीको कि.नं.२६०७ को देखिँ उक्त जग्गामा प्रतिवादीले न.नं.२२ मा न.नं. ८ को शौचालयसमेत निर्माण गरी भोग गरेको देखिन्छ। उक्त शौचालय स्थायी संरचना (घर) नभएकोले सो जग्गामा मुलुकी ऐन, घर बनाउनेको ११ नं. बमोजिमको हदम्यादसमेत आकर्षित हुने देखिँदैन। यसरी न.नं.२२ को ९४ व.मि. र न.नं.२३ को उत्तरतर्फको ६ व.मी. गरी १०० व.मि. वादीको जग्गा प्रतिवादीले खिचोला गरेको देखिने।

पुनरावेदन अदालतको फैसलाको तपसिल खण्डमा सुरु अदालतबाट मिति २०६९।७।२४ मा भई आएको नक्सा मुचुल्का भन्ने उल्लेख भए पनि उक्त मुचुल्का बदर भइसकेको र ठहर खण्डमा मिति २०७१।१।१६ को नक्सा मुचुल्का भन्ने उल्लेख भइरहेकै देखिँदा ठहर खण्डमा उल्लिखित नक्सा भएको मिति नै कायम हुने।

अतः सुरु अदालतबाट मिति २०७१।१।१६ मा भई आएको न.नं.२२ र २३ को उत्तरतर्फबाट ३१.७५ व.मि. मात्र वादीलाई चलनचलाई दिने ठहर गरेको सुरु कञ्चनपुर जिल्ला अदालतको फैसलालाई केही उल्टी गरी न.नं.२२ को ९४ व.मि. र न.नं.२३ को उत्तरतर्फबाट ६ व.मि. गरी १०० वर्गमिटरभित्र रहेको न.नं. ८ को शौचालयसमेत घर बनाउनेको ४ नम्बरबमोजिम हटाउन लगाई प्रतिवादीको खिचोला मेटाई वादीलाई चलन चलाईदिने ठहर्न्याई भएको पुनरावेदन अदालत, महेन्द्रनगरको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: सन्देश श्रेष्ठ

कम्प्युटर: चन्दनकुमार मण्डल

इति संवत् २०७४ साल कात्तिक १६ गते रोज ५ शुभम्।

इजलास नं. ६

मा.न्या.श्री जगदीश शर्मा पौडेल र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७०-WO-०२०१, उत्प्रेषण / परमादेश, योजितराज प्रधान नेपाली वि. मालपोत कार्यालय, इनरूवा, सुनसरीसमेत

कि.नं. ५१ को ज.वि. ०-४-१३ मध्येबाट ज.वि. ०-२-१ को जग्गा योजितराज प्रधानले विपक्षी गोपेस शक्ति मास्केकी आमा शोभा मास्केसँग खरिद गरेकोमा सोउपर गोपेस शक्तिको लिखत बदर मुद्दा परी ३ भागको १ भाग लिखत बदर भई उक्त मुद्दा अन्तिम भइरहेको देखिन्छ । सोबमोजिम उक्त फैसला कार्यान्वयनका लागि निवेदन दिएकोमा अन्तिम भइरहेको देखिन्छ । सोबमोजिम उक्त फैसला कार्यान्वयनका लागि निवेदन दिएकोमा मिति २०६६।६।११ मा जग्गाको तर्फ छुट्टयाई चलनपुर्जिसमेत प्राप्त गरिसकेको अवस्थामा निवेदकले नै धितो राखेको कारणबाट दर्ता दा.खा. हुन नसकेको र धितोमा ऋणको दायित्व नरहेको अवस्थामा फैसलाबमोजिम रोकका फुकुवा गरी विपक्षी गोपेस शक्ति मास्केका नाउँमा नरहेको अवस्थामा फैसलाबमोजिम रोकका फुकुवा गरी विपक्षी गोपेस शक्ति मास्केका नाउँमा दर्ता दा.खा. गरिदिने गरी जिल्ला अदालतबाट मिति २०६९।६।१९ मा भएको आदेश सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, विराटनगरबाट मिति २०७०।४।१७ मा भएको आदेश कानूनसम्मत नै देखिएकोले उक्त आदेशबाट निवेदकको कुनै हक हनन भएको नदेखिएको हुँदा रिट जारी गर्नुपर्ने नदेखिँदा प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: जगदीशप्रसाद भट्ट  
कम्प्युटर: चन्द्रा तिमिल्सिना  
इति संवत् २०७४ साल वैशाख ७ गते रोज ५ शुभम् ।

इजलास नं. ७

१

मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०६५-WO-०६२६, उत्प्रेषण / परमादेश, अग्निप्रसाद पौडेल वि. भूमिसुधार तथा व्यवस्था मन्त्रालय, सिंहदरबारसमेत

निवेदकले आफ्नो नाम दर्ताको जग्गा भोगचलन गर्ने क्रममा बाटो तथा चार किल्ला प्रमाणित गरी सिफारिस उपलब्ध गराई पाउन मिति २०६५।५।४

मा काठमाडौं महानगरपालिकामा निवेदन गरेको भन्ने देखिन्छ । सो सम्बन्धमा सामाजिक समाजका अध्यक्ष गोपाल जोशीसमेतका व्यक्तिहरूले मिति २०६३।५।१५ मा नै सार्वजनिक जग्गा संरक्षण गरी पाउनको लागि काठमाडौं महानगरपालिकामा निवेदन गरेकोले काठमाडौं महानगरपालिकाका कार्यकारी अधिकृतबाट सार्वजनिक जग्गा खिचोला भए नभएको सम्बन्धमा यकिन नभएसम्मको लागि उक्त धोबीखोलासँग जोडिएको कि.नं. १४३ को सार्वजनिक जग्गासँग जोडिएका कुनै पनि जग्गाहरू हाल साबिक गर्ने कार्य तत्काल नगर्ने र गरी सकिएको भए प्रमाणित नगर्ने भनी मिति २०६३।५।१८ मा निर्णय गरी सबै वडा कार्यालयहरूलाई परिपत्र गरेको भन्ने देखिन्छ । यसरी मिति २०६३।५।१५ को सामाजिक समाजको उजुरीको आधारमा सार्वजनिक जग्गाको यथार्थ अवस्था यकिन गर्ने प्रयोजनको लागि काठमाडौं महानगरपालिकाबाट सार्वजनिक जग्गाको सिमाना जोडिएका व्यक्तिको जग्गाहरूको हाल साबिक तथा सिमाना प्रमाणित गर्ने कार्यहरू तत्काललाई रोक लगाएको विषयलाई अन्यथा मानी हाल्नुपर्ने अवस्था पनि नदेखिने ।

निवेदकको नाममा दर्ता रहेको जग्गाको दर्ता बदरसम्बन्धी मुद्दा अदालतको साधारण अधिकार क्षेत्रअन्तर्गत काठमाडौं जिल्ला अदालतमा विचाराधीन अवस्थामा रही रहेको र सुरु तहबाट निर्णय भएपश्चात् निवेदकलाई चित्त नबुझेमा पुनरावेदन गर्ने अधिकार कानूनले सुनिश्चित गरी रहेको अवस्थालाई समेत नजरअन्दाज गर्न मिल्ने पनि नदेखिने ।

मातहत अदालतमा विचाराधीन मुद्दालाई असर पार्ने गरी रिट क्षेत्रबाट यस अदालतबाट कुनै निर्णय गर्न पनि मिल्ने हुँदैन । यसबाट निवेदन जिकिरका हकमा थप विवेचना गर्नुपर्ने नदेखिने । यसरी संविधान तथा कानून प्रदत्त हक उपभोगमा वैकल्पिक उपचारको विद्यमानता नभएमा मात्र यस अदालतले आफ्नो असाधारण अधिकारक्षेत्र ग्रहण गरी विवादको निरूपण गर्न सक्नेमा बैकल्पिक कानूनी उपचार विद्यमान रहिरहेको तथा प्रस्तुत विवाद

सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतमा समेत विचाराधीन रहिरहेको देखिँदा निवेदन जिकिरबमोजिम आदेश जारी गर्नुपर्ने देखिएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: बिमला पौडेल

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७४ साल माघ ९ गते रोज ३ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०६५-WO-०९२४, उत्प्रेषण / परमादेश, हरिप्रसाद गिरी वि. मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजार, काठमाडौंसमेत**

साबिक काठमाडौं जिल्ला, बानेश्वर महादेवस्थान वडा नं. ५ कि.नं. १४३ को ज.रो. २३-०-०-० जग्गा नेपाल सरकारको नाममा दर्ता भई हाल काठमाडौं महानगरपालिका वडा नं. १० र ३२ का विभिन्न कित्ता कायम भई नापनक्सा भएकोमा त्यस्तो सार्वजनिक जग्गाहरू व्यक्ति विशेषका नाममा दर्ता गराएकोले दूषित निर्णय दर्ता बदर गरी सार्वजनिक कायम गरिपाउँ भनी सामाजिक विकास समाजको तर्फबाट समाजका अध्यक्ष गोपाल जोशीले नेपाल सरकार भूमिसुधार तथा व्यवस्था मन्त्रालयसमेतलाई विपक्षी बनाई काठमाडौं जिल्ला अदालतमा यो रिट दायर हुनुअगावै मिति २०६४।५।२७ मा फिराद दायर गरी सो मुद्दा विचाराधीन अवस्थामा रही हाल मुलतबीमा रहेको बेहोरा काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट प्राप्त उक्त मुद्दाको मिसिलबाट देखिने ।

दूषित निर्णय दर्ता बदर मुद्दासँग प्रत्यक्ष सरोकार रहेको निवेदकले दाबी लिएका जग्गाको दर्ता बदरसम्बन्धी मुद्दा सुरु अदालतमा विचाराधीन रहेको अवस्थामा सुरु अदालतको अधिकारक्षेत्रलाई प्रभावित गर्ने गरी प्रस्तुत रिटको माध्यमबाट यस अदालतले हस्तक्षेप गर्न मिल्ने देखिएन । निवेदनमा उल्लिखित विवादित जग्गाको दर्ता बदरसम्बन्धी मुद्दामा निवेदकलाई चित्त नबुझेमा अदालतको साधारण अधिकार क्षेत्रान्तर्गत कानूनबमोजिम पुनरावेदकीय अधिकार क्षेत्रबाट समेत निरूपण हुन सक्ने विषयलाई

यस अदालतको असाधारण अधिकार क्षेत्रान्तर्गत विवाद निरूपण गराउनसमेत नमिल्ने ।

अतः निवेदकले दाबी लिएको विवादित जग्गाको सम्बन्धमा काठमाडौं जिल्ला अदालतमा दूषित निर्णय दर्ता बदर सार्वजनिक कायमसम्बन्धी मुद्दा विचाराधीन अवस्थामा रहेको हुँदा सुरु जिल्ला अदालतबाट नै प्रस्तुत विवादको निरूपण हुन सक्ने देखिएकोले निवेदन जिकिरबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने देखिएन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: बिमला पौडेल

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७४ साल माघ ९ गते रोज ३ शुभम् ।

यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन्:

- ०६५-WO-०९२५, उत्प्रेषण / परमादेश, मोहनबहादुर महर्जन वि. मालपोत कार्यालय, डिल्लीबजार, काठमाडौंसमेत
- ०६५-WO-०७६४, उत्प्रेषण / परमादेश, टेकबहादुर पौडेलसमेत वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग, नक्सालसमेत

३

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.डा. श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०६७-WO-०८४२, उत्प्रेषण, चन्द्रबहादुर थापासमेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय, सिंहदरबारसमेत**

प्रस्तुत मुद्दामा निवेदकले पूर्व मिति २०५९।१।५ को निर्णयबमोजिम सोधभर्ना पाएको बानेश्वर महादेवस्थानको जग्गा नै यथावत् कायम हुनुपर्ने जिकिर लिई मन्त्रिपरिषद्को पछिल्लो निर्णयबाट निजलाई उपलब्ध गराइएको कपनको जग्गा सोधभर्ना लिन इन्कार गरी प्रस्तुत रिट दायर गरेको देखिन आयो । जग्गा अधिग्रहण हुँदा जग्गाधनीलाई नेपाल सरकारले सोधभर्ना स्वरूप उपलब्ध गराउने जग्गा सम्बन्धमा निवेदकले रोजेकै स्थानमा पाउनुपर्ने भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको नदेखिने ।

प्रस्तुत मुद्दामा निवेदकलाई नेपाल सरकारले

एकपटक सोधभर्ना स्वरूप बानेश्वर महादेवस्थानको जग्गा उपलब्ध गराएको भन्ने कुरा देखिए पनि सो जग्गा स्थानीय जनताको प्रयासमा वडा कार्यालयसमेतको लगानीमा बालउद्यान पार्क निर्माण भइसकेको अवस्था देखिन आएको र निवेदकले सो जग्गा उपभोग गर्न सक्ने अवस्था पनि नरहेको स्थितिमा मन्त्रिपरिषद्को पूर्वमिति २०५९।१।५ को निर्णय पुनरावलोकन गरी सो निर्णयबमोजिम उपलब्ध गराएको जग्गाको दर्ता बदर गरी निवेदकको सम्पत्तिसम्बन्धी मौलिक हकमा प्रतिकूल असर नपर्ने गरी काठमाडौं जिल्लाभित्रको कपन गाउँ विकास समितिको जग्गा सोधभर्ना उपलब्ध गराएको देखिएको र मन्त्रिपरिषद्को उक्त पछिल्लो मिति २०६७।६।१२ को निर्णयबाट निवेदकलाई सोधभर्ना उपलब्ध गराएको जग्गा भोगचलन गर्न नमिल्ने भन्ने निवेदकको कुनै जिकिरसमेत रहेको नदेखिँदा निवेदकले भोगचलन गर्न मिल्ने जग्गा सोधभर्ना दिएको अवस्थामा निवेदकले आफूले रोजेको स्थानमा नै सोधभर्ना पाउनुपर्ने गरी पहिलाको मन्त्रिपरिषद्को मिति २०५९।१।५ को निर्णयबमोजिम प्राप्त भएको जग्गाको दर्ता यथावत् कायम हुनुपर्दछ भन्ने निवेदकको जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने।

अतः जग्गाको स्वामित्ववालाको हक कुण्ठित नहुने गरी निजको सोधभर्ना ग्रहण गर्ने चाहना पूर्तिको लागि अन्य कुनै सार्वजनिक जग्गा वा ऐलानी जग्गा सोधभर्ना दिनलाई नेपाल सरकार स्वतन्त्र रहेको देखिँदा भूलबस एकपटक सार्वजनिक चासो र सरोकारको रूपमा रहेको सार्वजनिक उपयोगको रूपमा रहेको बाल उद्यानजस्तो सार्वजनिक सम्पत्तिलाई व्यक्ति विशेषको हक कायम हुने गरी भएको निर्णयलाई परिवर्तन गरी सोही बराबरको सोधभर्ना स्वरूप व्यक्तिलाई उपलब्ध गराउन मिल्ने अर्को सार्वजनिक जग्गा सोधभर्ना उपलब्ध गराउने गरी २०६७।६।१२ मा निर्णय भएको अवस्था हुँदा मिति २०५९।१।५ को निर्णयबाट उपलब्ध गराइएको जग्गाको सट्टा कपन गा.वि.स. वडा नं. ३(ज) को निजी प्रयोगमा भोगचलन गर्न मिल्ने उपयुक्त जग्गा उपलब्ध गराउने गरी मिति २०६७।६।१२ मा मन्त्रिपरिषद्बाट निर्णय भएको

देखिँदा निवेदकको इच्छाअनुसार पूर्व मिति २०५९।१।५ को निर्णय बमोजिमको जग्गा नै सोधभर्ना पाउनुपर्दछ भन्ने निवेदकको मागदाबी पुग्न सक्ने। प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: बिमला पौडेल

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७४ साल माघ ९ गते रोज ३ शुभम्।

४

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७०-WO-०३९२, उत्प्रेषण, *इन्द्रकुमारी खत्रीसमेत वि. पुनरावेदन अदालत, बुटवलसमेत*

विपक्षीका पति पिताले निवेदकहरूसँग गरेको बन्डापत्र (अंश भरपाई) को कार्यबाट अचल सम्पत्तिको अंश छोडपत्रको कार्य भइसकेको र सो कार्यमा निजकी श्रीमती र छोरी सगोलको अंशियार रहे भएको देखिएको र निजहरूको उक्त कार्यमा सहमति भए नभएको, हुनुपर्ने, नपर्ने एवम् समस्त सम्पत्तिको तुलनामा वादी पूर्णबहादुरले बुझेको अंश न्यायोचित भए नभएको कुराको जाँच गरी कानूनबमोजिम फैसला हुन बाँकी नै हुँदा प्रस्तुत सिद्धान्तको रोहबाट समेत विपक्षी पुनरावेदन अदालत, बुटवलको रिट निवेदकहरूबाट समेत तायदाती माग्ने गरी भएको आदेश अन्यथा नदेखिने।

तसर्थ, उपर्युक्त विवेचित आधार, प्रमाण तथा कारणबाट रिट निवेदकहरूले विपक्षीहरूको काम कारबाहीबाट आफ्नो के कुन कानूनी र संवैधानिक हकमाथि आघात पर्न गएको हो भन्ने कुरा स्पष्ट रूपमा खुलाउन नसकेको स्थिति, रिट निवेदकले विपक्षीहरूको आदेश एवम् लिखित जवाफलाई अन्यथा हो भन्न नसकेको स्थिति, रिट निवेदकहरूबाट तायदाती माग्दैमा विपक्षीहरूबाट अंश नै पाउने भन्ने नभएको अवस्था एवम् मुद्दा कानूनबमोजिम फैसला हुन बाँकी नै रहेको स्थितिमा र उल्लिखित यस अदालतबाट प्रतिपादित नजिर सिद्धान्तसमेतलाई विश्लेषण गर्दा विपक्षीहरूको काम कारबाहीबाट निज निवेदकहरूको संवैधानिक एवम् कानूनी हकमा आघात परेको भन्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिँदा विपक्षीहरूको नाममा निवेदकहरूको

मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने देखिन आएन। रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: कमलकान्त जोशी

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७५ साल जेठ ९ गते रोज ४ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७०-WO-०६८५, उत्प्रेषण, *पवनकुमार संघई वि. तराई टेलिभिजन नेटवर्क प्रा.लि.समेत*

विपक्षी जे.के. स्थापितको नामको व्यक्तिगत सेयर रोक्का राख्नुपर्ने कानूनबमोजिमको आधार कारण निवेदकले खुलाउन नसकेको स्थितिमा निज विपक्षीको नामको व्यक्तिगत सेयर रोक्का गर्ने कार्य कानूनसम्मत देखिँदैन। विपक्षीहरूले लिखित जवाफ फिराउँदा आफ्नो काम कारबाहीबाट निवेदकको कुनै प्रकारको हकमा आघात नपरेको एवम् आफूहरूले कानूनबमोजिमको कामकारबाही गरेको भन्ने बेहोरा उल्लेख गरेको देखिन्छ। निवेदकले विपक्षीहरूको यो यस्तो गैरकानूनी काम कारबाहीबाट यस्तो प्रकारको नोक्सानी भयो भन्ने वस्तुनिष्ठ प्रमाण पेश गर्न सकेको देखिँदैन। यसरी रिट निवेदकले विपक्षी जे.के. स्थापितको नामको व्यक्तिगत सेयर बिक्री रोक्का राख्ने आदेश गरिपाउँ भन्ने नै मूल निवेदन जिकिर लिएका छन्। रिट निवेदकले आफ्नो जिकिर लिएबाहेक सो कुरा पुष्टि हुने कुनै प्रमाण पेश गर्न सकेको देखिँदैन। केवल जिकिर लिएर मात्र हुँदैन सो कुराको पुष्टि पनि हुन सक्नुपर्ने।

यसर्थ, उपर्युक्त विवेचित आधार तथा कारणबाट रिट निवेदकले आफ्नो लेनादेना विपक्षीमध्येको तराई टेलिभिजन नेटवर्क प्रा.लि.सँग भएको कुरालाई सहर्ष स्वीकार गरेको देखिएको अवस्था, रिट निवेदक र विपक्षी तराई टेलिभिजन नेटवर्क प्रा.लि. समेत बीच काठमाडौं जिल्ला अदालतमा लेनदेन मुद्दा दायर भई प्रमाण परीक्षणको चरणमा रहेको अवस्था, निवेदकले विपक्षीहरूको काम कारबाहीबाट आफ्नो के कुन मौलिक हकर संवैधानिक हकमाथि आघात पर्न गएको हो भन्ने कुरा स्पष्ट रूपमा खुलाउन नसकेको स्थिति र रिट निवेदकले

विपक्षीहरूको लिखित जवाफलाई अन्यथा हो भन्न नसकेको स्थितिसमेतलाई विश्लेषण गर्दा विपक्षीहरूको काम कारबाहीबाट निज निवेदकको संवैधानिक एवम् कानूनी हकमा आघात परेको अवस्थाको विद्यमानता नदेखिँदा विपक्षीहरूको नाममा मागबमोजिमको आदेश जारी गर्नुपर्ने देखिन आएन। रिट निवेदन खारेज हुने।

इजलास अधिकृत: कमलकान्त जोशी

कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना

इति संवत् २०७५ साल जेठ ९ गते रोज ४ शुभम्।

६

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७२-CI-१४१३, अंश, *कृष्णदत्त जोशी वि. कलावती जोशीसमेत*

मिसिल कागजातबाट अलगअलग र बासस्थानसमेत टाढा रहे बसेका निज वादी प्रतिवादीहरू बीचमा व्यवहार, कारोबार भिन्नभिन्न रही अंशबन्डासमेत भइसकेको मान्नुपर्ने हुँदा सुरु अदालतको फैसलालाई सदर गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत, दिपायलको फैसला अन्यथा नदेखिने।

प्रस्तुत मुद्दाको विवाद सम्बन्धमा लागि मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको १८ नं. को व्यवस्थासमेत हेर्नुपर्ने देखिन्छ। उक्त कानूनी व्यवस्था हेर्दा “..... कुनै अंशियारले आफ्नो ज्ञान वा सीप वा प्रयासबाट निजी आर्जन गरेको वा कसैबाट निजी तवरले दान वा बकस पाएको वा कसैको अपुताली परेको वा स्त्री अंशधनको महलको ५ नम्बरबमोजिम पाएकोमा त्यस्तो आर्जन वा पाएको सम्पत्ति सो आर्जन गर्ने वा पाउने अंशियारको निजी ठहरी आफूखुसी गर्न पाउँछ। बन्डा गर्न कर लाग्दैन। अंश नभए पनि मानो छुट्टिई भिन्न बसेका वा रजिष्ट्रेशन नगरी खति उपति आफ्नो आफ्नो गरी आफ्नो हिस्सासँग मात्र राखी खानु पिउनु गरेकोमा एकै ठाउँमा भए पनि मानो छुट्टिई भिन्न भएको ठहर्छ। त्यस्तो कमाएको धन लाएको ऋण आफ्नो आफ्नो हुन्छ” भनी उल्लेख भएको देखिन्छ। प्रस्तुत कानूनी व्यवस्थाको आधारमा एकाघर सगोलमै रहे भएको अवस्थामा समेत निजी आर्जनको भनी पुष्टि भएमा उक्त सम्पत्तिमा



अंशियारहरूबीच भाग नलान्ने, आफूखुस गर्न पाउने हुन्छ । मानो छुट्टिएकोमा सोही दिनबाट र मानो नछुट्टिए पनि खति उपति आआफैले बेहोर्ने भनी लिखत भए गरेकोमा सोपश्चात् आर्जित सम्पत्ति स्वआर्जनको हुने र उक्त सम्पत्ति बन्डा नहुने ।

तसर्थ, माथि विवेचित आधार, प्रमाण एवम् अ.बं. १३९ नं. बुझिएका वादी स्वयम् कृष्णदत्त जोशीका छोरा जयराज जोशीलगायतको अदालतसमक्षको बयान, प्रतिवादीहरूको नाउँको जग्गा निजका पिता पतिको स्वआर्जनको हो भन्ने देखिएको स्थिति, वादी प्रतिवादीहरूको बसाइँसमेत अलगअलग रहेकोमा विवाद नरहेको एवम् मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको ३० नं. बमोजिम व्यवहार प्रमाणबाट वादी प्रतिवादीहरू पहिले नै छुट्टिई भिन्न भइसकेको भन्ने प्रतिवादीको जिकिर अन्यथा नदेखिएको अवस्था एवम् प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २६ बमोजिम सबुद प्रमाणबाट आफ्नो वादी दाबी पुष्टि गर्ने भार निज वादीले पूरा गर्न नसकेकोलगायतका कारणबाट वादी प्रतिवादीहरू व्यवहार प्रमाणबाट भिन्न भइसकेको देखिँदा तराई, पहाडस्थित सम्पूर्ण घर जग्गाको प्रत्यर्थी प्रतिवादीहरू र वादी पक्षबीच अंशबन्डा हुनुपर्ने भन्ने पुनरावेदन जिकिर पुष्टि हुन नसकेको अवस्थामा वादी दाबी नपुग्ने गरी सुरु कैलाली जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।१२।१९ मा भएको फैसलालाई सदर गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत, दिपायलको मिति २०७२।४।२० को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: कमलकान्त जोशी

कम्प्युटर: अभिषेककुमार राय

इति संवत् २०७५ साल असार १७ गते रोज १ शुभम् ।

७

**मा.न्या.श्री दीपककुमार कार्की र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान**, ०७२-WO-०५१८, उत्प्रेषण, केशरी पुरी वि. पुनरावेदन अदालत, पाटनसमेत

अन्तिम रहे भएको फैसला कार्यान्वयन गर्नु अदालतको दायित्व हुन आउँछ । बहाल रकम भराइ पाउँ भन्ने मुद्दामा सुरु म्याद गुजारी प्रतिवाद नगरी फिराद दाबी स्वीकार गरी चित्त बुझाई सकेको अवस्थामा अहिले

सो फिराद दाबी र त्यसको आधारमा भएको फैसला अन्यथा हुन सक्दैन फैसलाबमोजिम तिर्नु बुझाउनु पर्ने होइन भनी रिट निवेदन गर्दैमा फैसला कार्यान्वयनको काम रोकिने अवस्था हुँदैन । फैसला अन्तिम भई लिलामी कारबाहीसमेत भइसकेको बहाल रकमसम्बन्धी स्वतन्त्र मुद्दाको फैसला कार्यान्वयन अर्को खिचोला मुद्दामा परेको पुनरावेदनबाट रोकी रहनु पर्ने अवस्था विद्यमान देखिएन । त्यस्तो अवस्था रिट निवेदकले देखाउन सकेको अवस्था पनि छैन । त्यस्तो अवस्था नदेखिने ।

बहाल भराई पाउँ भन्ने मुद्दाको फैसला अन्तिम भएर रहेको देखिन्छ । सो अन्तिम भएको फैसलाबमोजिम लिलामी कारबाही रोकी पाउँ भनी प्रस्तुत रिट निवेदन परेको देखियो । अन्तिम फैसलाबमोजिमको फैसला कार्यान्वयन रोकनुपर्ने कुनै अवस्था देखिँदैन । घरजग्गा खिचोला मेटाई चलन चलाई हक कायम गरिपाउँ भन्ने मुद्दामा कानूनबमोजिम फैसला हुन सक्ने नै देखिन्छ । हाल लिलामी कारबाही भइसकेको र लिलामबाट नपुग रकम रु.१०,६५,२३०।- निवेदकले भक्तपुर जिल्ला अदालतमा पेस गरेको देखिन्छ । अदालतको अन्तिम फैसलालाई कार्यान्वयन गर्नबाट रोकन सक्ने अवस्था हुँदैन । भएको लिलाम कानूनप्रतिकूल भएको देखिनुपर्छ । त्यस्तो अवस्था नदेखिने ।

लिलाम बदर मुद्दाको फैसला कार्यान्वयनबाट आफ्नो संविधान तथा कानूनद्वारा प्रदत्त अधिकार हनन् भएको भन्ने रिट निवेदन जिकिर देखिन्छ । संवैधानिक तथा कानूनी हकको हनन् भएको भनेर मात्र पुग्दैन सो कुराको स्पष्ट आधार र सोसम्बन्धी प्रमाणसमेत पेस गर्न सक्नुपर्छ । अदालतको अन्तिम फैसला कार्यान्वयन गर्ने कार्यबाट निवेदकको संवैधानिक तथा कानूनी हकको हनन् भएको नभई संविधान र कानूनद्वारा प्रदत्त अधिकारको गलत प्रयोग गरेको भन्ने मान्नुपर्ने ।

अतः काठमाडौं जिल्ला अदालतको मिति २०७२।२।१८ गतेको आदेश र सो आदेशलाई सदर गर्ने गरी भएको पुनरावेदन अदालत, पाटनको मिति २०७२।१।१७ को आदेश तथा मिति २०७१।१२।२२

को लिलामी मुचुल्कालगायत तत्सम्बन्धी काम कारबाही गैरकानूनी र त्रुटिपूर्ण नदेखिएको हुँदा उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरिरहनु परेन । रिट निवेदन खारेज हुने ।  
इजलास अधिकृत: हिरा डंगोल  
कम्प्युटर: मन्जिता ढुंगाना  
इति संवत् २०७४ साल कात्तिक २३ गते रोज ५ शुभम् ।

इजलास नं. ८

१

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री मीरा खड्का**, ०७२-CR-०८५०, लागु औषध (ब्राउन सुगर), राजु विश्वकर्मासमेत वि. नेपाल सरकार

अदालतमा प्रतिवादीहरू आरोपित कसुरमा इन्कार भएपनि निजहरूबाट लागु औषध (ब्राउन सुगर) बरामद गरेको बरामदी मुचुल्काको रोहबरमा रहेका र अधिकारप्राप्त बयान आरोपित कसुरमा साबित रहेको सो साबिती बयान बरामद भएको लागु औषधबाट पुष्टि हुने ।

पुनरावेदक प्रतिवादीउपर माग दाबी गरिएको लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१) (छ) (२) को कानूनी व्यवस्था हेर्दा "पच्चीस ग्रामदेखि एक सय ग्रामसम्मको कारोबार गर्नेलाई दश वर्षदेखि पन्ध्र वर्षसम्म कैद र पचहत्तर हजार रुपैयाँदेखि दुई लाख रुपैयाँसम्म जरिवाना" भन्ने उल्लेख भएको देखियो । पुनरावेदक प्रतिवादीहरूबाट बरामदी परिमाण हेर्दा ओमप्रकाश सोनीबाट ५५ ग्राम र अर्का राजु विश्वकर्माबाट ४५ ग्राम लागु औषध बरामद भएको देखियो । उल्लिखित दुवै पुनरावेदक / प्रतिवादीबाट बरामदी परिमाण हेर्दा २५ ग्रामभन्दा बढी नै देखियो । यसबाट दुवै प्रतिवादीबाट बरामदी परिमाणलाई जोडेर सजाय गरियो भन्ने पुनरावेदन जिकिर युक्तिसङ्गत नदेखिने ।

परिणामको हिसाबले हेर्दा पनि ओमप्रकाश सोनीबाट ५५ ग्राम, राजु विश्वकर्माबाट ४५ ग्राम लागु औषध बरामद भएको देखिँदा त्यसलाई अत्यधिक परिमाण मान्नु पर्ने हुन्छ । यसरी त्यस्तो परिमाणसहित प्रतिवादीहरू पक्राउ परेका र बिक्री गर्ने उद्देश्यले

ल्याउँदै गर्दाको अवस्थामा पक्राउ परेबाट आरोपित कसुर प्रतिवादीहरूले गरेकै देखिएकोले पुनरावेदक प्रतिवादीहरू ओमप्रकाश सोनी र राजु विश्वकर्मालाई आरोपित कसुर गरेकोमा जनही १५ वर्ष कैद र दुई लाख रुपैयाँ जरिवाना तथा मोटरसाइकल र मोबाइल जफत हुने ठहर्‍याई गरेको पुनरावेदन अदालत, नेपालगञ्जको फैसलामा अन्यथा भएको देखिएन । अतः विवेचित आधार र कारणबाट पुनरावेदन अदालत, नेपालगञ्जको मिति २०७२।२।३२ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: टेकनाथ गौतम

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २३ गते रोज १ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री मीरा खड्का**, ०७४-CR-००३३, जबरजस्ती करणी, गोविन्द के.सी. वि. नेपाल सरकार

पीडितले मौकामा कागज गर्दा प्रतिवादीले आफूलाई तानी कोदोबारीमा लिई पल्टाई आफ्नो र मेरो लुगा फुकाई एकपटक करणी गरेको भनी घटनाको सविस्तार वर्णन गरी मौकामा र अदालतमा बकपत्र गरेको, घटनास्थल प्रकृति मुचुल्का, मौकामा बुझिएका मानिसहरूको भनाइ र पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनमा पीडितको योनिको भाग रातो भएको Labia Majora वरिपरिको छाला अलि खुइलिएको भनी उल्लेख भएबाट प्रतिवादीको अदालतको इन्कारी बयानको आधारले मात्र पीडितलाई प्रतिवादीले जबरजस्ती करणी गरेको होइन रहेछ उद्योगसम्म गरेको हो भन्न मान्न मिल्ने नदेखिँदा सुरु अदालतको फैसलालाई कायमै राखी पाउँ भन्ने प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिरसँग यो इजलास सहमत हुन नसक्ने ।

अतः प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणी गरेको तथ्य पुष्टि भएको देखिएको भनी अभियोग दाबीबमोजिम जबरजस्ती करणी महलको ३(२) बमोजिम प्रतिवादी गोविन्द के.सी.लाई ८ (आठ) वर्ष कैद र ऐ. महलको १० नं. बमोजिम पीडितले प्रतिवादीबाट

रु.५०,०००।- (पचास हजार ) क्षतिपूर्ति भराई लिन पाउने ठहर्‍याई भएको उच्च अदालत, तुलसीपुर, बुटवल इजलासको मिति २०७३।१।१८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: टेकनाथ गौतम

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २३ गते रोज १ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री मीरा खड्का**, ०७३-CR-१६८४, लागु औषध (खैरो हेरोइन), विनोद परियार, वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादीले आफ्नो साथबाट ५ ग्राम मात्र खैरो हेरोइन बरामद भएको भनी अदालतमा बयान गरे तापनि सो बयान बेहोरालाई पुष्टि हुने प्रमाण पेस गर्न सकेको देखिँदैन भने बरामदी मुचुल्काको कुरालाई अन्यथा प्रमाणित गर्न सकेको पनि देखिँदैन । प्रतिवादीको साक्षी लक्ष्मण परियारले प्रतिवादी विनोद परियारले भनेर सुनेको आधारमा प्रतिवादीको साथबाट ५ ग्राम मात्र खैरो हेरोइन बरामद भएको भनी बकपत्र गरेको देखिँदा निजको बकपत्र प्रमाणमा ग्रहण गर्नको लागि विश्वसनीय देखिँदैन । प्रतिवादीले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष गरेको साबिती बयानलाई बरामदी मुचुल्काले समर्थित गरेको बरामद भएको पदार्थमा लागु औषध हेरोइन रहेको कुरा परीक्षण प्रतिवेदनले प्रमाणित गरेको तथा प्रतिवेदकसमेतको बकपत्रबाट समर्थित भएको देखियो । यसरी उपर्युक्त आधार प्रमाणबाट प्रतिवादी विनोद परियारको साथबाट ४० ग्राम लागु औषध खैरो हेरोइन बरामद भएको पुष्टि हुँदा ५ ग्राम मात्र बरामद भएको भन्ने पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

प्रतिवादीले भारत रक्सौलबाट लागु औषध खरिद गरी साथमा लिएर हिँडेको अवस्थामा पक्राउ परेको कुरा स्वीकार गरेको र लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा ४ को (घ), (ङ) र (च) ले लागु औषधको बिक्री वितरण कार्यलाई मात्र नभई निकासी पैठारी, खरिद, सञ्चय र ओसारपसार गर्ने कार्यलाई समेत निषेध गरी कसुर कायम गरेको देखिँदा तथा प्रतिवादीको

साथबाट ४० ग्राम खैरो हेरोइन लागु औषध बरामद भएको प्रमाणित हुँदा बरामद भएको लागु औषधको परिमाणका आधारमा समेत प्रतिवादीले सेवनका लागि मात्र सो परिमाणको लागु औषध खरिद गरी ल्याएको तथ्य विश्वसनीय नदेखिँदा अभियोग दाबीबमोजिमको कसुर कायम गरी गरेको उच्च अदालत, पाटन, हेर्‍टाँडा इजलासको फैसलालाई अन्यथा गरी रहनु पर्ने नदेखिने ।

अतः अभियोग माग दाबीअनुसारको कसुरमा लागु औषध (नियन्त्रण) ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(छ) (२) बमोजिम पुनरावेदक प्रतिवादी विनोद परियारलाई १० (दश) वर्ष कैद र रु.७५,०००।- (पचहत्तर हजार) जरिवाना हुने ठहर्‍याई उच्च अदालत पाटन, हेर्‍टाँडा इजलासले मिति २०७३।१।२२ मा गरेको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: टेकनाथ गौतम

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २३ गते रोज १ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री मीरा खड्का**, ०७३-CR-१७४२, कर्तव्य ज्यान, विमलेशप्रसाद यादव वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादी स्वयम्ले अदालतसमक्ष बयान गर्दा रितु साथीसँग हिँडिरहेको अवस्थामा मैले निजको विभिन्न भागमा चक्कु प्रहार गरें । त्यसो गर्दा मैले आफ्नो रिस थाम्न सक्ने अवस्थामा थिइन । रितु मर्‍यो बाँच्यो मलाई थाहा भएन । रितु महासेठलाई मार्ने उद्देश्यले छुरी हानेको नभई प्रेममा धोखा दिएको कारणले तर्साउन मात्र छुरी प्रहार गरेको हुँ भनी उल्लेख गरेको देखिन्छ । निज प्रतिवादीले तर्साउने उद्देश्यले गरेको कार्यले मान्छे मर्न गई भवितव्य पर्न गएको भनी जिकिर लिएपनि चक्कुजस्तो धारिलो हतियार लिई बाटो ढुकी मृतकलाई पटकपटक प्रहार गर्ने कार्य भएको देखिएको, मृतकसँग भएको प्रेम सम्बन्धमा मृतकले धोखा दिएको कारण मृतक बस्ने होस्टल नजिकै प्रतिवादी स्वयम् आई घटना घटाएको देखिएको र वारदात घटाएपछि प्रतिवादी भागी लुकी छिपी बसेको देखिएकोले प्रतिवादीको

मृतकलाई मार्ने मनसाय नै थिएन, भवितव्य पर्न गयो भन्ने जिकिर युक्तिसङ्गत नदेखिने।

मृतक रितु महासेठको मृत्यु प्रतिवादीले नै प्रहार गरेको चोटबाट भएको भन्ने कुरामा विवाद नदेखिएको, प्रतिवादीले प्रेममा धोका भएको कारण बाटो ढुकी चक्कुजस्तो घातक हतियार मृतकको संवेदनशील अङ्गमा पटकपटक प्रहार गरेको देखिएको, मृतकको लास जाँच प्रकृति मुचुल्कामा उल्लिखित घाउ र शव परीक्षण प्रतिवेदनले समेत प्रतिवादीले आफ्नो बयानमा उल्लेख गरेअनुसार मृतकलाई पटकपटक चक्कु प्रहार गरेको भन्ने कुरालाई पुष्टि गरेको देखिएको र प्रत्यक्षदर्शी कन्चन साहसमेतले अदालतमा आई बकपत्र गरिदिएको देखिएबाट प्रतिवादीको अनुसन्धानको क्रममा भएको बयान बेहोरा पुष्टि भएको देखिँदा यी पुनरावेदक प्रतिवादी विमलेशप्रसाद यादवलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. विपरीत १३(१) नं. बमोजिमको कसुरमा सोही १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याएको सुरु अदालतको फैसला सदर गर्ने गरेको उच्च अदालत, पाटनको फैसलामा अन्यथा भएको नदेखिने।

तसर्थ माथि विवेचित आधार र कारणबाट यी पुनरावेदक प्रतिवादी विमलेशप्रसाद यादवलाई अभियोग दाबीबमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्ने ठहर गरेको उच्च अदालत, पाटनको मिति २०७३।१।१८ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: टेकनाथ गौतम

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २३ गते रोज १ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री मीरा खड्का**, ०७४-RC-००३१, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. सोवितबहादुर वि.क.

जाहेरवालाले प्रतिवादी सुनिल भन्ने सोवितबहादुर वि.क.समेतको विरुद्ध किटानी जाहेरी दिएको देखिन्छ। सहप्रतिवादीहरूको बयानमा उल्लिखित स्थानमा जानकी परियारको लास फेला परेको र लाससँगै मैलो लागेको पटुका, कम्बल, खैरो रडको

पछ्यौरालगायतका कपडासमेत फेला परेको देखिन्छ। यसरी मिसिल संलग्न प्रमाणहरूको साथै सहप्रतिवादी डम्बर भन्ने प्रेमबहादुर नेपाली र रामबहादुर नेपालीको बयानसमेतबाट सुनिल भन्ने सोवितबहादुर वि.क.ले सेतो तारले जानकी परियारको घाँटीमा कसी मारेको र निज प्रतिवादीको कर्तव्यबाट नै जानकी परियारको मृत्यु भएको भन्ने देखियो। अतः सहप्रतिवादीहरूको बयान र मिसिल संलग्न अन्य प्रमाणसमेतबाट जानकी परियारको हत्या गर्ने कार्यमा मुख्य भूमिका निज प्रतिवादी सुनिल भन्ने सोवितबहादुर वि.क.ले रहेको देखिँदा निज प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीबमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्ने गरेको फैसला अन्यथा भएको देखिएन। तसर्थ, विवेचित आधार एवम् कारणबाट उच्च अदालत, पोखराबाट मिति २०७४।३।२५ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: टेकनाथ गौतम

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २३ गते रोज १ शुभम्।

६

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी.**, ०६८-CI-०८५०, दा.खा. नामसारी दर्ता, प्रकाश विष्टसमेत वि. सत्यकुमार बाला श्रेष्ठसमेत

गुठी संस्थानका प्रशासक वा प्रशासकको काम गर्ने प्रशासकीय प्रमुखले गुठी संस्थान ऐन, २०३३ को दफा ३९(१) बमोजिम गरेको निर्णयउपर प्रस्तुत पुनरावेदन परेको भन्ने पनि देखिँदैन। त्यसैले पुनरावेदकतर्फबाट उपस्थित विद्वान् वरिष्ठ अधिवक्ताले न्याय प्रशासन ऐन, २०४८ को दफा ८(१) मा प्रयुक्त “आफ्नो प्रादेशिक क्षेत्राधिकारभित्र रहेका अन्य कुनै निकाय वा अधिकारीले मुद्दा मामिलामा गरेको सुरु फैसला वा अन्तरिम आदेशउपर पुनरावेदन सुन्ने अधिकार पुनरावेदन अदालतलाई हुनेछ” भन्ने शब्दावलीले स्पष्ट रूपमा गुठी संस्थानले गरेको हरेक निर्णयमा पुनरावेदन अदालतमा पुनरावेदन लाग्छ भनी गर्नुभएको बहस जिकिरसँग सहमत हुन सकिएन। तसर्थ गुठी संस्थान

ऐन, २०३३ को दफा ३९(१) बमोजिमको निर्णयउपर मात्र पुनरावेदन अदालतमा पुनरावेदन लाग्ने व्यवस्था गरेको देखिएकोले गुठी संस्थानको प्रस्तुत निर्णयउपर पुनरावेदन लाग्न सक्ने नदेखिएको हुँदा पुनरावेदन पत्र खारेज हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पाटनले गरेको फैसला अन्यथा देखिएन । अतः पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०६८।५।१८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत : जयराम श्रेष्ठ

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७४ साल पुस २४ गते रोज २ शुभम् ।

- यसै लगाउको ०६८-WO-०६३८, उत्प्रेषण, प्रकाश विष्टसमेत वि. गुठी संस्थान शाखा कार्यालय, भक्तपुरसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

७

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७०-WO-०६५६, उत्प्रेषण, कान्छा मकैसमेत वि. पुनरावेदन अदालत, पाटनसमेत**

म्याद नाघेको वा बेरीत भएको भन्ने कुरा कार्यविधिसँग सम्बन्धित विषय हुन् । मानो छुट्टिएको मिति निर्धारण गर्ने कुराले मुद्दामा संलग्न पक्षहरूको सम्पत्तिसम्बन्धी विषयमा प्रत्यक्ष असर पार्दछ । त्यसैले अ.बं. १७ नं. बमोजिमको अधिकार प्रयोग गरी आदेश गर्दा मातहत अदालतमा विचाराधीन रहेको सारवान् कुरामा असर पर्ने गरी आदेश गर्न नमिल्ने ।

तसर्थ, अंश मुद्दामा भक्तपुर जिल्ला अदालतबाट फिरादपत्र परेको अधिल्लो दिनलाई मानो छुट्टिएको मिति कायम गरी भएको आदेशलाई सो अंश मुद्दाको निर्णय प्रभावित हुने गरी परिवर्तन गरी मिति २०५४।५।२० लाई मानो छुट्टिएको मिति कायम गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०७०।१।१८ मा भएको आदेश मुलुकी ऐन, अ.बं. १७ नं. मा भएको कानूनी व्यवस्था र यस अदालतबाट प्रतिपादित उल्लिखित सिद्धान्तसमेतको प्रतिकूल भएको र पुनरावेदन अदालतको उक्त आदेशबाट निवेदकको सम्पत्तिसम्बन्धी हकमा प्रत्यक्ष असर पर्ने

देखिएकोले पुनरावेदन अदालत, पाटनको उक्त मिति २०७०।१।१८ को आदेश उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । साथै उक्त आदेश कार्यान्वयन नगर्नु नगराउनु र उक्त अंश मुद्दामा जे जो प्रमाण बुझ्नुपर्छ बुझी कानूनबमोजिम कारबाही किनारा गर्नु भनी विपक्षी भक्तपुर जिल्ला अदालतका नाउँमा परमादेश जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: आनन्दराज पन्त

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल वैशाख ३ गते रोज २ शुभम् ।

- यसै लगाउको ०७३-WO-०८०१, उत्प्रेषण, विश्वनाथ साह वि. उच्च अदालत, जनकपुरसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

८

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७३-WO-१३०४, उत्प्रेषण, दुलियादेवी यादव वि. उच्च अदालत, विराटनगरसमेत**

मुलुकी ऐन, लेनदेन व्यवहारको ८ नं. ले घरको मुख्य भई कामकाज गर्ने व्यक्तिले गरेको व्यवहार वा एकाघरका उमेर पुगेका व्यक्तिले गरेकोमा मुख्य जानकारको पनि सहछाप वा लिखत भएको व्यवहार मात्र गोश्वारा धनबाट चल्छ भन्ने कानूनी व्यवस्था देखिन्छ । उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाअनुसार विपक्षी ताराचन्द्र यादवले विपक्षी नमीता निरौलाबाट लिएको ऋण घरको मुख्य भई कामकाज गर्नेको सहमति मन्जुरीबाट लिएको नदेखिएकोले त्यस्तो ऋण सगोलको सम्पत्तिबाट भराई लिने पाउने अवस्था नरहने ।

विपक्षी ताराचन्द्र यादव सगोलको अंशियार रहेको र निजले अंश लिई पाई नसकेको भन्ने तथ्य स्थापित छ । मुलुकी ऐन, लेनदेन व्यवहारको ९ नं. अनुसार एकाघरका उमेर पुगेका कुनै व्यक्तिले कुनै व्यवहार गरेको रहेछ भने निजले आफूले पाउने धनमा निजको हक नपुगेसम्म साहुले सो धनमा समाउन पाउँदैन । निजले आफैँले आर्जन गरेको वा आफूखुसी गर्न पाउने सम्पत्तिबाट मात्र लिन पाउने कानूनी व्यवस्था देखिन्छ । उल्लिखित लेनदेन मुद्दा जिल्ला अदालतबाट

फैसला भई हाल उच्च अदालतमा विचाराधीन रहेको भन्ने विपक्षी ताराचन्द्र यादवको लिखित जवाफबाट देखिन्छ । विपक्षी नमीता निरौलाले दिएको उल्लिखित लेनदेन मुद्दामा अन्तिम फैसला भएपश्चात् बिगो भरिभराउको क्रममा उल्लिखित जग्गा सगोलको हो होइन ? दर्तावालाको आफूखुसी गर्न पाउने सम्पत्ति हो होइन ? सगोलको सम्पत्ति भए ऋणी ताराचन्द्र यादवको के कति हिस्सा पुग्ने हो ? भन्ने कुरा निवेदनलगायत सम्बन्धित दर्तावालालाई बुझी प्रमाणसमेत बुझी फैसला कार्यान्वयनको क्रममा नै यकिन गरिने विषय हो । रिट क्षेत्राधिकारबाट उल्लिखित कुरा बुझी हेरी निर्णय गर्न नमिल्ने ।

तसर्थ फैसला कार्यान्वयनको क्रममा जिल्ला अदालतबाट निवेदन दाबीका जग्गाका सम्बन्धमा निवेदकलगायतका दर्तावालालाई बुझी ऋणीको हक पुग्नेसम्मको जायजथाबाट फैसलानुसारको बिगो भरिभराउको कारबाही गरी अन्य जेथा फुकुवा हुने नै हुँदा निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न परेन । प्रस्तुत रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: आनन्दराज पन्त

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल वैशाख ३ गते रोज २ शुभम् ।

९

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७४-CR-०२६६, कर्तव्य ज्यान, मकसुधन चौधरी वि. नेपाल सरकार**

प्रतिवादीसमेतको उपर किटानी जाहेरी परेको, प्रतिवादीमध्येकै गणेशी मण्डलले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष गरेको बयानमा यी प्रतिवादीसमेतले मृतकलाई कुटपिट गर्दा मृत्यु हुन गएको भनी उल्लेख गरेका, घटना विवरण कागज गर्ने हेमन्त झा, सुनिल ठाकुर, अशोक मिश्रसमेतका व्यक्तिहरूले गरी दिएको कागजमा यी प्रतिवादी मकसुधन चौधरीसमेत भई मृतक सञ्जयकुमार चौधरीलाई कर्तव्य गरी मारेको थाहा पाएको हो भनी लेखाई दिएको देखिन्छ । बुझिएका व्यक्तिहरू

हेमन्त झा, बच्चाकान्त झा, विश्वनाथ झा, अशोक मिश्र र जाहेरवाला मनोजकुमार चौधरीसमेतका व्यक्तिहरूले प्रतिवादीहरू गणेशी मण्डल, मकसुधन चौधरी, लालु दास र भाग्यनारायण साहसमेतले मृतक सञ्जयकुमार चौधरीको कर्तव्य गरी मारी ज्यान लिएको थाहा पाएको भनी अदालतसमक्ष बकपत्र गरी दिएको देखिन्छ । मिसिल संलग्न शव परीक्षण प्रतिवेदनमा The cause of death is due to Head Injury भनी उल्लेख भएकोसमेतका आधार प्रमाणबाट यी प्रतिवादी मकसुधन चौधरीले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको महलको १३ नं. को देहाय दफा ३ को कसुर गरेको पुष्टि हुन आएको सोही महलको १३ नं. को देहाय ३ बमोजिम जन्मकैद हुने ठहर्‍याई भएको सुरु फैसलालाई सदर गर्ने गरेको उच्च अदालत, जनकपुरको फैसलामा अन्यथा भएको नदेखिने ।

अतः विवेचित आधार र कारणबाट उच्च अदालत, जनकपुरको मिति २०७४।२।३ को फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर पुग्न सक्दैन । अब यी प्रतिवादीलाई ठहरेबमोजिम सजाय गर्दा चर्को पर्ने भनी उच्च अदालतले अ.ब. १८८ नं. बमोजिम व्यक्त गरेको रायको सम्बन्धमा विचार गर्दा यी प्रतिवादी मकसुधन चौधरीले मृतकलाई मारुपर्नेसम्मको रिसइवी, लेनदेन, वादविवाद केही भएको नदेखिएको, रातको समयमा चोर चोर भनी गुहार गर्दा धेरै मानिस जम्मा भई लखेट्दै लैजाने क्रममा लात, मुक्का, लाठीसमेतले कुटपिट गर्दा मृतकको मृत्यु हुन गएको देखिएको साथै पहिले कुनै कसुर अपराधमा यी प्रतिवादी संलग्न भएको भन्नेसमेत नदेखिँदा ऐ. महलको १३ नं. को देहाय दफा ३ बमोजिम जन्मकैदको सजाय गर्दा चर्को पर्ने देखिँदा अ.ब. १८८ नं. बमोजिम ६ वर्ष कैद गर्दा मनासिब हुँदा निज प्रतिवादी मकसुधन चौधरीलाई ६ वर्ष कैद हुने भनी व्यक्त गरेको उच्च अदालत, जनकपुरको रायसमेत सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: टेकनाथ गौतम

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल जेठ २७ गते रोज १ शुभम् ।

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७४-CR-०३३२, कर्तव्य ज्यान, मैया तामाङ वि. नेपाल सरकार**

प्रतिवादीले अदालतसमक्ष बयान गर्दा खुड्ते भन्ने लाक्पा तामाङको अवैध शारीरिक सम्बन्धबाट गर्भ रहन गएको भनी स्वीकार गरेको देखिन्छ। साथै नवजात शिशुको मृत अवस्थामा जन्म भएको भनी बयान गरे तापनि सोही बयानको स.ज. ८ मा मैले जन्माएको शिशु जन्मँदा थोरै ढुकढुके रहेको भनी उल्लेख गरेको देखिएबाट मृतक शिशु जिउँदै जन्मिएको भन्ने देखिन आउँछ। यसरी निज प्रतिवादीको अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष भएको साबिती बयानलाई शव परीक्षण प्रतिवेदनले पुष्टि गरेको देखिएको छ। निजले अदालतसमक्ष आरोपित कसुरमा इन्कार रही बयान गरे तापनि सोलाई पुष्टि गर्ने कुनै पनि प्रमाण कागजातबाट पुष्टि गर्न सकेको देखिएन। यस अवस्थामा अदालतसमक्षको इन्कारी बयान मात्र प्रतिवादीको आरोपित कसुरबाट उन्मुक्तिको आधार हुन सक्दैन। निज प्रतिवादीको अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष भएको बयानलाई शव परीक्षण प्रतिवेदनले समर्थित गरेको अवस्थामा अब उक्त बयान प्रमाणमा ग्राह्य छैन भन्ने प्रतिवादीको पुनरावेदन जिकिर न्यायसङ्गत नदेखिने।

तसर्थ विवेचित तथ्य, आधार र कारणहरूबाट समेत प्रतिवादी मैया तामाङले अभियोग मागदाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. र १३ (३) नं. को कसुर गरेको ठहर्‍याई निजलाई ऐ. महलको १३ (३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर्‍याएको सुरु फैसलालाई सदर गर्ने उच्च अदालत, विराटनगर, धनकुटा इजलासको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

प्रतिवादी मैया तामाङ एकल महिला रहेकी, निजको घरमा ६ जना छोराछोरी रहेका, घरमा आएका पाहुना प्रतिवादी खुड्ते भन्ने लाक्पा तामाङसँगको शारीरिक सम्पर्कबाट अवैध गर्भ रहन गई सामाजिक लोकलाजबाट बचनको लागि जन्मिएको नवजात शिशुको कर्तव्य गरी मारी फाली दिएको देखिन आएकोले यी

प्रतिवादीलाई सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्दा चर्को पर्न जाने भएकोले मुलुकी ऐन, अदालती बन्दोबस्तको १८८ नं. बमोजिम ३ वर्षको कैद हुने।

इजलास अधिकृत: टेकनाथ गौतम

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल जेठ २७ गते रोज १ शुभम्।

**मा.न्या.श्री केदारप्रसाद चालिसे र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७४-RC-००४८, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. कमला वि.क.**

प्रतिवादीले कर्तव्य गरेको कुरालाई अस्वीकार गरे पनि अवैध गर्भ रहन गएको कुरामा सहमति जनाएको र घरमै व्यथाले चापेकोमा घरमा बच्चा जन्माउने काम नगरी झाडीमा बच्चा जन्माउन गएको भन्ने देखिन्छ। अवैध गर्भधारण गरेको कारणबाट जन्मिने बच्चालाई फ्याँक्ने मनसायबाट व्यथाले घरमै चापेपछि घरबाट हिँडी उक्त स्थानमा पुगीबच्चाजन्माएको र ओडारमा फ्याँकेको देखिन आउँछ। मरोस् भन्ने मनसाय नभए घरमै व्यथा लागेकी निज प्रतिवादीले त्यसरी अन्यत्र गई बच्चालाई ओडारमा फ्याँक्नु पर्ने थिएन। यसप्रकार अवैध गर्भधारणबाट निज प्रतिवादीले बच्चा जन्माई ओडारमा फालेको हुँदा नवजात शिशुको हत्या गरेको होइन भन्ने निज प्रतिवादीको भनाइमा विश्वास गर्न सकिने अवस्था भएन। सो भएबाट निज प्रतिवादीउपरको अभियोग दाबी पुष्टि भएको देखिँदा निज प्रतिवादीलाई अभियोग दाबीअनुरूप सजाय गर्ने गरेको सुरुको फैसला सदर गरेको उच्च अदालत, सुर्खेतको फैसलामा अन्यथा भएको देखिएन। तसर्थ उल्लिखित प्रमाण कागजातका आधारमा उच्च अदालत, सुर्खेतको मिति २०७४।५।२८ मा भएको फैसला मिलेकै देखिने।

प्रतिवादीलाई अभियोग मागदाबीअनुरूप सजाय हुने ठहर भएपनि निज प्रतिवादीले अवैध गर्भधारण गरेको देखिएको, अवैध गर्भबाट जन्मेको बच्चाबारे परिवारमा समेत जानकारी नहोस् भन्ने उद्देश्यले एकान्त ठाउँमा खोल्सामा गई बच्चा जन्माएको र त्यसरी अवैध सम्बन्धबाट रहन गएको गर्भबाट जन्मेको

जातकलाई लोकलाजबाट बच्ने उद्देश्यले बच्चा जन्माउने व्यथा लागेपछि ओडारमा फालेको अवस्था हुँदा निज प्रतिवादीलाई ऐनबमोजिम सजाय गर्दा चर्को पर्ने देखिँदा अ.बं. १८८ नं. बमोजिम ५ वर्ष कैद हुने ।

इजलास अधिकृत: टेकनाथ गौतम

कम्प्युटर: प्रेमबहादुर थापा

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २४ गते रोज २ शुभम् ।

इजलास नं. ९

१

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७३-WO-०३८६, उत्प्रेषण / परमादेश, मैया श्रेष्ठ वि. भूमिसुधार कार्यालय, काठमाडौंसमेत**

काठमाडौं जिल्ला डाँछी गाउँ विकास समिति वडा नं. ८(ख) कि.नं. ३९ बाट कित्ताकाट गरी कि.नं. ८७८, कि.नं. ८७९ र कि.नं. ८८० भएकोमा कि.नं. ८७८ कित्ता जग्गा राजेन्द्र श्रेष्ठ र कान्छी श्रेष्ठले मिति २०७२।१०।१९ को राजीनामाबाट प्राप्त गरेको देखिन्छ । कि.नं. ८७९ जग्गा काजिबाबुले तथा कि.नं. ८८० को जग्गा जमुना श्रेष्ठले मिति २०६९।६।१४ मा अंशबन्डा लिखत गरी लिएको देखिएको र उल्लिखित जग्गा राजीनामा तथा बन्डापत्र गरी लिँदा उक्त जग्गाको मोही रत्नबहादुर नै स्वीकार गरी जग्गा लिएको देखिन्छ । हाल उल्लिखित व्यक्तिहरू उपर्युक्त कित्ता जग्गाहरूको जग्गाधनी भई साबिक जग्गाधनी रंगबहादुर श्रेष्ठले दिएको निवेदनबमोजिम मोही लगत कट्टा गरिपाउँ भनी मिति २०७३।५।१६ मा भूमिसुधार कार्यालय, काठमाडौंमा निवेदन दिएबाटै मिति २०७३।५।१६ भन्दा अगाडि उक्त कित्ता जग्गाहरूमा कायम रहेको मोहीको लगत साधिकार निकायले विधिवत् निर्णय गरी कट्टा गरेको नदेखिँदा उल्लिखित कित्ता जग्गाहरूको मोही रत्नबहादुर श्रेष्ठ नरहेको भनी अर्थ गर्न नमिल्ने ।

भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को चौथो संशोधनले मोहीलाई मोहियानी हकबापत आधा जग्गा नै प्राप्त गर्न

सक्ने गरी विशेष संरक्षणसमेत गरेको देखिन्छ । मोही र जग्गाधनीबीच मोहियानी लागेको जग्गा कुनै एकको कायम हुनेगरी कारबाही चलाएको अवस्थामा र जग्गाधनी तथा मोहीबीच आपसमा मन्जुरी नभई जग्गा आधाआधा बाँडफाँड गरेको अवस्थामा बाहेक अरु अवस्थामा मोहीको लगत कट्टा गर्न मिल्ने नदेखिने ।

भूमिसम्बन्धी ऐनको चौथो संशोधनपश्चात् जग्गाहरू प्रत्यर्थी जग्गाधनीहरूको हुने गरी मोहीले मन्जुरी दिएको नदेखिएको तथा जग्गाधनी र मोहीबीच मन्जुरी हुन नसकी जग्गा आधाआधा बाँडफाँड गरी कारबाही चलाई बाँडफाँड गरेकोसमेत नदेखिएको अवस्थामा मोही लगत कट्टा गर्ने भूमिसुधार कार्यालय, काठमाडौंको मिति २०७३।५।२४ को निर्णय भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को चौथो संशोधनको दफा २६क, २६ग, २६घ, को कानूनी व्यवस्थाको परिप्रेक्ष्यमा कानूनसम्मत मान्न नमिल्ने ।

अतः उक्त मोही लगत कट्टा गर्ने भूमिसुधार कार्यालय, काठमाडौंको मिति २०७३।५।२४ को निर्णय तथा सो निर्णयको आधारमा उक्त मितिकै च.नं. ७२० को मालपोत कार्यालय, साँखुमा पठाएको पत्रसमेत उत्प्रेषणको आदेशले बदर हुने ।

इजलास अधिकृत: तारादेवी महर्जन

कम्प्युटर: चन्द्रा तिमल्सिना

इति संवत् २०७४ साल भदौ २५ गते रोज १ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री सारदाप्रसाद घिमिरे र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी, ०६७-CR-१०१६, जिउ मास्ने बेच्ने, सुरज राई वि. नेपाल सरकार**

पुनरावेदक सुरज राईले पीडितलाई होटलमा कोठासम्म मिलाई दिएको भन्ने देखिन्छ । पीडितलाई जिउ मास्ने बेच्ने कार्य गराउने कार्यमा संलग्नता रहेको भन्ने कुरा कहींकतैबाट पुष्टि प्रमाणित हुन आएको देखिँदैन । होटलमा बस्नको लागि कोठा खोज्दै गरेको अवस्थामा कोठा खोज्नेलाई कोठा मिलाउने व्यवस्था गरिदिएकोसम्म देखिन्छ । तर निजले महिला बेचबिखन गराउने के कस्तो कार्य गरेका हुन् । यो यस्तो कार्य गरेका हुन् भन्ने प्रस्ट किटानी आधार केही देखिँदैन । तर



केटा र केटी साथै आएको अवस्थामा राम्रोसँग सूचना लिइसकेपछि आउने ग्राहकको बारेमा यथार्थता बुझी मात्र कोठा बुक गरी बस्न दिनुपर्नेमा सबै बुझीसकेपछि सामान्य जानकारी हुँदाहुँदै पनि उनीहरू लग्ने स्वास्नी नभएको अवस्थामा पनि त्यसरी होटलमा बस्न दिई अनुचित सम्बन्ध स्थापित गर्न सक्ने वातावरण मिलाइदिएको देखिन्छ। जित् मास्ने बेच्ने नियन्त्रण ऐन, २०४३ को दफा ४(ग) को कानूनी व्यवस्थालाई हेर्दा “कुनै स्वास्नी मानिसलाई ललाई फकाई वा कुनै प्रलोभन दिई वा झुक्याई वा डरत्रास वा दबाबमा पारी वा अन्य कुनै तरिकाले वेश्यावृत्तिमा लगाउनु” भन्ने देखिन्छ। जसअनुसार लग्ने स्वास्नी नभएको अवस्थामा पनि त्यसरी अनैतिक सम्बन्ध कायम राख्ने गरी व्यवस्था मिलाई दिएबाट उक्त ऐनको दफा ४(ग) को वाक्यांशले अन्य कुनै तरिकाले वेश्यावृत्तिमा लगाउने कार्यमा सहयोगी भूमिका खेलेको देखिएबाट यी प्रतिवादीले जित् मास्ने बेच्ने कार्य (नियन्त्रण) ऐन, २०४३ को दफा ४(ग) को कसुर गरेको ठहर गरी भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न मिल्ने नदेखिने।

प्रतिवादीले पीडितलाई वेश्यावृत्तिमा लगाउने कार्य गरेको हो भनी मिसिलबाट नदेखिई रहेको र निजले होटलको मैनेजरको नाताले अनैतिक सम्बन्ध स्थापित गर्न सहयोग पुग्ने गरी होटलको कोठा नं. ५६ बुक गरी मिलाई दिएको कार्यसम्मको कसुरमा संलग्नता रहेको देखिन्छ। यसरी कुनै स्वास्नी मानिसलाई ललाई फकाई वा प्रलोभन दिई, झुक्याई वा डर त्रासमा पारी वेश्यावृत्तिमा लगाएको नदेखिइरहेको अवस्थामा जित् मास्ने बेच्ने कार्य (नियन्त्रण) ऐन, २०४३ को दफा ८(४) बमोजिमको कैदको उपल्लो हद ५ वर्ष कैद गर्ने गरेको फैसला निजको कसुरको मात्राभन्दा बढी भई चर्को पर्न जाने देखिँदा सजायको हकमा सम्म पुनरावेदन अदालत, नेपालगञ्जको मिति २०५८।१२।७ मा भएको फैसला केही उल्टी भई निज प्रतिवादी सुरज राईलाई ऐ. ऐनको दफा ८(४) बमोजिम ३ (तिन) महिना कैद हुने।

इजलास अधिकृत: जगदीशप्रसाद भट्ट  
इति संवत् २०७४ साल माघ २२ गते रोज २ शुभम्।

**मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा**, ०७२-CI-१३४९, परमादेश, कृष्णानन्द झा वि.

स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मन्त्रालय, रामशाहपथसमेत

निवेदकलाई दिएको स्तरवृद्धिको पत्रमा नै निज जुन तहबाट स्तरवृद्धि भएको हो सो तहकै काम गर्नुपर्ने गरी स्तरवृद्धि गरिएको पत्रमा उल्लेख भएबाट पनि पुनरावेदकको माथिल्लो तहमा बढुवा भएको नभई दफा ९ बमोजिम स्तरवृद्धि भएको प्रस्ट हुन आउने।

पदस्थापन नभएसम्म जुन तहमा स्तरवृद्धि भएको हो सोही तहमा रही काम गर्नुपर्ने र सोबाहेक अन्य कुनै पनि परिकल्पना कानूनले गरेको अवस्था नदेखिने।

पुनरावेदकलाई दिइएको स्तरवृद्धि र सामान्य अवस्थामा हुने बढुवालाई एकै प्रकृतिबाट हेर्नुपर्ने कानूनी व्यवस्था देखिँदैन। यस्तो अवस्थामा माथिल्लो तहमा स्तरवृद्धि भएको कर्मचारीले जुन तहबाट स्तरवृद्धि भएको हो सोही तहमा काम गर्नुपर्ने प्रावधान रहे भएबाट माथिल्लो तहमा पदनाम नदिएबाट निवेदकको प्रदत्त हकमा आघात पुऱ्याएको भन्न नमिल्ने।

नेपाल स्वास्थ्य सेवा नियमावली, २०५५ नियम ७ को अनुसूची-६ को हेल्थ इन्स्पेक्सन समूहको क्रमसंख्या २३ मा व्यवस्था भएबमोजिम स्वास्थ्य निरीक्षक पदमा पदनामको लागि ऐ. नियमावलीको नियम १५ को उपनियम १ सँग सम्बन्धित अनुसूचीमा हेल्थ इन्स्पेक्सन समूहको लागि चाहिने न्यूनतम योग्यता मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाबाट जनस्वास्थ्य विषयमा स्नातकोपाधी प्राप्त हुनुपर्ने योग्यता तोकिएको पाइन्छ। उक्त योग्यता यी रिट निवेदकको रहेको भनी निजले सप्रमाण भन्न सकेकोसमेत पाइँदैन। तसर्थ, शैक्षिक योग्यता, अनुभव तथा तालिमको आधारमा समायोजनका लागि छुट्टयाइएको पदमा छनौट भएमा पदस्थापन हुने र नेपाल स्वास्थ्य सेवा ऐन, २०५३ दफा १७(३) बमोजिम स्तरवृद्धि वा तह मिलान भएको

आधारमा पदनाम प्राप्त गरेको कर्मचारीलाई समायोजन गरी पदस्थापन गर्न सक्ने नै हुँदा पुनरावेदकको कानून प्रदत्त हक हनन् भएको नदेखिने।

तसर्थ माथि विवेचित आधार कारणबाट निवेदन मागबमोजिम परमादेशको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्था नदेखिएकोले निवेदनपत्र खारेज हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०७२।२।२० मा भएको आदेश मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : नन्दकिशोर प्रसाद यादव

कम्प्युटर: उत्तरमान राई

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर १८ गते रोज २ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा**, ०७२-८१-१५०२ र ०७२-८१-१६०१, राजीनामा लिखत दर्ता बदर दर्ता कायम, *कञ्चन भगत वि. रीता गुप्ता रौनियार र रन्जितकुमार गुप्ता वि. रीता रौनियार गुप्ता*

मुलुकी ऐन, अंशबन्डाको १९(१) नम्बरबमोजिम घरमूली प्रतिवादी रन्जित कुमार गुप्ताले व्यवहार चलाउनका लागि बिक्री गरेको जिकिर लिए तापनि के कुन व्यवहार चलाउनको लागि उक्त जग्गा बिक्री गरेको हो सो कुरा भन्नसमेत सकेको देखिँदैन भने निज प्रतिवादी रन्जितकुमार गुप्ताले कुनै प्रतिवाद नै नगरी सुरु म्यादै गुजारी बसेको सुरु मिसिलबाट देखिन्छ। आधाभन्दा बढी सम्पत्ति बिक्री गर्दा यी वादीको मन्जुरी लिएको अवस्था देखिँदैन। जहाँसम्म पुनरावेदक प्रतिवादी रन्जितकुमार गुप्ताले तायदाती फाँटवारीमा उल्लिखित घरजग्गाको मोल रु.२६ लाख कायम गरेको तथ्ययुक्त छैन भनी जिकिर लिए पनि अंश मुद्दामा तायदाती फाँटवारी वादीले पेस गरिसकेपछि यी पुनरावेदकका नाउँमा उजुर गर्ने म्याद जारी हुँदा कुनै किसिमको उजुर नगरी तायदाती फाँटवारी स्वीकार गरी बसेको अवस्थामा उक्त पुनरावेदन जिकिर स्वीकारयोग्य नदेखिने।

व्यवहार चलाउनका लागि सबै अंशियारको मन्जुरीले उक्त कि.नं.१८७ को जग्गा राजीनामा गरी

लिनुदिनु गरेको र आधाभन्दा बढी सम्पत्ति बाँकी रहेको भन्ने पुनरावेदन जिकिर भए तापनि प्रतिवादी रन्जितकुमार गुप्ताले वादीको समेत अंश हक लाग्ने विवादित कि.नं.१८७ को जग्गा वादी रीता रौनियार गुप्ताको मन्जुरी नलिई प्रतिवादी कञ्चन भगतलाई बिक्री गरेको देखिएको, प्रमाणको अंश मुद्दाको मिसिलबाट अंशियारहरूबीच बन्डा गर्न बाँकी जग्गाको मूल्य बिक्री गरेको जग्गाको मूल्यभन्दा कम देखिएको, व्यवहार चलाउनका लागि बिक्री गरेको भन्ने जिकिर पुष्टि हुन सकेको नदेखिँदा प्रतिवादीहरूबीच मिति २०६८।२।३० मा रजिष्ट्रेशन पारित गरी लिनु दिनु गरेको राजीनामाको लिखत कानूनसम्मत देखिन नआउने।

तसर्थ वादी प्रतिवादी रन्जितकुमार गुप्तासमेत गरी ४ अंशियार देखिएकोले ४ भागको १ भाग लिखत बदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, विराटनगरबाट मिति २०७१।१०।१४ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा प्रत्यर्थी झिकाउनु परेन।

इजलास अधिकृत: सुदिपकुमार भट्टराई

कम्प्युटर: उत्तरमान राई

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर १८ गते रोज २ शुभम्।

३

**मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा**, ०७०-८१-०७३७, अंश चलन, *खगेन्द्र घिमिरेसमेत वि. दिनेश घिमिरे*

कुनै अंशियारले कुनै सम्पत्ति सगोलको नभई निजी सम्पत्ति हो भन्ने दाबी लिँदैमा उक्त अंशियारको नाममा रहेको सम्पत्ति सगोलमा रहे भएको अवस्थामा अन्यथा नभएसम्म सगोलकै सम्पत्ति मान्नु पर्ने हुन आउँछ। विवादित सम्पत्ति निजी सम्पत्ति हो भन्ने कुनै ठोस वस्तुनिष्ठ आधार प्रमाणहरू पुनरावेदिका निर्मला घिमिरेले गुजार्न सकेको देखिँदैन। साथै पुनरावेदिकाले के कुन व्यवसाय गरी के कुन वा स्रोतबाट उक्त सम्पत्ति आर्जन गरेको हो भन्ने तथ्ययुक्त प्रमाणसमेत पेस भएको मिसिलबाट नदेखिने।

बाबुआमाले आर्जन गरेको सम्पत्तिलाई स्वआर्जन मानी त्यसमाथि सन्तानको हक नलाग्ने गरी

व्याख्या गर्ने हो भने पैतृक सम्पत्तिसम्बन्धी अवधारणा निरर्थक हुने र अंशबन्डासम्बन्धी नैसर्गिक अधिकारको व्यवस्था कमजोर हुन पुग्ने प्रस्ट आधारहरू तय हुन जाने।

मिति २०५९।७।८ मा पुनरावेदक खगेन्द्र र पुनरावेदकका छोरा मृदेशबीच भएको मिलापत्र व्यवहारमा प्रत्यर्थी वादी दिनेश घिमिरेको उपस्थिति र सहमति भए गरेको हो भन्ने वस्तुगत आधार पेससमेत भएको मिसिलबाट देखिँदैन। वस्तुनिष्ठ प्रमाणको अभावमा एकासगोलको कुनै अंशियारको नाममा रहेको तथा खरिद गरेका सम्पत्तिमा सबै अंशियारको समान हक लाग्ने अवस्था रहन्छ। उपर्युक्त मिलापत्र मृदेश घिमिरेको अंश छुट्याउने प्रयोजनको लागि भएकाले सो लिखतबाट विवादित जग्गा दाइजो पेवाको सम्पत्ति हो भनी पुष्टि गर्ने कानूनी आधार देखिँदैन। तसर्थ पुनरावेदिका निर्मला घिमिरेको नाउँमा कि.नं.४५,१५८ र १०५ को जग्गा स्त्री अंशधनको हो भनी बन्डा गर्नु नपर्ने हो भनी भन्न नमिल्ने।

अतः माथि विवेचित आधार प्रमाणबाट अंशियारहरूबीचको नातामा कुनै विवाद नदेखिएको, पुनरावेदिका निर्मला घिमिरेको नाउँमा रहेको जग्गा निजी हुँदा बन्डा नलाग्ने भन्ने सम्बन्धमा कुनै ठोस प्रमाण पुनरावेदिकाको तर्फबाट पेस हुन नआएबाट उक्त विवादित कि.नं.४५, १५८ र १०५ का जग्गाहरू सगोलको देखिएको हुँदा सो सम्पत्ति बन्डा नलाग्ने गरी भएको सुरु फैसला सो हदसम्म उल्टी हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, विराटनगरबाट मिति २०७०।५।२ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: सुदिपकुमार भट्टराई

कम्प्युटर : उत्तरमान राई

इति संवत् २०७४ साल माघ २ गते रोज ३ शुभम्।

४

मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७२-CI-०४५६, परमादेश, माधवेन्द्र विष्ट वि. गुडविल फाइनान्स लिमिटेड

पुनरावेदकले प्रत्यर्थी विपक्षी गुडविल फाइनान्स लिमिटेडका नाउँमा कि.नं. ९३४ र ९३६ का घरजग्गा दृष्टिबन्धक लिखत पारित गरी रु.२४,००,०००।- (चौबीस लाख रुपैयाँ) कर्जा लिई लेनदेन कारोबार भएकोमा निवेदकहरूले गुडविल फाइनान्समा दृष्टिबन्धक राखेको उल्लिखित कि.नं. का घरजग्गा पुनः किताकाट भई कि.न. ९८७, कि.न. ९८८, कि.न. ९८९ र ९९० कायम भएको र सो जग्गाहरू कर्जा प्रयोजनका लागि रोक्का रहेको मिसिलबाट देखिन आउँछ। यसै कर्जा लेनदेन कारोबारको विषयमा यिनै पुनरावेदक शुशिला विष्ट वादी र प्रत्यर्थी गुडविल फाइनान्स लिमिटेड प्रतिवादी भई दे.नं. ०७१-CP-१७९३ को हिसाब गराई पाउँ भन्ने मुद्दा काठमाडौं जिल्ला अदालतमा दर्ता भएको मिसिलबाट देखिन आउँछ। प्रस्तुत रिट निवेदनमा विपक्षीसँगको लेनदेन कारोबारमा के कति साँवा ब्याज भएको छ सो हरहिसाब गरी विवरणको जानकारी रिट निवेदकलाई दिनु भनी परमादेशको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने मागदाबी गरेको देखिन्छ भने यिनै रिट निवेदकले विपक्षी फाइनान्सउपर यही विषयमा हरहिसाब गराई पाउँ भनी सुरु काठमाडौं जिल्ला अदालतमा दायर गरेको मुद्दा अन्तिम किनारा हुँदाका बखत सो मुद्दाबाट नै असाधारण अधिकार क्षेत्रअन्तर्गत प्रस्तुत रिट निवेदनमा रिट निवेदकले माग गरेको उपचार प्राप्त गर्न सक्ने देखिन आउने।

तसर्थ यिनै निवेदकसमेत वादी र प्रत्यर्थी गुडविल फाइनान्स लिमिटेडबीच हरहिसाब गराई पाउँ भनी काठमाडौं जिल्ला अदालतमा मुद्दा दायर रहेको देखिई सो मुद्दाबाटै निवेदकले तिर्नुपर्ने साँवा ब्याजको जानकारी प्राप्त गर्न सक्ने नै देखिँदा परमादेशको आदेश जारी गरिपाउँ भन्ने निवेदन खारेज हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पाटनले मिति २०७१।१।२७ मा गरेको आदेश मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत : शिवप्रसाद पराजुली

कम्प्युटर: उत्तरमान राई

इति संवत् २०७४ साल पुस १३ गते रोज ५ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत**, ०७३-CI-१२०९ र ०७३-CI-१३१२, उत्प्रेषण / परमादेश, नविन राज सिंह वि. गुरुप्रसाद दाहाल र अनुपकुमार उपाध्याय वि. गुरुप्रसाद दाहाल

विद्युत् ऐन, २०४९ को दफा ४(२) मा उल्लेख भएको निर्धारित अवधिभित्र निवेदकको दरखास्त रद्द गर्ने निर्णय गरेको नदेखिएको र निवेदकको निवेदनउपर समुच्चा मूल्याङ्कन गरी विद्यमान ऐन, नियम र निर्देशिकालाई समेत आधारमानी निवेदकले विद्युत् सर्वेक्षण अनुमतिपत्र पाउन दिएको दरखास्तउपर कारबाही गरी निर्णयमा पुग्नु पर्नेमा विपक्षीहरूले सोअनुरूपको प्रक्रिया नअपनाई निवेदकको दरखास्त रद्द गर्ने गरी गरेको निर्णयलाई कानूनअनुरूपको संज्ञा दिन मिल्ने नदेखिने।

अतः उपर्युक्त आधार तथा कारणहरू समेतबाट निवेदक कम्पनीले माथिल्लो माया खोला जलविद्युत् आयोजनाको विद्युत् उत्पादन सर्वेक्षण अनुमतिपत्रको लागि दिएको दरखास्त रद्द गर्ने गरी विपक्षी विद्युत् विभागबाट भएको मिति २०७१।१०।२८ को निर्णय उत्प्रेषणको आदेशले बदर गरी विद्युत् सर्वेक्षण अनुमतिपत्र पाउँ भनी निवेदकले दिएको दरखास्तउपर आवश्यक निर्णय गर्नु भनी विपक्षीहरूको नाउँमा परमादेश जारी हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, पाटनको मिति २०७३।४।१२ को आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः हरिकृष्ण श्रेष्ठ

कम्प्युटरः उत्तरमान राई

इति संवत् २०७४ साल पुस २१ गते रोज ६ शुभम्।

६

**मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी.**, ०७२-CI-०२१७ र ०७२-CI-१४८२, निषेधाज्ञा, प्रेमकुमारी गुरुडसमेत वि. रीता लामासमेत र लिलासरी राई वि. रीता लामासमेत

विपक्षी पुनरावेदकहरूले भने जस्तो रिट निवेदिकाउपर ठगीको जाहेरी दिई कारबाही चलाएको भए सोही ठगी मुद्दाबाट सो विषयको निरूपण हुने नै

हुन्छ। निवेदिकाहरूले आफू विरुद्ध विपक्षीहरूले दिएको ठगीको जाहेरीबमोजिमको कारबाहीबाट छुट वा उन्मुक्ति पाउने अवस्था भने रहँदैन। निषेधाज्ञाको आदेश कानूनी आधारविनाको कारबाहीको आशंकाको स्थितिमा जारी हुने हुँदा निवेदकको नागरिक अधिकार ऐनद्वारा प्रदत्त हक अधिकारमा विना कानूनी आधार आघात पर्न नहुने हुँदा त्यस्तो हक अधिकारमा आघात पर्न सक्ने स्थिति रहेकोसमेतको आधारमा फौजदारी अभियोगमा कानूनबमोजिम अनुसन्धान तहकिकातको कारबाही हुने अवस्थामा बाहेक अन्य देवानी विषयमा निवेदकलाई पक्राउने, थुन्ने, जबरजस्ती कागज गराउने जस्ता कार्य नगर्नु नगराउनु भनी निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने ठहर्‍याई भएको पुनरावेदन अदालत, पाटनको आदेशलाई अन्यथा रहेछ भनी मान्न नमिल्ने।

अतः पुनरावेदन अदालत, पाटनले फौजदारी अभियोगमा कानूनबमोजिम अनुसन्धान तहकिकातको कारबाही हुने अवस्थामा वा फौजदारी दायित्व व्यहोर्नु पर्ने कुरामा कानूनबमोजिमको कारबाही हुनेबाहेक अन्य देवानी विषयमा निवेदकलाई पक्राउने, थुन्ने तथा जबरजस्ती कागज गराउने जस्ता कार्य नगर्नु नगराउनु भन्ने मिति २०७१।१।१९ को आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृतः सुदिपकुमार भट्टराई

कम्प्युटरः उत्तरमान राई

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर १९ गते रोज ३ शुभम्।

७

**मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी.**, ०७३-CR-१५२७, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. शुभाष तामाडसमेत

प्रतिवादी शुभाष तामाड र मृतकबीचमा पुरानो रिसइवी झैझगडा रहेको भन्ने कुनै तथ्यबाट देखिँदैन। तत्काल उठेको आवेशात्मक रिसको कारणले ढुङ्गाले २।३ पटक हिकार्एको भनी प्रतिवादी आफैँले बयान दिएको देखिन्छ। वादी नेपाल सरकारले प्रतिवादीको मृतकलाई मार्ने यो यस्तो पूर्वरिसइवी एवम् मनसाय र तयारी रहेको र सोही रिसइवी र मनसायबाट प्रेरित भई

मृतकलाई प्रतिवादीले कर्तव्य गरी मारेको भनी तथ्यगत रूपमा उल्लेख गरी सोको प्रमाण पेस गर्न सकेको समेत देखिँदैन। लास जाँच मुचुल्कामा उल्लिखित घा-चोटको विवरणबाट समेत वारदातमा जोखिमपूर्ण हातहतियार नभई साधारण ढुङ्गा प्रयोग भएको देखिन आउँछ। यसरी वारदातको अवस्था र पृष्ठभूमि हेर्दा, मृतकको मृत्युको जरिया र कारणको कारक तत्त्वमा निज मृतककै प्रतिवादीउपर मुक्का र ढुङ्गाले हानी आफूउपर प्रतिकार गर्न र चोट छाड्न प्रतिवादीलाई बाध्य पारेको अवस्था नै रहेको देखिन आउँछ। “ज्यान मार्नाको मनसाय रहेनछ, ज्यान लिनु पर्नेसम्मको इवी पनि रहेनछ, लुकी चोरिकन हानेको पनि रहेनछ उसै मौकामा उठेको कुनै कुरामा रिस थाम्न नसकी जोखिमी हतियारले हानेको वा विष खुवाएकोमा बाहेक साधारण लाठा, ढुङ्गा, लात, मुक्का इत्यादि हान्दा सोही चोटपीरले ऐनका म्यादभित्र ज्यान मरेमा दश वर्ष कैद गर्नु” भनी मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. मा व्यवस्था भएबमोजिम निज प्रतिवादीले सोहीबमोजिमको कसुर अपराध गरेको प्रस्तुत मिसिल संलग्न प्रमाणबाट देखिन आउने।

प्रतिवादी साइला भन्ने रमेश राजधामीको हकमा हेर्दा निजले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष आफू चुरोट किन्न पुग्दा होटलमा प्रतिवादी शुभाष तामाङ र मृतक नविन राई मादक पदार्थ खाँदै गरेका र मलाई पनि प्रतिवादी शुभाष तामाङले १ गिलास बियर खान दिएकोले सो बियर खाई त्यहीँ नजिक रहेको आफ्नो पसलतर्फ हिँडेको हुँ भनी गरेको बयान, सोही बयानलाई समर्थन हुने गरी साक्षीहरूको बकपत्र तथा प्रतिवादी शुभाष तामाङले पनि मैले दिएको बियर खाएर केही समय बसी एकलै निस्की गएको हुन् भनी बयान गरिदिएबाट निज वारदातस्थलमा नरहेको र आपराधिक कार्यमा समेत संलग्न रहेको देखिन नआउने।

अतः उपर्युक्त आधार र प्रमाणबाट प्रतिवादी शुभाष तामाङलाई अभियोग माग दाबीबमोजिम ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३(३) नं. बमोजिमको कसुरमा ऐ. को १३ (३) नं. बमोजिम सजाय हुने गरी भएको सुरु जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।१०।२७

को फैसलालाई केही उल्टी गरी ज्यानसम्बन्धीको १४ नं. बमोजिम १० (दश) वर्ष कैद हुने तथा प्रतिवादी साइला भन्ने रमेश राजधामीको हकमा सुरु जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरी पुनरावेदन अदालत, विराटनगरबाट मिति २०७३।५।२९ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: सुभद्रा जि.सी.

कम्प्युटर: उत्तरमान राई

इति संवत् २०७५ साल जेष्ठ २० गते रोज १ शुभम्।

८

**मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी., ०७३-CR-१३७४, जबरजस्ती करणी, लोकबहादुर विष्ट वि. नेपाल सरकार**

घटनास्थलमा घाँस मडारिएको, घटनास्थलमा भेटिएका अस्थायी साधनका खोस्रा, घटनास्थलको माटो कोतारिएको र घिसारिएको र पीडितले लगाएको कपडा च्यातिएको अवस्था रहेको कारणले वारदातमा कण्डमको प्रयोग हुँदा वा वीर्य बाहिर खसालेको अवस्थामा वीर्य पीडितको शरीर, कपडा वा घटनास्थलमा फेला नपरेको कारणले नै वारदात जबरजस्तीको रूपमा भएको रहेनछ भनेर भन्न मिल्दैन। उपर्युक्त घटनास्थल प्रकृति र पीडितको कपडा च्यातिएको तथ्यगत अवस्थाले वारदात जबरजस्तीको रूपमा नै भएको पुष्टि हुन आउने।

पीडित स्वयम्ले आफूलाई प्रतिवादीले जबरजस्ती करणी गरेको भनी दिएको किटानी जाहेरीलाई अदालतमा उपस्थित भई गरेको बकपत्रलगायत उल्लिखित अन्य घटनास्थल प्रकृति मुचुल्का र चिकित्सकको बकपत्रले पुष्टि गरेको अवस्थामा प्रतिवादीले पीडितको मन्जुरीले नै करणी गरेको हुँ भनी गरेको साबिती बयानको कुनै सार्थकता रहन नजाने।

करणीजस्तो अपराधमा प्रतिवादीले पीडितलाई निजकै मन्जुरीले करणी गरेको भनेपनि अदालतमा पीडितले आफूलाई प्रतिवादीले जबरजस्ती रूपमा करणी गरेको भनी गरेको किटानी बकपत्रलाई घटनास्थल प्रकृति र पीडितको शरीर एवम् निजले लगाएको कपडा र चिकित्सकको परीक्षण प्रतिवेदनको राय एवम् बकपत्रले

संपुष्टि गरेको अवस्थामा प्रतिवादीको कसुरप्रतिको इन्कारी बयान एवम् पीडितको मन्जुरीले नै करणी गरेको हुँ भन्ने बयानको कुनै औचित्य रहन नजाने ।

पीडितको मन्जुरीमा करणी भएको भन्ने प्रतिवादीको मात्र एकतर्फी भनाइको आधारमा अपराधीलाई उन्मुक्ति दिँदै जाने हो भने महिलाको नारी अस्मिता एवम् महिला पीडित भएको समग्र फौजदारी न्यायको मर्म नै लुप्त भई अपराधले थप प्रोत्साहनसमेत पाउने अवस्था रहने हुँदा प्रतिवादीहरूको उक्त पुनरावेदन जिकिरलाई मनासिब मान्न मिल्ने नदेखिने ।

अतः उपर्युक्त किटानी जाहेरी, घटनास्थल प्रकृति मुचुल्का, पीडित जाहेरवालीको शारीरिक परीक्षण, शारीरिक परीक्षण गर्ने विशेषज्ञ डा.को बकपत्र, जाहेरीको समर्थन हुने गरी पीडित जाहेरवालीको अदालतको बकपत्रसमेतका स्वतन्त्र एवम् वस्तुनिष्ठ प्रमाणहरूको आधार र प्रमाणबाट प्रतिवादी लोकेन्द्र सिंह विष्ट भन्ने लोकबहादुर विष्टले मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको १ र ३ नं. विपरीतको कार्य गरेकोले र निज पीडित अपाङ्ग भएको खुल्न आएकोमा सोही महलको ३ नं. को देहाय ५ बमोजिम ५ (पाँच) वर्ष कैदको सजाय तथा जबरजस्ती करणीको महलको ३क नं. बमोजिम थप ५ (पाँच) वर्ष कैदको सजाय र पीडित X देवीले रु.४०,०००/- (अक्षरूपी चालीस हजार) क्षतिपूर्तिसमेत भरी पाउने ठहर्‍याई भएको सुरु जिल्ला अदालतको फैसला सदर गरी उच्च अदालत, दिपायल, महेन्द्रनगर इजलासबाट मिति २०७३।०७।३० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: सुभद्रा जि.सी.

कम्प्युटर: उत्तरमान राई

इति संवत् २०७५ साल जेठ २० गते रोज १ शुभम् ।

९

**मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री डम्बरबहादुर शाही**, ०६९-CI-०३४५, निषेधाज्ञा, **जोगेन्द्रप्रसाद यादव वि. कुसुमवती यादवनी**

फैसला बदर मुद्दा अदालतमा विचाराधीन रहेको र हक स्वामित्व सम्बन्धमा उक्त फैसला बदर मुद्दाबाट

निरूपण हुने नै हुँदा निवेदन दाबीका जग्गामा प्रत्यर्थी निवेदकको हकभोग रहेको दे.पु.नं. ३२५।१४५४ को जग्गा खिचोला घर उठाई चलन मुद्दाबाट हालसम्म स्पष्ट देखिँदा फैसला बदर मुद्दा अन्तिम नहुञ्जेलसम्म निवेदन दाबीको जग्गामा प्रवेश नगर्नु, नगराउनु भनी पुनरावेदक विपक्षीहरूको नाउँमा जारी भएको निषेधाज्ञाको आदेशलाई अन्यथा भएको भनी मान्न नमिल्ने ।

तसर्थ, निवेदन मागबमोजिम निषेधाज्ञाको आदेश जारी गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, राजविराजबाट मिति २०६७।१२।२७ मा भएको आदेश मिलेको देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । सो आदेश बदर गरी निषेधाज्ञाको निवेदन खारेज गरिपाउँ भन्ने पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृत: नन्दकिशोर प्रसाद यादव

कम्प्युटर: उत्तरमान राई

इति संवत् २०७४ साल माघ १४ गते रोज १ शुभम् ।

१०

**मा.न्या.श्री मीरा खड्का र मा.न्या.श्री टंकबहादुर मोक्तान**, ०७०-CI-०२००, उत्प्रेषण / परमादेश, **डा.दामोदर गजुरेल वि. चाहाना श्रेष्ठसमेत**

निवेदकहरूलाई चीनमा चिकित्सा शास्त्रमा स्नातक (एम.बि.बि.एस.) अध्ययन गर्नुपूर्व नेपाल मेडिकल काउन्सिलको नियमानुसार योग्यता तथा मापदण्डहरू पूरा गरेको देखिएकाले सिफारिस गरिएको भनी नेपाल मेडिकल काउन्सिल, काठमाडौंले शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालय, काठमाडौंलाई पत्राचार गरेको तथा रिट निवेदकहरूलाई चीनको Dali University मा चिकित्सा शास्त्रमा MBBS अध्ययन गर्न स्वीकृति दिएको भन्ने शिक्षा मन्त्रालयको No objection letter को मिसिल संलग्न प्रतिलिपिहरूबाट देखिन आउँछ । सोबमोजिम निवेदकहरूले चीनको डाली विश्वविद्यालयबाट चिकित्सा शास्त्रको MBBS को शैक्षिक सत्रको अध्ययन पूरा गरेको देखिन आउने ।

एउटै विदेशी मुलुक चीनमा एम.बि.बि.एस. अध्ययन गरेका विद्यार्थीहरू मध्ये एउटाले नेपालमा नै इन्टर्नसिप गर्नका लागि अवसर पाउने तर सोही सरहका

रिट निवेदकहरूले नेपालमा Internship गर्न नदिने भनी Nepal Medical Council को निर्णयबाट रिट निवेदकलाई नेपालको संविधानद्वारा प्रदत्त समानताको मौलिक हकबाट वञ्चित भएको देखिने ।

यसभन्दा पहिले पनि रिट निवेदकहरू जस्तै परिस्थिति परेका विद्यार्थीहरूलाई नेपालमा इन्टर्नसिप गर्न नेपाल मेडिकल काउन्सिलले अनुमति दिएकोमा समान परिस्थितिमा रहेका यी रिट निवेदकहरूलाई पनि समान व्यवहार गर्नुपर्नेमा रिट निवेदकहरूलाई नेपालमा इन्टर्नसिप गर्नबाट रोक लगाउने कार्य नेपालको संविधान तथा मानव अधिकारको विश्वव्यापी घोषणापत्रको रोहमा समेत मान्य हुने देखिन नआउने ।

अतः पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट रिट निवेदकहरूलाई नेपालमै इन्टर्नसिप गर्न दिनु भनी परमादेशको रिट जारी गर्ने गरी मिति २०७०।३।१२ मा भएको आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: सुदीपकुमार भट्टराई  
कम्प्युटर: उत्तरमान राई

इति संवत् २०७४ साल असोज २६ गते रोज ५ शुभम् ।

इजलास नं. ११

१

मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७२-CR-००४२, ०७२-CR-०४२० र ०७२-CR-१३६५, कर्तव्य ज्यान, खड्क वि.क. वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. सुभाष कुसारीसमेत र कुलबहादुर वि.क.समेत वि. नेपाल सरकार

मृतक र यी प्रतिवादी खड्क वि.क. बीचमा एकआपसमा भनाभन हुँदा प्रतिवादी आवेशमा आई मृतकलाई ढुङ्गाले प्रहार गरेको र सोही चोटको कारणबाट मृतकको मृत्यु भएको देखिन्छ । टाउकोपछाडि बीचमा १ इन्च काटिएको घाउ देखिएको बायाँ घुँडामा खोस्रिएको, नाक र मुखबाट रगत निस्किएको भन्ने मृतक लक्ष्मण वि.क.को लासजाँच मुचुल्काको बेहोराबाट देखिन्छ । यसरी मृतकको टाउकोमा १ इन्चको काटिएको एउटा

मात्र घाउ देखिएबाट यी प्रतिवादीले मृतकलाई ज्यानै मार्ने मनसायले पटक-पटक प्रहार गरेको भनी अनुमान गर्न कदापि नमिल्ने ।

पुनरावेदक प्रतिवादी खड्क वि.क. ले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. विपरीतको कसुर गरेको पुष्टि भइरहेको अवस्थामा निज प्रतिवादी खड्क वि.क. लाई अभियोग माग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्‍याई सुरु रूकुम जिल्ला अदालतबाट मिति २०७१।४।२९ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा भनी निजको हकमा उक्त फैसला सदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुरबाट मिति २०७१।१२।१० मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा निजको हकमा केही उल्टी भई निज प्रतिवादी खड्क वि.क. लाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. बमोजिम १० वर्ष कैदको सजाय हुने ।

आफू कसुरमा साबित रही बयान गर्ने प्रतिवादी खड्क वि.क. ले अन्य प्रतिवादीहरूको संलग्नता भएको भए आफूले हानेको ढुङ्गाले लागेको चोटबाट मृत्यु भएको भनी उल्लेख गर्नुपर्ने अवस्था केही देखिँदैन । मृतक लक्ष्मण वि.क. को टाउकोमा एउटा मात्र ढुङ्गाको चोट रहेको कुरा लास जाँच प्रकृति मुचुल्काबाट देखिएको छ । वारदातको चश्मदिद साक्षी भनिएका घटना विवरणको कागज गर्ने विशाल रावल, ववि विक्रम शाह र गणेश बोहराले मृतकलाई खड्क वि.क. लगायत कुलबहादुर वि.क. र मानबहादुर वि.क. ले ढुङ्गाले हानी कुटपिट गरेका हुन् भनी अदालतमा आई बकपत्र गरेको भए तापनि लास जाँच प्रकृति मुचुल्का तथा सहप्रतिवादी खड्क वि.क. को बयानबाट निजहरूको कथन खण्डन भएको अवस्था छ । यी प्रतिवादीहरू कुलबहादुर वि.क. र मानबहादुर वि.क.को अनुसन्धानको कागज अन्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट पुष्टि हुन नसकेको अवस्थामा अनुसन्धानको साबितीलाई मात्र आधार मानी वारदातमा निजहरूको संलग्नता थियो भनी दोषी ठहर गर्न मिल्ने अवस्था नरहने ।

प्रतिवादी खड्क वि.क. लाई मुलुकी ऐन,

ज्यानसम्बन्धीको महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्‍याएको सुरु फैसला सदर गरी पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुरबाट भएको फैसला निजको हकमा मिलेको नदेखिँदा उक्त फैसला सो हदसम्म केही उल्टी भई निज प्रतिवादी खड्क वि.क. लाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. बमोजिम १० वर्ष कैद सजाय हुने ठहर भएको र प्रतिवादी खड्क वि.क.ले अदालतमा बयान गर्दा आफूले मात्र मृतक लक्ष्मण वि.क. लाई ढुङ्गाले प्रहार गरेको भनी उल्लेख गरेको र अन्य मिसिल संलग्न प्रमाणबाट यी प्रतिवादीहरूको यो यस किसिमको संलग्नता थियो भन्ने शंकाहित रूपबाट पुष्टि नभएको परिप्रेक्ष्यमा निज पुनरावेदक प्रतिवादी विजय भन्ने मानबहादुर वि.क. र कुलबहादुर वि.क.लाई ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. बमोजिम सजाय गर्नु मनासिब नदेखिँदा निज प्रतिवादीहरूलाई १७(३) नं. बमोजिम जनही २ वर्ष कैद सजाय गर्ने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुरबाट भएको फैसला निजहरूको हकमा मिलेको नदेखिँदा उक्त फैसला सो हदसम्म उल्टी भई निज प्रतिवादीहरूले अभियोग माग दाबीबाट सफाइ पाउने ।

प्रतिवादीहरू परे कामी र सुभास कुसारीले अभियोग माग दाबीबमोजिमको कसुर गरेको भन्ने वस्तुनिष्ठ प्रमाणबाट पुष्टि हुन नसकेको अवस्थामा प्रतिवादी कुलबहादुर वि.क. र मानबहादुर वि.क. को हकमा सुरु अदालतबाट अभियोग दाबीबमोजिम ज्यानसम्बन्धी महलको १ नं. बमोजिम कसुरमा ऐ.को १३(३) बमोजिम जन्मकैदको सजाय गर्ने गरी भएको फैसला निजहरूको हकमा केही उल्टी भई निज प्रतिवादीहरूलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. बमोजिम जनही २ वर्ष कैद सजाय हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुरको फैसला निजहरूको हकमा मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई निज प्रतिवादी कुलबहादुर वि.क. र मानबहादुर वि.क. ले अभियोग मागदाबीबाट सफाइ पाउने ।

अतः उल्लिखित आधार र कारणहरूबाट

जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादी खड्क वि.क.लाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद, प्रतिवादी कुलबहादुर वि.क. र मानबहादुर वि.क., सुभास कुसारी र परे कामीलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैद हुने गरी भएको फैसला प्रतिवादी खड्क वि.क. को हकमा सदर गरी प्रतिवादी मानबहादुर वि.क. र कुलबहादुर वि.क. लाई ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. बमोजिम २ वर्ष कैद तथा प्रतिवादी सुभास कुसारी र परे कामीले सफाइ पाउने भनी मिति २०७१।१२।१० मा पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुरबाट फैसला भएकोमा प्रतिवादी सुभास कुसारी र परे कामीलाई सफाइ दिएको हकमा सम्म मिलेके देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । प्रतिवादी खड्क वि.क. को हकमा केही उल्टी भई ज्यानसम्बन्धी महलको १४ नं. बमोजिम १० वर्ष कैदको सजाय हुने ठहर्छ । प्रतिवादी कुलबहादुर वि.क. र मानबहादुर वि.क.लाई ज्यानसम्बन्धी महलको १७(३) नं. बमोजिम २ वर्ष कैद हुने ठहर गरेको हकमा उल्टी भई निजहरूले सफाइ पाउने ।

इजलास अधिकृत: गोपी विश्वकर्मा

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७५ साल वैशाख १० गते रोज २ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७२-CI-१५१५, निषेधाज्ञा, *इसराइल मियाँ अन्सारीसमेत वि. सुल्तान मियाँ अन्सारी*

वस्तुतः मोहियानी बेदखली मुद्दा भूमिसुधार कार्यालयमा भूमिसम्बन्धी ऐनअनुरूप नै जाने हो । मोहीलाई खेत जोत्नबाट बेदखल गरेको अवस्थामा उक्त प्रक्रियाबाट मोहीले उपचार प्राप्त गर्दछ । तर, निषेधाज्ञा बेदखली हुनुपूर्व बेदखली हुने प्रबल आशङ्काको अवस्थामा जारी हुने आदेश हो । निवेदकले आफ्नो मोहियानी हकको जग्गा कमाई आफ्नो पेसा तथा रोजगारी गर्न पाउने नागरिक अधिकार ऐन, २०१२ को ६(७) बाट प्रत्याभूत हकमा आघात हुने आशङ्काको स्थितिमा



सोही ऐनको दफा १७ अनुरूप निषेधाज्ञाको आदेशको माग गर्न पाउने अधिकार पनि सुरक्षित नै रहेको र लिखित जवाफको बेहोराबाटै प्रस्तुत मुद्दामा यी पुनरावेदक विपक्षीहरूले यी प्रत्यर्थी निवेदकलाई दाबीको उक्त जग्गा कमाउन बाधा अवरोध गर्न सक्ने प्रवल आशंका रहेको देखिएको अवस्थामा पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाबाट निवेदन दाबीबमोजिम विपक्षीहरूको नाममा जारी गरेको निषेधाज्ञाको आदेशलाई अन्यथा मान्न नमिल्ने ।

अतः विवेचित आधार, कारण र प्रमाणसमेतबाट निवेदन मागअनुसार साबिक कि.नं.१०९ किताफोड भई कायम हुन आएका कि.नं.३०७ र १०७ को जग्गाको मोही निवेदक सुल्तान मिया अन्सारी देखिएकोले उक्त किता नं. का जग्गा कमाउन निवेदकलाई कुनै किसिमले बाधा व्यवधान नपुन्याउनु भनी विपक्षीहरूका नाउँमा निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाबाट मिति २०७२।०८।१६ मा भएको आदेश मनासिब रहेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: गोपी विश्वकर्मा

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७५ साल वैशाख १२ गते रोज ४ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७३-CI-१२१३, निषेधाज्ञा, कल्पना सापकोटा वि. महानगरीय प्रहरी परिसर, जावलाखेलसमेत

निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुनको लागि रिट निवेदकको हकअधिकारमा आघात पुग्न सक्ने प्रवल सम्भावना वा आशंकाको विद्यमानता रहेको हुनुपर्दछ । यी पुनरावेदक निवेदक र विपक्षीमध्येकी ठण्डाकुमारीबीच लेनदेन विषयमा काठमाडौँ जिल्ला अदालतमा मुद्दा परी विचाराधीन रहेको अवस्था देखिँदा उक्त मुद्दामा असर पार्ने गरी निषेधाज्ञाको आदेश जारी गर्न नमिल्ने हुँदा रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट भएको आदेशलाई अन्यथा मान्न मिल्ने नदेखिने ।

अतः माथि विवेचित आधार र कारणसमेतबाट

निवेदन मागबमोजिम निषेधाज्ञाको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता नभएकोले रिट निवेदन खारेज हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०७३।५।८ मा भएको आदेश मनासिब नै रहेको देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: गोपी विश्वकर्मा

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७५ साल वैशाख १२ गते रोज ४ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७३-CI-०७२१, निषेधाज्ञा, अरुणबहादुर श्रेष्ठसमेत वि. हरिहरलाल श्रेष्ठसमेत

विपक्षी महानगरीय वृत्त, दरबार मार्गको लिखित जवाफको बेहोरासमेतबाट निज निवेदकलाई सो प्रहरी कार्यालयमा उपस्थित गराई छलफल गराएको तथ्यलाई स्वीकार गरेको देखिन्छ । यसरी महानगरीय प्रहरी वृत्त दरबार मार्गको लिखित जवाफसमेतबाट निवेदकलाई छलफल गराउन उपस्थित गराइएको भन्ने देखिएको हुँदा निवेदकलाई देवानी दायित्वको विषयमा विपक्षी प्रहरी कार्यालयबाट धरपकड एवम् पक्राउ गर्ने र थुनामा राख्ने कार्य हुन सक्ने प्रवल आशंका रहेको भन्ने निवेदकको निवेदन दाबीलाई अन्यथा भन्न सकिने अवस्था देखिएन । देवानी प्रकृति र दायित्वको विषयलाई लिएर कुनै व्यक्तिलाई पक्राउ गर्ने थुन्ने अधिकार प्रहरी कार्यालयलाई नभएको सन्दर्भमा पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट निवेदकको निवेदन दाबीबमोजिम विपक्षी महानगरीय प्रहरी परिसर काठमाडौँ र महानगरीय प्रहरी वृत्त दरबारमार्ग काठमाडौँको नाममा जारी भएको निषेधाज्ञाको आदेशलाई अन्यथा मान्न नसकिने ।

अतः माथि विवेचित आधार र कारणसमेतबाट कानूनबमोजिम अनुसन्धान, तहकिकात गर्नुपर्ने फौजदारी कसुरमा बाहेक देवानी विषयमा निवेदकलाई धरपकड एवम् पक्राउ गर्ने र थुनामा राख्ने कार्य नगर्नु, नगराउनु भनी विपक्षी महानगरीय प्रहरी परिसर काठमाडौँ र महानगरीय प्रहरी वृत्त दरबारमार्ग काठमाडौँसमेतका विपक्षीहरूको

नाममा निषेधाज्ञाको आदेश जारी हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पाटनबाट मिति २०७३।०३।२२ मा भएको आदेश मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: गोपी विश्वकर्मा

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७५ साल वैशाख १२ गते रोज ४ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री हरिकृष्ण कार्की र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७३-CI-०७२६, निषेधाज्ञा / परमादेश, हेमन्तकुमार सराफ वि. गोविन्द शर्मा

सिद्धान्ततः सर्वोत्कृष्ट विद्यार्थीले पदक पाउने अधिकार हो तर त्यस्तो पदक दाबी गर्ने पक्षले नियम कानूनद्वारा निर्दिष्ट प्रक्रिया पूरा पनि गरेकै हुनुपर्दछ। स्नातकोत्तर तहको थेसिस अन्तिम सेमेस्टरको परीक्षाको परीक्षाफल प्रकाशन भएको मितिले ९० दिनभित्र परीक्षा नियन्त्रण कार्यालयमा प्राप्ताङ्क बुझाएको विद्यार्थीलाई मात्र नियमित परीक्षार्थीको रूपमा मान्ने व्यवस्था गरेको कुरा मिसिल संलग्न पोखरा विश्वविद्यालय, प्राज्ञिक परिषद्को मिति २०६७।११।२३ को बैठकबाट पारित भएको निर्णयको प्रतिलिपिबाट देखिन्छ। तदनुसृत पोखरा विश्वविद्यालय, प्राज्ञिक परिषद्को मिति २०७३।०१।०७ को बैठकबाट नियमित समयावधिभित्र उत्तीर्ण भएका विद्यार्थीहरूलाई मात्र Chancellor's Medal प्रदान गर्ने निर्णय भएको उक्त निर्णयको प्रतिलिपिबाट देखिन्छ। उक्त निर्णयानुसार पोखरा विश्वविद्यालयको दीक्षान्त समारोह मिति २०७३।०१।०८ मा सम्पन्न भई सो Medal समेत अन्य विद्यार्थीलाई प्रदान गरी सकेको देखिन्छ। यी पुनरावेदक / निवेदकले पोखरा विश्वविद्यालयको प्राज्ञिक परिषद्को मिति २०६७।११।२३ एवम् मिति २०७३।०१।०७ को निर्णयहरूलाई विधिवत् रूपमा चुनौती दिन सकेको देखिँदैन। निवेदकले चुनौती नै नदिएको उल्लिखित निर्णयहरूको विषयमा प्रवेश गरी निर्णय गर्न सिद्धान्ततः मिल्दैन। यसरी पोखरा विश्वविद्यालय, प्राज्ञिक परिषद्को मिति २०७३।१।०७ को बैठकबाट नियमित

समयावधिभित्र उत्तीर्ण भएका विद्यार्थीहरूलाई मात्र Chancellor's Medal प्रदान गर्ने निर्णयानुसार पोखरा विश्वविद्यालयको दीक्षान्त समारोह मिति २०७३।१।०८ मा सम्पन्न भई सो Medal समेत अन्य विद्यार्थीलाई प्रदान गरी सकेको अवस्थामा रिट निवेदन खारेज हुने ठहर गरी पुनरावेदन अदालत, पोखराबाट भएको आदेशलाई अन्यथा मान्न नमिल्ने।

अतः विवेचित आधार र कारणबाट निवेदन माग दाबीबमोजिम निषेधाज्ञामिश्रित परमादेशको आदेश जारी गर्नुपर्ने अवस्थाको विद्यमानता नदेखिँदा प्रस्तुत निवेदन खारेज हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पोखराबाट मिति २०७३।०३।०८ मा भएको आदेश मनासिब रहेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: गोपी विश्वकर्मा

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७५ साल वैशाख १२ गते रोज ४ शुभम्।

इजलास नं. १२

१

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा**, ०६७-CI-११६९, लिखत दर्ता बदर पूर्ववत् दर्ता कायम, राम पवित्र साह सुडी वि. मिनादेवी मण्डल

वादी प्रतिवादीबीच कि.नं. ५६ समेतको जग्गा फिरादीलाई राजीनामा पारित गरिदिने सर्तसहितको करारनामाको कागज भएको सन्दर्भमा मुद्दा परी करारनामाको कागजबमोजिम गरिदिने गरी साधिकार अदालतबाट मिलापत्रसमेत भएको देखिन्छ। सो मिलापत्रअनुसार जग्गा पारित गराउनको लागि वादीले मालपोत कार्यालयमा निवेदनसमेत दिई कारबाही भइरहेको अवस्थामा प्रतिवादी लक्ष्मेश्वरको पिता स्व. विगुल मण्डलको नाउँबाट प्रतिवादी लक्ष्मेश्वरको नाउँमा जग्गा नामसारी गरी सो नामसारी हुनासाथ ०-४-० जग्गा प्रतिवादी लक्ष्मेश्वर मण्डलले अर्का

प्रतिवादी राम पवित्र साह सुडीलाई लिखत गरी दिएको देखियो । उक्त मिति २०५०।१२।८ को मिलापत्रपश्चात् वादीले मालपोत कार्यालय, धनुषामा मिलापत्रबमोजिम गरिपाउँ भनी निवेदन दिई कारबाही प्रक्रियामा रहेको देखिएको छ । यस अवस्थामा विवादित जग्गामा प्रतिवादीको हक समाप्त भई लिखत पारित गरी दिन सक्ने स्थिति नै नरहेको मान्नु पर्ने ।

साधिकार अदालतबाट मुद्दाको रोहमा भएको मिलापत्रको कार्यान्वयन हुनुपर्दछ । मिलापत्रविपरीत भएको व्यवहारलाई मान्यता दिन सकिँदैन । त्यसो गर्दा झगडाको अन्त्य कहिल्यै पनि नहुने अवस्था पैदा हुन सक्छ । धनुषा जिल्ला अदालतबाट करारबमोजिम दाबीको जग्गा वादीले राजीनामा पारित गराई लिन पाउने गरी मिलापत्र भएको र सो मिलापत्र कायमनै रहेको अवस्थामा मिलापत्रको सर्त प्रतिकूल दाबीको जग्गा प्रतिवादीले अर्को व्यक्तिलाई हक हस्तान्तरण गरिदिन मिल्ने देखिँदैन । सम्पत्ति हस्तान्तरणसम्बन्धी आधारभूत मान्यताअनुसार आफूमा रहेको हक स्वामित्वभन्दा बढी अर्थात् हक स्वामित्वको दायराभन्दा बाहिर गई कुनै हक हस्तान्तरण हुन नसक्ने ।

विवादित जग्गामा मिति २०५०।१२।८ मा भएको मिलापत्रको परिणाम स्वरूप प्रतिवादीमध्येका लक्ष्मेश्वर मण्डलको हक स्वामित्व समाप्त भई वादी मिना देवी मण्डलको हक स्थापित भएको देखिएको छ । यस अवस्थामा प्रतिवादीहरूबीच भएको लिखतलगायतका हक हस्तान्तरणसम्बन्धी व्यवहारले कानूनी मान्यता नपाउने ।

करार तथा मिलापत्रबाट उक्त कि.नं. ५६ र २८ को जग्गामा वादीको हक कायम हुन पुगेको देखिँदा प्रतिवादीहरूबीच भएको मिति २०५४।११।१ को र.नं. ६७४३ को राजीनामा लिखत कानूनअनुकूल देखिन आएन । विवादित कि.नं. ५६ बाट कि.का. भई कायम भएको कि.नं. ३४६ को ०-५-९ मध्ये ०-४-९ जग्गा मिति २०५५।३।२६ गते र.नं. १४९२५ बाट दिने लक्ष्मेश्वर मण्डल र लिने वौएलाल मुखिया भई

राजीनामा पारित गरी लिएको देखिन्छ । सो कि.नं. ३४६ बदर भई कि.नं. ३४७ र ३४८ कायम भई कि.नं. ३४७ वौएलाल मुखियाको नाउँमा दर्ता देखिएको छ । सोसपर यिनै वादीको लिखत दर्ता बदर पूर्ववत् दर्ता कायम मुद्दा चली अन्ततः सर्वोच्च अदालतबाट मिति २०६८।७।२ मा मिलापत्र हुँदा सो कि.नं. ३४७ को जग्गा प्रतिवादी वौएलाल मुखियाको नाउँमा दर्ता कायम राख्ने गरी मिलापत्र भएको पाइने ।

मिलापत्रको परिणामस्वरूप कि.नं. ५६ को जग्गाको किता फोड भई कायम हुन आएको कि.नं. ३४७ कायम रहने अवस्था देखिएको छ । तसर्थ हाल कि.नं. ५६ को अलग अस्तित्व कायम नरहेको अर्थात् जग्गा टुक्रि सकेको देखिँदा कि.नं. ५६ पूर्ववत् कायम हुने अवस्था देखिँदैन । तसर्थ “कि.नं. ५६ पूर्ववत् कायम हुन्छ” भनी उल्लेख गरेको हदसम्म पुनरावेदन अदालतको फैसला मिलेको नदेखिँदा सो वाक्य उल्लेख गरेको हदसम्म उक्त फैसला केही उल्टी हुन्छ । सो हदसम्म बाहेक मालपोत कार्यालय, धनुषाबाट र.नं. ६७४३ मिति २०५४।११।१ मा पारित राजीनामा लिखत बदर गरी वादी दाबीबमोजिम वादीको हक कायम हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत, जनकपुरको मिति २०६७।२।३ को फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद भट्टराई  
कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल पुस १७ गते रोज २ शुभम् ।

२

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०६९-CI-१२४५, जग्गा खिचोला मेटाई हक कायम गरिपाउँ, भागीरथी कहार वि. बहराईची कलवार

विवादित जग्गाको दर्तापुर्जा पाउनको लागि वादीले सुकुम्बासी समस्या समाधान आयोगमा निवेदन दिएको भन्नेसमेत फिराद दाबीबाट देखिन्छ । वादीले फिरादसाथ पेस गरेको स्वाँठी गाउँ विकास समितिको पत्र तथा सर्जमिनबाट समेत सो जग्गा यी वादीको नाउँमा

दर्ताको लागि सुकुम्बासी समस्या समाधान आयोगमा सिफारिस भएको देखिन्छ । वादीको फिराददाबी अनुसार साबिकदेखिको हकभोगको जग्गा भए निजलाई सुकुम्बासीको रूपमा सो जग्गा उपलब्ध गराउने प्रक्रिया अगाडि बढाउनुपर्ने अवस्थासमेत रहँदैन । वादीले सो जग्गाको दर्ता धनी पूर्जा पाउनको लागि सुकुम्बासी समस्या समाधान आयोगमा निवेदन दिएको देखिएकोमा सो गाउँ विकास समितिको सरजमिनसहितको सिफारिससमेतको निवेदनको हकमा सोही निकायबाट कानूनबमोजिम निकास हुने अवस्था रहेको देखिन्छ । सो निकायलाई स्वतन्त्रतापूर्वक काम कारबाही गर्न बाधा पुग्ने गरी यो मुद्दाबाट बोल्न मिल्ने पनि नहुने ।

वादीको सो जग्गामा साबिकदेखिको दर्ताको प्रमाण रहेको नदेखिएको, हकको स्रोत नै केही पनि नदेखिएको हुँदा सर्जमिन गरिदिएको मात्र आधारमा विवादित जग्गामा यी पुनरावेदक वादीको हक कायम गर्न मिल्ने देखिएन । दाबीको जग्गामा वादीको हक नै नपुग्ने अवस्थामा प्रतिवादीले खिचोला गरेको भनी जग्गा खिचोला मा ठहर गर्न मिल्नेसमेत नदेखिने ।

अतः वादी दाबीको कि.नं. ६० र ६१ को जग्गा सभै नापीको बखतमा फिल्डबुकमा वादीको नाउँमा नापी दर्ता नभई जग्गाधनी महलमा खाली रहेको, दाबीको जग्गामा यी वादीको हकभोग रहेको कुनै पनि प्रमाणबाट नदेखिएको, पुनरावेदक वादीले भोग गरेको भनी केही मानिसहरूले गरिदिएको सर्जमिनको आधारमा मात्र विवादित जग्गामा हक कायम गर्न मिल्ने नदेखिएको हुँदा सुरु तथा पुनरावेदन अदालत, बुटवलको फैसला उल्टी गरी फिराद दाबीबमोजिम गरिपाउँ भन्ने वादीको पुनरावेदन दाबी पुग्न नसकी पुनरावेदन अदालत बुटवलको मिति २०६९।६।७ को फैसला सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद भट्टराई  
इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर १८ गते रोज २ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत, ०७२-CR-१९१५, डाँका

चोरी, नेपाल सरकार वि. कमल योगीसमेत

प्रतिवादीहरू दिपेन्द्र पुन र कालु पुनले खुकुरी प्रहार गरेको हुँदा जाहेरवाला गणेश गिरी र पूर्णबहादुर कुँवरलाई घाउ चोट लागेको हुनुपर्छ भनी प्रतिवादी टैकबहादुर नेपालीको बयानमा उल्लेख छ । उक्त अभियोग पत्रसाथ दाखिल भएको खुकुरी थान २ दीपक भन्ने दीपप्रसाद पुनको हो भनी कालु पुनले अदालतसमक्ष आई बयान गर्दा उल्लेख गरिदिएको पाइन्छ । बरामद भई आएको खुकुरी मेरो घरको खुकुरी हो भनी दीपप्रसाद पुनको बयानमा पनि उल्लेख भएको र जाहेरवालाको मोबाइल प्रतिवादीबाट बरामद भएबाट समेत निजले गरेको पोल बयानअनुसार वारदातमा प्रतिवादीहरूको संलग्नतासमेत भएको पुष्टि भएको देखिने ।

रोल्पा जिल्ला अदालतबाट प्रतिवादीहरू मध्ये विनोद घर्ती, कालु पुन, दिपक भन्ने दिपप्रसाद पुन, संजय भन्ने सुके नेपालीसमेत जना ४ लाई अभियोग मागदाबी अनुरूप मुलुकी ऐन, चोरीको १४ नं. को देहाय (४) बमोजिम डाँका चोरी गरेको बिगो रु.७,०००।- (सात हजार रूपैयाँ) को डेढीले हुने जनही रु.१०,५००।- (दश हजार पाँच सय रूपैयाँ) जरिवाना र ६ (छ) वर्ष कैदसमेत दुवै सजाय हुने र प्रतिवादी टैकबहादुर नेपाली नाबालक हुँदा निज प्रतिवादी टैकबहादुर भन्ने रिखीबहादुर नेपालीलाई बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) मा उल्लिखित कानूनी व्यवस्थाबमोजिम उमेर पुगेका व्यक्तिलाई हुने सजायको आधा सजाय हुने हुँदा निज प्रतिवादी टैकबहादुर भन्ने रिखीबहादुर नेपालीलाई रु.५,२५०।- (पाँच हजार दुई सय पचास रूपैयाँ) जरिवाना र ३ (तीन) वर्ष कैदसमेत दुवै सजाय हुने ठहर्न्याई भएको फैसला पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुरबाट सदर भएकोलाई अन्यथा भन्न मिल्ने नदेखिने ।

प्रतिवादी ओविलाल बुढामगरसमेतका साक्षी दुर्गा महारा र नगेन्द्रबहादुर बुढाले निज प्रतिवादी ओविलाल बुढाले स्वास्थ्य उपचारका लागि अस्पताल गएको र प्रतिवादी कमल योगी निजसँगै अस्पताल गएको भनी बकपत्र गरी प्रतिवादी कथनलाई समर्थन

गरी बकपत्र गरिदिएको पाइन्छ । यसरी उपर्युक्त आधार कारणबाट निज प्रतिवादीहरू कमल योगी र ओवीलाल बुढाले आफूहरू अस्पतालमा भएकोले सो डाँका वारदातमा संलग्न थिएन भनी लिएको Alibi जिकिर समर्थित भएको अवस्था हुँदा निज प्रतिवादीहरू उपरको अभियोग शंका रहित तवरबाट पुष्टि हुन आएको देखिन आएन । शंकाको सुविधा प्रतिवादीले पाउने भन्ने फौजदारी न्यायको मान्य सिद्धान्त अनुसारसमेत निजहरूलाई कसुरदार भनी मान्न मिलेन । तसर्थ पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुरले निज प्रतिवादीहरू कमल योगी र ओवीलाल बुढालाई अभियोग दाबीबाट सफाई दिने गरी भएको फैसला मनासिबै देखिने ।

प्रतिवादीहरूबाट बरामद बिगोसमेतलाई आधार लिई सुरु रोल्पा जिल्ला अदालतले फैसला गरेको देखिन्छ । पीडितहरूको सुनका बुलाकी, फुलीसमेतका सरसामान डाँका गरेको भनेकोमा सो सुनका समान बरामद हुन सकेको देखिँदैन । सो सामानहरू के कसरी लुप्त भए वा अनुसन्धानबाट फेला पार्न सकिएन सो केही खुलेको देखिँदैन । यस्तो स्थितिमा यस अदालतबाट प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतका आधारमा सुरु अदालतले बरामदी बिगोलाई चोरीको बिगो कायम गरेकोलाई अन्यथा भन्न नसकिने ।

तसर्थ उल्लिखित विवेचित आधार कारण, कानून तथा प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतका आधारमा प्रतिवादीहरू मध्ये कमल योगी र ओवीलाल बुढाले आरोपित कसुरबाट सफाई पाउने र अन्य प्रतिवादीहरू दिपक भन्ने दीपप्रसाद पुन र विनोद घर्तीका हकमा सुरु रोल्पा जिल्ला अदालतबाट मिति २०७५।०९।२६ मा भएको फैसला सदर हुने र सो हदभन्दा बढीमा वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरको पुन सक्दैन भनी पुनरावेदन अदालत, तुलसीपुरबाट मिति २०७२।१।१३ मा भएको फैसलामिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: टेकराज जोशी

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७५ साल जेठ १४ गते रोज २ शुभम् ।

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल**, ०७२-CR-१७४९ र ०७२-CR-१८२६, कर्तव्य ज्यान, शम्भु गौतम वि. नेपाल सरकार र खगेन्द्र गौतम वि. नेपाल सरकार

मिसिल संलग्न मृतकको फोटो हेर्दासमेत निजको घाँटीमा धारिलो हतियारबाट गहिरो प्रहार गरेको स्पष्ट देखिन्छ । यसबाट प्रतिवादीहरूले धारिलो बन्चरो पटकपटक मृतकलाई प्रहार गरेको देखिन आउँछ । मृतकको बन्चरो चिप्लिएर स्वाभाविक मृत्यु भएको भए डुँड काटेको दाउराको चोइटाले मृतकको लास ढाकिनु पर्ने अवस्था देखिँदैन । यसबाट मृतकको मृत्यु स्वाभाविक रूपमा नभई कर्तव्यबाट भएको देखिन आउने ।

अदालतमा बयान गर्दा आफूले केही नगरेको भनी खगेन्द्रले र आफूले काठ काट्दा बन्चरो उछिट्टिएर निज घाइते भएको भन्ने शम्भु गौतमको बयान भए तापनि बन्चरोजस्तो जोखिमी हतियार उछिट्टिएर घाँटीजस्तो संवेदनशील र चिउँडोमा मात्र लागेको होला भन्ने भनाइ मिसिल संलग्न यथेष्ट प्रमाणको आधारबाट विश्वासप्रद देखिँदैन । खगेन्द्रले आफूले घटना घटाएको भनी निजले अनुसन्धानको क्रममा भएको स्वीकारोक्ति बयानलाई शम्भुले पनि अप्रत्यक्ष रूपमा समर्थन गर्दै खगेन्द्रले धकेल धुकुल गरी लडाईं आफूले बन्चरो प्रहार गरी सोबाट निजको मृत्यु भएको भन्ने मौकाको बयानलाई यी प्रतिवादीहरूले सप्रमाण खण्डित गर्न सकेको पनि पाइँदैन । खगेन्द्रले समेत बन्चरो प्रहार गरेको भन्ने नदेखिए पनि निजले नै आपसी विवाद खडा गरी एक आपसमा धकेल धुकुल गरी कुटपिट गरी मार्नलाई संयोग पारी लडाएको कारणले शम्भु गौतमले बन्चरो प्रहार गरेको देखिन्छ । प्रतिवादीहरूमध्ये शम्भुले बन्चरो लिई दुई चोट चिउँडो तथा घाँटीमा प्रहार गरेको पाइन्छ यसबाट घाँटीजस्तो शरीरको संवेदनशील अङ्गमा बन्चरो उछिट्टिएर लाग्न गई घाइते भएको भन्ने प्रतिवादीहरूको भनाइ मालाकार कडीमा प्रमाणित भएको पाइँदैन । यी प्रतिवादीहरूमध्ये खगेन्द्र गौतमले धकेल धुकुल

गरेजस्तो गरी लडाई तत्पश्चात् शम्भु गौतमले मृतकलाई बन्चरो जस्तो धारिलो हतियारले प्रहार गरी सोही चोटका कारणले रामकुमार आचार्यको मृत्यु भएको देखिन आउने।

तसर्थ माथि विवेचित तथ्य तथा आधार कारणबाट प्रतीवादी शम्भु गौतमलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १ र १३(३) नं. को कसुरमा सोही महलको १३(३) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय हुने ठहर्‍याई र अर्का प्रतिवादी खगेन्द्र गौतमको हकमा निजले बन्चरो प्रहार गरी घाइते तुल्याएको नदेखिएको तर मार्नलाई संयोगसम्म पारी मृतकको जिउमा हातहाली पक्री धकेली लडाई भुइँमा पछारी मार्नलाई संयोग पारी दिएकोले निजले मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको १३(४) नं. को कसुर गरेकोमा निजले पेश गरेको शैक्षिक प्रमाण पत्रबाट निजको उमेर १६ वर्ष मुनिको देखिँदा निजलाई बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११ बमोजिम १० वर्ष कैद हुने ठहर्‍याई भएको उदयपुर जिल्ला अदालतको मिति २०७१।३।२४ को फैसला मनासिब ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, राजविराजको मिति २०७२।३।१६ गतेको फैसला सदर हुने।

इजलास अधिकृत: दुर्गाप्रसाद भट्टराई

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल माघ १२ गते रोज ६ शुभम्।

५

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी**, ०६७-CI-०९४५, जग्गा खिचोला चलन, शेख तहिद वि. शेख रहमन अलिसमेत

रौतहट जिल्ला अदालतबाट भई आएको नक्सा मुचुल्का र रौतहट जिल्ला अदालतको आदेशानुसार मिति २०६५।३।२२ मा नापी शाखा रौतहटको नापी निरीक्षकले दिएको प्रतिवेदनबाट वादीको कि.नं. ३८ को जग्गा गा.वि.स. सवगडा वडा नं. ५ बाट र प्रतिवादीहरूको कि.नं. १८०, १८१ र १९८२ को जग्गा अकोलवा वडा नं. ६ ग मा रही अलगअलग गा.वि.स.बाट

नापी हुँदा जग्गा खप्टिएको भन्ने उल्लेख भएको रहेछ। वादी शेख तहिदको नाउँमा दर्ता रहेको जग्गा अन्यत्र रहे भएको भन्ने कहीं कतैबाट देखिन आउँदैन। अदालतबाट भई आएको नक्सा मुचुल्कामा विवाद जनिएको नक्सा नं. २१ को जग्गामा वादीको कि.नं. ३८ को जग्गा रहेको भनी नक्सामा निलो मसीले जनाइएको देखिन्छ। सो विवादित जग्गा प्रतिवादीहरूको भोगमा रहेको भन्ने नक्सा मुचुल्काबाट देखिन आउँछ। प्रतिवादीहरूको नाममा अलगअलग कित्ता नम्बर र क्षेत्रफल उल्लेख भई दर्ता भएको र सो दर्ताअनुसार पुर्जासमेत प्राप्त गरी सो पुर्जामा उल्लेख भएको भन्दा बढी जग्गामा प्रतिवादीहरूको हक हुने अवस्था नरहने।

फिल्डमा वादीको जग्गाको अवस्थिति देखिन आएको छ। साथै प्रतिवादीको पनि अलग स्थानमा जग्गा रहेको भन्ने नक्सा मुचुल्काबाट समेत देखिएको छ। वस्तुतः फिल्डमा वादी र प्रतिवादीहरूको जग्गा अलगअलग रहेको भन्ने देखिन आएको छ। नापी हुँदा दुई गा.वि.स. तर्फबाट अलगअलग नापी भएकोले नापीको नक्सामा जग्गा खप्टिएको भन्ने देखिन आयो। जग्गाको अस्तित्व फिल्डमा देखिरहेको अवस्थामा नापी कर्मचारीबाट नाप नक्सा गर्दा भएको प्राविधिक त्रुटिले वादीको साबिकदेखि दर्ता तिरो रहेको जग्गाको स्वामित्व हरण हुने वा गुम्ने भन्ने हुँदैन। कहींकतैबाट त्यस प्रकारको प्राविधिक त्रुटि हुन गएको भए सम्बन्धित निकायले सो त्रुटि सच्याई नागरिकको सम्पत्ति अधिकार सुनिश्चितता गरिदिन वाञ्छनीय हुने।

खोला पसेको कारणले एक व्यक्तिको जग्गा अर्काको जग्गामा मिसिन भएको कारणले मात्र कसैको जग्गामा भएको स्वामित्व परिवर्तन हुन सक्दैन। अकोलवा गा.वि.स.को जग्गावालाले सवगडा गा.वि.स.बाट नापी भएको जग्गामा नापी नक्सा सुधार भई नआएसम्म खिचोला गरेको मान्न मिलेन भनी भएको जिल्ला अदालतको फैसलालाई सदर गरेको पुनरावेदन अदालतको फैसला कायम रहन सक्ने नदेखिने।

अतः माथि विवेचित आधार कारणबाट

प्रतिवादीहरूको दर्ताअनुसारको जग्गा नक्सा मुचुल्काबाट पुगी रहेको देखिएको र वादीको कि.नं. ३८ को विवादित जग्गा प्रतिवादीहरूले भोग गरी खिचोला गरेको देखिन आएकोले वादी दाबी नपुग्ने ठहर्‍याएको रौतहट जिल्ला अदालतको फैसला सदर गर्ने गरी पुनरावेदन अदालत, हेटौँडाबाट मिति २०६६।१०।४ मा भएको फैसला मिलेको नदेखिँदा उल्टी भई विवादित न.नं. २१ को वादीको जग्गामा प्रतिवादीहरूले खिचोला गरेको ठहर्छ । सो ठहर्नाले वादीको जग्गामा प्रतिवादीहरूले गरेको खिचोला मेटाई वादीले चलनसमेत चलाई पाउने ।  
इजलास अधिकृत : रामु शर्मा  
कम्प्युटर: कृष्णमाया खतिवडा  
इति संवत् २०७३ साल फागुन २३ गते रोज २ शुभम् ।

- यसै लगाउको ०६७-सी-०९४६, जग्गा खिचोला चलन, शेख सहिद वि. शेख नसरुद्धिनसमेत भएको मुद्दामा पनि यसैअनुसार फैसला भएको छ ।

६

**मा.न्या.श्री विश्वम्भरप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०६९-WO-१४३०, उत्प्रेषण / परमादेश, अनिल क्षेत्री वि. राष्ट्रिय वाणिज्य बैंक, के.का. सञ्चालक समिति, सिंहदरबारसमेत

ओभरड्रन भएको रकमको ब्याज असुलउपर गर्ने बैंक नियमानुसारको कार्य भएको बैंकको निर्णयलाई स्वीकार गरी रकम बुझाई धितोसमेत फुकुवा गराई आफ्नो मतलब साध्य पूरा गरी प्रस्तुत रिट निवेदनमा फैसलाभन्दा बढी रकम लिएको भनी प्रश्न उठाई उपचारको खोजीमा अदालत, प्रवेश गरेको देखिँदा निवेदकलाई समर्पणको सिद्धान्तसमेतको आधारमा अदालतले न्यायको रोहमा मद्दत गर्न सक्ने स्थिति नदेखिने ।

अतः उल्लिखित विवेचित आधार कारणबाट निवेदकको दाबीअनुसारको फैसलाभन्दा बढी रकम लिएको भन्ने नभई ओभरड्रन भएको रकमको ब्याज असुलउपर गर्ने र ब्याज छुट सुविधा पाउनेसमेतको निर्णय बैंकबाट एकै मितिमा गराई सो निर्णय स्वीकार गरी कर्जासमेत चुक्ता गरिसकेको अवस्था देखियो । तसर्थ

निवेदन मागअनुसार आदेश जारी गर्न मिलेन प्रस्तुत रिट खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: टेकराज जोशी

कम्प्युटर: विष्णुदेवी श्रेष्ठ

इति संवत् २०७५ साल जेठ ७ गते रोज २ शुभम् ।

इजलास नं. १३

१

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई**, ०६६-सी-१०८३, जग्गा यकिन गरी रोक्का फुकुवा, शंकरलाल मल्लाह वि. नन्दलाल कुर्मीसमेत

पुनरावेदन अदालत, बुटवलबाट मिति २०६५।०१।३१ मा फैसला भएपछि प्रतिवादीको निवेदनबाट उक्त कि.नं. ६६२ को जग्गा फुकुवा भएको देखिन्छ । प्रतिवादीहरू नन्दलाल कुर्मी, हरिबहादुर यादव र शशी भण्डारी एक आपसमा मिली वादीको हक जाने र आफूहरूलाई फाइदा गर्ने उद्देश्यले कि.नं. ६६२ को जग्गाको ४ किल्ला कित्तै सिफारिस बनाई मिति २०६५।०५।३० मा नन्दलाल कुर्मीका नाउँमा नामसारी गराई निजबाट सोही मितिमा हरिबहादुर यादवका नाउँमा र मिति २०६५।०९।०१ मा शशी भण्डारीका नाउँमा राजीनामा गरी जग्गाको हक हस्तान्तरण गरेकाले निजहरूउपर रूपन्देही जिल्ला अदालतमा कित्तै मुद्दा चली प्रतिवादीमध्येका नन्दलाल कुर्मीले दाबीबमोजिम कित्तै गरेको ठहर भई मुद्दा अन्तिम भई बसेको देखिएबाट उक्त कि.नं. ६६२ को जग्गा पूर्वपत्रानुसार रोक्का भएकै मान्नु पर्ने ।

अतः माथि विवेचित आधार र प्रमाणहरूबाट हिरा कुर्मिनले सुखु मल्लाहलाई चार किल्ला उल्लेख गरी बिक्री गरेको पछि लगत नं.२८० कायम भएको जग्गा नै कि.नं.६६२ को विवादित जग्गा हो भन्ने स्पष्टसँग देखिएको अवस्थामा वादी दाबी पुन नसक्ने ठहर्‍याई गरेको सुरु रूपन्देही जिल्ला अदालतको मिति २०६४।०७।२९ को फैसलालाई मिति २०६५।०१।३१

मा सदर गर्ने गरेको पुनरावेदन अदालत, बुटवलको फैसला उल्टी भई वादी दाबीबमोजिम वादीको हकमा दाखिल खारेज प्रयोजनार्थ उक्त कि.नं.६६२ को जग्गा फुकुवा हुने।

इजलास अधिकृत: डल्लुराम चौधरी

कम्प्युटर: अर्जुन पोखरेल

इति संवत् २०७५ साल असार १८ गते रोज २ शुभम्।

२

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०७१-CR-१२०५, जालसाजी, लक्ष्मी शर्मा वि. राहुल विश्वकर्मासमेत**

कि.नं.१३७६ को जग्गा देवप्रसाद विश्वकर्माले रणबहादुर के.सी.लाई राजीनामा पारित गर्दा उक्त जग्गामा घर भएको तथ्य उल्लेख भएको पाइएन। देवप्रसाद विश्वकर्माले दाता मेनका सुनारबाट मिति २०६२।११।१८ मा राजीनामा पारित गराई लिँदासमेत उक्त जग्गामा घर भएको भन्ने उल्लेख भएको देखिएन। दाबीको उक्त जग्गामा २०६२ साल चैत्र महिनामा घर बनाई बसेका छौं भन्ने उल्लेख भएको भए पनि मिति २०६३।१२।०८ मा देवप्रसाद विश्वकर्माले रणबहादुर के.सी.लाई राजीनामा पारित गरी दिँदा घर उल्लेख भएको देखिँदैन। प्रतिवादीले उक्त जग्गा मिति २०६२।११।१८ मा लिई २०६२ साल चैत्र महिनामा घर बनाएको भन्ने उल्लेख भएको र २०६३ सालमा प्रतिवादी देवप्रसाद विश्वकर्माले रणबहादुर के.सी.लाई राजीनामा पारित गराई दिँदा घर लोप गरी राजीनामा गरी दिएको भन्ने अवस्थासमेत देखिन आउँदछ। उक्त जग्गामा घर छ, छैन ? छ भने घर कसले कहिले बनाएका हुन् ? घरमा कसको भोग छ ? भन्ने तथ्य नै प्रस्ट हुन नआएको अवस्थामा वादी दाबी पुग्न नसक्ने ठहर्‍याई सुरु अदालतबाट फैसला भएको देखिन्छ। सम्बद्ध कुराको बुझ्नु पर्ने प्रमाण नबुझी विवादित प्रश्नको समग्रमा विवेचना र निरूपण नगरी सुरुबाट फैसला भएको देखिँदा सुरुको फैसला बदर हुने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, बुटवलबाट भएको फैसलालाई अन्यथा मान्न नमिल्ने।

अतः विवेचित आधार र कारणबाट वादी दाबी

पुग्न नसक्ने ठहरी रूपन्देही जिल्ला अदालतबाट मिति २०७०।१।२४ मा भएको फैसला बदर गरी दाबीको कि.नं. १३७६ को ज.वि. ०-०-५ जग्गामा अवस्थित घर के कुन मितिमा को कसले निर्माण गरेको हो ? भन्ने सम्बन्धमा सर्जमिनलगायत जे जो बुझ्नु पर्ने हो बुझी पुनः निर्णय गर्नु भनी मिसिल सुरु रूपन्देही जिल्ला अदालतमा पठाई दिने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, बुटवलबाट मिति २०७१।०८।१५ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: विकास श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर ४ गते रोज २ शुभम्।

यसै लगाउको निम्न मुद्दाहरूमा पनि यसैअनुसार फैसला भएका छन्:

- ०७१-CR-१३४९, लिखत दर्ता बदर नामसारी, लक्ष्मी शर्मा वि. राहुल विश्वकर्मासमेत
- ०७१-CR-१३५०, बहाल दिलाई घर खाली गराई पाऊँ, लक्ष्मी शर्मा वि. राहुल विश्वकर्मासमेत

३

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई, ०७३-WO-१२७५, उत्प्रेषण / परमादेश, लब्जीबहादुर कार्की वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत, बबरमहलसमेत**

काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट मिति २०७२।११।२० मा भएको आदेशानुसार मिति २०७३।१२।३।४ मा राजधानी नामक राष्ट्रिय दैनिक पत्रिकामा प्रकाशित रिट निवेदक / प्रतिवादीका नामको म्याद सूचनामा रिट निवेदक / प्रतिवादीले स्वीकार गरेको ठेगाना नै उल्लेख भई म्याद सूचना जारी भएको पाइयो। रिट निवेदकले आफ्नो ठेगाना सोलुखुम्बु जिल्ला वासा गा.वि.स. वडा नं. ३ परिवर्तित काठमाडौं जिल्ला टोखा नगरपालिका वडा नं. १२ हाल पुनः परिवर्तन काठमाडौं जिल्ला टोखा नगरपालिका वडा नं. ८ गौंगबु वानियाटार बस्ने भन्ने उल्लेख गरेको देखिन्छ। यी रिट निवेदकले लेनदेन (बिगो) मुद्दामा हाजिर भई तारेखमा रहन पाउँ भनी काठमाडौं जिल्ला अदालतमा



मिति २०७४।०१।२१ मा दिएको निवेदनपत्रमा आफ्नो ठेगाना काठमाडौं जिल्ला बुढानिलकण्ठ नगरपालिका वडा नं. १४ भनी उल्लेख गरेको मिसिल संलग्न सोही निवेदनपत्रको छायाँप्रतिबाट देखिन आउँछ । त्यसैगरी लेनदेन (बिगो) मुद्दामा काठमाडौं जिल्ला अदालत, तहसिल शाखाबाट यी रिट निवेदक / प्रतिवादीका नाममा लेनदेन मुद्दाको फिराद-पत्रमा उल्लिखित ठेगानामा नै जारी भएको ३५ दिने सूचना निवेदकका श्रीमती अन्जु कार्कीले सहिछाप गरी बुझी मिति २०७३।१२।१५ मा तामेल भएको देखिन्छ । उक्त सूचना तामेल हुँदा तामेली बेहोरामा गोकर्णेश्वर नगरपालिकाबाट हाल बुढानिलकण्ठ वडा नं. ८ मा बसोबास भएको हुँदा सोही ठाउँमा बसी म्याद बुझी लिएको भन्ने बेहोरा उल्लेख गरी सहिछाप गरी रिट निवेदकका श्रीमती अन्जु कार्कीले म्याद सूचना बुझी लिएको मिसिल संलग्न तामेली म्यादको छायाँप्रतिबाट देखिन्छ । विभिन्न निवेदनपत्रमा यी रिट निवेदकले आफ्नो ठेगाना भिन्ना भिन्नै उल्लेख गरेको पाइयो । यी रिट निवेदक / प्रतिवादीले आफ्नो ठेगाना स्पष्टसँग यही हो भनी एउटा वतन किटान नगरी विभिन्न ठेगाना देखाएको अवस्था छ । तथापि निवेदकको श्रीमती अन्जु कार्कीले लेनदेन (बिगो) मुद्दाको काठमाडौं जिल्ला अदालत, तहसिल शाखाबाट जारी भएको ३५ दिने म्याद बुझ्दा गोकर्णेश्वर नगरपालिकाबाट हाल बुढानिलकण्ठ वडा नं. ८ मा बसोबास भएको भन्ने बेहोरा लेखाई म्याद बुझ्नेकोसमेत देखिन्छ । यसबाट उक्त लेनदेन मुद्दाको फिरादपत्रमा उल्लिखित ठेगानामा निज रिट निवेदकको नाममा जारी भएको म्याद राजधानी नामक राष्ट्रिय दैनिक पत्रिकामा मिति २०७३।१२।३।४ मा प्रकाशित गरिएकोलाई बेरीतको मान्न नमिल्ने ।

अतः विवेचित आधार र कारणबाट लेनदेन मुद्दामा काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट यी रिट निवेदक / प्रतिवादीका नाममा तामेल भएको म्याद सूचनालाई बेरीतको मान्न मिलेन । लेनदेन मुद्दामा काठमाडौं जिल्ला अदालतबाट रिट निवेदक / प्रतिवादीको नाममा मिति २०७३।१२।०३।०४ को राजधानी नामक राष्ट्रिय दैनिक पत्रिकामा प्रकाशित म्याद सूचना जिल्ला

अदालत, नियमावली, २०५२ को नियम २२क. बमोजिम प्रकाशित भई रीतपूर्वक तामेल भएको देखिँदा निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी गर्न मिलेन । रिट निवेदन खारेज हुने ।

इजलास अधिकृत: विकास श्रेष्ठ

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर १२ गते रोज ३ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री ईश्वरप्रसाद खतिवडा र मा.न्या.श्री अनिलकुमार सिन्हा, ०७१-CR-१४६२, जबरजस्ती करणी, मनबहादुर वि.क. (कामी) वि. नेपाल सरकार**

प्रतिवादीउपरको किटानी जाहेरी, पीडित परिवर्तित नाम 'ख' कुमारीले अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष गरिदिएको कागज र सो कागजलाई समर्थित हुने गरी सुरु अदालतमा गरेको बकपत्र, पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनसमेतबाट पीडितउपर जबरजस्ती करणी भएको तथ्य स्थापित भएको देखिन आयो । प्रतिवादी मनबहादुर वि.क.ले मौकामा अनुसन्धान अधिकारी तथा सुरु अदालतसमक्ष बयान गर्दा पीडित 'ख' कुमारीलाई रकसीको नशामा जबरजस्ती करणी गरेको हुँ भनी कसुरमा साबित रही बयान गरेको, जाहेरवाली परिवर्तित नाम 'क' कुमारी (पीडितको आमा तथा प्रतिवादीको श्रीमती) ले आफ्नो जाहेरी बेहोरा पुष्टि हुने गरी सुरु अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरेको, घटना विवरण कागज गर्ने मानिसहरु सीतादेवी वि.क.समेतले घटना विवरण कागजलाई समर्थित हुने गरी अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गर्दा प्रतिवादीले आरोपित कसुर गरेका हुन् भनी लेखाइदिएको देखिन आउने ।

जाहेरवाला प्रतिवादीको श्रीमती नाताको र पीडित प्रतिवादीको नाबालिका छोरी नाताको व्यक्ति भएकोमा विवाद देखिँदैन । यी प्रतिवादी विरुद्ध निजकै श्रीमतीबाट किटानी जाहेरी परेको छ । निजले जाहेरी बेहोरालाई समर्थित हुने गरी सुरु अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरेको देखिन्छ । पीडित 'ख' कुमारीले समेत अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष गरेको बयान कागजलाई समर्थित हुने गरी अदालतमा उपस्थित भई आफ्नो बाबु नाताको प्रतिवादीले आफूलाई पटकपटक डर, धाक र

धम्की देखाई जबरजस्ती करणी गरेको भनी उल्लेख गरी बकपत्र गरेको पाइन्छ। पीडितको स्वास्थ्य परीक्षण प्रतिवेदनबाट पनि निजउपर करणी भएको तथ्य समर्थित भएको देखिन्छ। प्रतिवादीले मौकामा अनुसन्धान अधिकारी तथा सुरु अदालतसमक्ष आफूले छोरीलाई मुख छोपी आवाजसमेत निस्कन नदिई जबरजस्ती करणी गरेको भनी कसुरमा साबित भई सिलसिलेवार रूपमा बयान गरेको पाइन्छ। तसर्थ, प्रतिवादी मनबहादुर वि.क.ले आफ्नी छोरी पीडित परिवर्तित नाम 'ख' कुमारीलाई जबरजस्ती करणी गरेको तथ्य पुष्टि हुन आएकोले जबरजस्ती करणीको महलको ३(३) नं. बमोजिम निज प्रतिवादीलाई ८ (आठ) वर्ष कैद, हाडनाता करणीको १ नं. बमोजिम थप १० (दश) वर्ष कैद गरी कुल १८ (अठार) वर्ष कैद सजाय भई जबरजस्ती करणीको महलको १० नं. बमोजिम प्रतिवादीबाट पीडितलाई एकलाख रुपैयाँ क्षतिपूर्तिसमेत भराइदिने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, पोखराबाट मिति २०७१।०९।०७ मा भएको फैसला मनासिब नै देखियो। पुनरावेदन अदालत, पोखराबाट मिति २०७१।०९।०७ मा भएको फैसला मिलेको देखिँदा सदर हुने।

इजलास अधिकृत: लोकबहादुर हमाल

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७३ साल मङ्सिर २७ गते रोज १ शुभम्।

इजलास नं. १४

१

मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री सपना प्रधान मल्ल, ०६९-WO-०७८६, उत्प्रेषण / परमादेश, रमेशकुमार यादव वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय, सप्तरीसमेत

विपक्षीहरूको नाउँमा अदालतको अन्तरिम आदेश कायम रहेको र ३-३ वटा कानूनी उपचारका रिट निवेदनहरू अदालतमै विचाराधीन हुँदाकै अवस्थामा निवेदकउपर कारबाहीको प्रक्रिया सुरु गरेको र सोही प्रक्रियाको आधारमा निवेदकलाई

नोकरीबाट हटाउने कार्य भएको देखिन्छ। नोकरीबाट हटाउने काम अदालतबाट मिति २०६९।३।१७ मा रिट निवेदनमा अन्तिम आदेश भएपश्चात् भएको भए पनि निवेदकलाई कारबाही गर्ने सम्पूर्ण प्रक्रियाहरू अन्तरिम आदेश कायमै रहेको अवस्थामा भएको देखिन्छ। यसरी एउटा प्रहरी जवान जस्तो सानो पदको व्यक्ति आफ्नो न्यायको खोजीमा अदालत गएकै कारणले र प्रहरी कार्यालयमा लेनदेनमा कागज गर्न नमानेकै कारणले पूर्वाग्रही पन राखी निजउपर कारबाहीको प्रक्रिया सुरु गरेको देखिने।

अदालतमा व्यक्ति न्यायको खोजीमा जानु निजको कुनै अपराध होइन। न्यायको बाटोको रोजाइ तथा आफ्नो हक अधिकारको संरक्षणमा कानूनी उपचार पाउने व्यक्तिको मौलिक अधिकार पनि हो। खराब आचरणमा कारबाही गरी सजायस्वरूप बर्खास्त गर्ने अधिकार प्रत्यर्थीहरूमा भए तापनि प्रत्यर्थीहरूले सो अधिकारको प्रयोग पनि कानून र विधिसम्मत तरिकाले गर्नुपर्ने हुन्छ। अदालतबाट भएको अन्तरिम आदेश कायमै रहेको समयमा उक्त अन्तरिम आदेशलाई अनदेखा गरी प्रत्यर्थीहरूबाट यी रिट निवेदकउपर कारबाही गर्ने प्रक्रियालाई अगाडि बढाएको कार्य न्यायसङ्गत भएको देखिन नआउने।

निवेदकले अदालत, प्रवेश गरी न्याय मागेकै आधारमा नै निजउपर पूर्वाग्रह राख्नु न्याय प्रशासनको महत्त्वपूर्ण पाटोका रूपमा रहेका विपक्षी प्रहरी कार्यालयहरूमा कार्यरत अधिकारप्राप्त जिम्मेवार व्यक्तिलाई सुहाउने देखिँदैन। अन्तरिम आदेशको अर्थ अन्तरिम आदेश खारेज नभएसम्म वा मुद्दाको अन्तिम किनारा नभएसम्म कुनै काम कारबाहीलाई यथास्थितिमा राख्नु तथा विपक्षीले निवेदकको विरुद्धमा गर्न लागेको कारबाही यथास्थितिमा राख्नु भन्ने हो। अदालतले स्पष्ट रूपमै "निवेदकलाई पेसा, रोजगार गर्न अवरोध नगर्नु, कानूनविपरीत नथुन्नु, नथुनाउनु, निजको इच्छाविपरीत जबरजस्ती कुनै किसिमका कागज नगर्नु, नगराउनु" भनी स्पष्ट (Explicit) आदेश दिँदादिँदै संविधान प्रदत्त धारा १७ को स्वतन्त्रताको हक र धारा ४६ को संवैधानिक

उपचारको हक तथा अन्तरिम आदेशको बर्खिलाप हुने गरी निवेदकलाई सेवाबाट हटाउने जिल्ला प्रहरी कार्यालय, सप्तरीको मिति २०६९।४।३० को निर्णय तथा सो निर्णयलाई सदर गर्ने पूर्वक्षेत्रीय प्रहरी कार्यालय, रानी विराटनगरको मिति २०६९।८।१५ को निर्णय उत्प्रेषणको आदेशद्वारा बदर गरिदिएको छ । अब यी रिट निवेदक रमेशकुमार यादवलाई निज कार्यरत रहेको पदमा पुनर्वहाली गरी कानूनबमोजिमको सुविधासमेत दिनु भनी विपक्षीहरूका नाउँमा परमादेशको आदेशसमेत जारी हुने ।

इजलास अधिकृत: विष्णुप्रसाद पौडेल

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७५ साल असार ६ गते रोज ४ शुभम् ।

२

**मा.न्या.डा.श्री आनन्दमोहन भट्टराई र मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी.**, ०७०-CR-११५२ र ०७०-CR-१२७४, १३९३, ०७१-RC-००९२, जबरजस्ती करणी / कर्तव्य ज्यान, बुधबहादुर पौडेल वि. नेपाल सरकार र नेपाल सरकार वि. तेजबहादुर कुँवरसमेत, निशान के.सी.समेत वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. तेजबहादुर कुँवर

घटना घटेको अघिल्लो दिनदेखि घटना घटी सकेपछि समेत यी चारै जना प्रतिवादीहरूका बीचमा एक अर्कोसँग निरन्तर रूपमा सम्पर्कमा रहिरहेको स्थितिबाट पनि यिनीहरू छुट्टाछुट्टै थिए र यिनीहरूबीच प्रस्तुत घटनामा कुनै संलग्नता छैन भन्न सक्ने स्थिति र अवस्था छैन । घटनाका लागि यी चारै जना प्रतिवादीहरू पहिलेदेखि नै घटना घटाउने मौकाको खोजी गरिरहेका, प्रतीक्षाको गतिविधिबारे निरन्तर जानकारीमा रहेका र वारदातको दिन यिनीहरू पूरा तयारीका साथ वर्तनेको पुलमा जम्मा भएका देखिन्छन् । यी सबै प्रतिवादीहरू २०६७।६।३ गते साँझ ५.०० बजे पुलमा र ६.३० बजे पातिचौर बजारमा पुगेको भन्ने देखिएको छ । तर सोबीचको

१.३० घण्टाको समयमा निजहरू कहाँ थिए र के-के गरे भनी गणेश भन्ने तेजबहादुरबाहेकका अन्य प्रतिवादीहरूले बताउन सकेका छैनन् । यसरी वारदातको परिस्थिति, अवस्था, समय र पीडितको चोटसमेतको प्रकृतिसमेतलाई हेर्दा घटना गणेश भन्ने तेजबहादुर एकलैले मात्र नभई यी अन्य प्रतिवादीहरू प्रकाश के.सी. भन्ने निसान के.सी., अमृत कुँवर र बलबहादुर भन्ने बुधबहादुरसमेत भई घटाएको देखिने ।

जाहेरवालाहरूको किटानी जाहेरी, घटनास्थल प्रकृति मुचुल्का, लास जाँच मुचुल्का, शव परीक्षण प्रतिवेदन, प्रतिवादीहरूको मौकामा र अदालतमा समेत वारदात नजिक रहेको वर्तनेको पुलमा सामूहिक उपस्थिति रहेको भनी गरेको बयान, प्रतीक्षा पौडेलले घाँस काटिरहेको अवस्थामा वर्तनेको पुलमा असामान्य अवस्थामा गणेश भन्ने तेजबहादुर कुँवर र बलबहादुर भन्ने बुधबहादुर पौडेललाई देख्ने प्रविता सुवेदी र विष्णु पौडेल, घटना घटेको साँझमा निशान के.सी.लाई हतार हतार अवस्थामा दौडिँदै गरेको अवस्थामा देख्ने गुमा पौडेल, गिड्डी कुट्ने ठाउँमा असहज अवस्थामा तेजबहादुर र बुधबहादुरलाई देख्ने कविता गुरुङसमेतका अन्य व्यक्तिहरूको जाहेरीलाई समर्थन गरी गरेको कागज, घटना घट्नुको अघिल्लो दिनदेखि घटना घटिसकेपछि पक्राउ पूर्वसम्मको प्रतिवादीहरूबीच भएको Call Detail Report समेतका कुराहरू, घटनास्थलमा भएको संघर्ष र घटना एक जनाले मात्र घटाउन सक्ने अवस्था नरहेकोसमेतका परिस्थितिजन्य प्रमाणहरूको आधारमा यी प्रतिवादीहरू मध्येका गणेश कुँवर भन्ने तेजबहादुर कुँवर, बलबहादुर भन्ने बुधबहादुर पौडेल क्षेत्री, प्रकाश के.सी. भन्ने निसान के.सी. र अमृत कुँवरसमेतका प्रतिवादीहरूले करणी र हत्यामा संलग्न रहेको भनी मुख साबित भएको अवस्था नभए पनि सामूहिक रूपमा निज चारैजनाले प्रतीक्षा पौडेललाई जबरजस्ती करणी गरी मारेको कुरा विवादास्पद रूपमा

पुष्टि हुन आयो । तसर्थ निज प्रतिवादीहरू गणेश कुँवर भन्ने तेजबहादुर कुँवर, बलबहादुर भन्ने बुधबहादुर पौडेल क्षेत्री, प्रकाश के.सी. भन्ने निसान के.सी. र अमृत कुँवरलाई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १३(३) बमोजिम सजाय हुने ठहर्‍याएको पुनरावेदन अदालत, बागलुङको फैसलालाई अन्यथा भन्नुपर्ने नदेखिने ।

मिसिल संलग्न कागज प्रमाण हेर्दा, गणेश भन्ने तेजबहादुर कुँवर, बलबहादुर भन्ने बुधबहादुर पौडेल, प्रकाश के.सी. भन्ने निशान के.सी. र अमृत कुँवरले मादक पदार्थ र गाँजा सेवन गरी उन्मत्त भई बाटो कुरी एकलै पारी प्रतिक्षा पौडेलले घाँस काटिरहेको मौका पारी यौन तृष्णा मेटाउन पालैपालो जबरजस्ती करणी गरी पोल खुल्ने डरले अपराधबाट बच्नका लागि टाउकोमा ढुङ्गाले प्रहार गरी कर्तव्य गरी मारेकोमा पूर्ण विश्वास लाग्दछ भनी मौकामा कागज गर्ने देवबहादुर अर्खेली, शालिकराम पौडेल र बमबहादुर पौडेलसमेतले एकै मिलानको छुट्टाछुट्टै कागजबाट देखिन्छ । प्रस्तुत कागज बेहोरालाई मृतकको शव परीक्षण प्रतिवेदनमा उल्लेख भएको “मृतकको योनिभित्रको भागमा मांशपेशी च्यातिएको चोट भएको (lacerated wound at posterior wall of vagina), मृतकको योनि च्यातिएको (hymen torn)” भन्ने बेहोरा र तथ्यले थप पुष्टि गरेको अवस्थासमेत पाइयो । यसबाट पनि हत्याको मुख्य कारण जबरजस्ती करणी गर्न खोज्दा पीडितले गरेको प्रतिरोध हो भन्ने देखिन्छ । १५ वर्षकी प्रतिक्षा पौडेललाई जबरजस्ती करणी गर्ने कार्यमा यी चारैजना प्रतिवादीहरू गणेश भन्ने तेजबहादुर कुँवर, बलबहादुर भन्ने बुधबहादुर पौडेल, अमृत कुँवर र प्रकाश भन्ने निसान के.सी.समेतले सामूहिक रूपमा जबरजस्ती करणी गरेको कुरा मिसिल संलग्न कागज प्रमाणसमेतबाट पुष्टि भएको देखिएकाले निज प्रतिवादीहरू गणेश भन्ने तेजबहादुर कुँवर, बलबहादुर भन्ने बुधबहादुर पौडेल, अमृत कुँवर र प्रकाश भन्ने निसान के.सी.ले मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको

महलको १ नं. विपरीत ऐ. ऐनको देहाय ३(३) नं. र ३ (क) नं. समेतको कसुर अपराध गरेको देखिन आउने ।

तसर्थ माथि विवेचित आधार र कारणसमेतबाट यी प्रतिवादीहरू गणेश भन्ने तेजबहादुर कुँवर, बलबहादुर भन्ने बुधबहादुर पौडेल क्षेत्री, प्रकाश भन्ने निशान के.सी. र अमृत कुँवरको उक्त कार्य मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १ नं., १३(३) नं. र ऐ. ऐनको जबरजस्ती करणीको महलको ३(३) नं. र ३(क) नं. को समेत कसुर गरेको देखिए पनि सजायको हकमा यी प्रतिवादीहरूलाई सोही ऐनको ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम जन्मकैदको सजाय गर्ने गरी फैसला भएकोले मुलुकी ऐन, दण्ड सजायको ८ नं. ले जन्मकैद भई सकेपछि अरू सजाय नखापिने हुँदा मिति २०७०।५।१८ मा भएको पुनरावेदन अदालत, बागलुङको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउनुपर्छ भन्ने प्रतिवादीहरू बलबहादुर भन्ने बुधबहादुर पौडेल, प्रकाश भन्ने निसान के.सी. र अमृत कुँवरको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

पुनरावेदन नगरी बसेका गणेश भन्ने तेजबहादुर कुँवरको हकमा पेस हुन आएको साधकसमेत माथि उल्लिखित आधार कारणबाट सदर हुने ठहर्छ । साथै माथि उल्लेख भएको आधार कारणबाट प्रतिवादीमध्येका फणिन्द्र भन्ने फलिन्द्र कुँवरले अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर्‍याई भएको पुनरावेदन अदालत, बागलुङको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ठहर्छ । निजउपर समेत अभियोग माग दाबीअनुसार सजाय गरिपाउँ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिर पुग्न नसक्ने ।

प्रतिवादीहरू मध्येका बलबहादुर भन्ने बुधबहादुर पौडेल क्षेत्री र प्रकाश के.सी. भन्ने निसान के.सी. मृतक प्रतिक्षा पौडेलको हाडनाताभित्रको देखिएको हुँदा हाडनाता करणीको २ नं. बमोजिम थप सजाय हुनुपर्ने भनी लिइएको माग दाबीका सम्बन्धमा

पनि यी प्रतिवादीहरू बलबहादुर भन्ने बुधबहादुर पौडेल क्षेत्री र प्रकाश के.सी. भन्ने निसान के.सी.लाई जन्मकैदको सजाय ठहर भइसकेकोले, दण्ड सजायको ८ नं. अनुसार सोतर्फ थप सजाय गरिरहनु पर्ने नदेखिने।

इजलास अधिकृत: विष्णुप्रसाद पौडेल

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७५ साल वैशाख ३१ गते रोज २ शुभम्।

**इजलास नं. १६**

**मा.न्या.श्री प्रकाशमान सिंह राउत र मा.न्या.श्री उम्बरबहादुर शाही**, ०७४-RC-००९७, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. मानबहादुर डाँगी

जाहेरवालाको किटानी जाहेरी, मृतकका बाबु कुलबहादुर खड्काले मौकामा अनुसन्धान अधिकृतसमक्ष जाहेरी दरखास्तलाई समर्थन हुने गरी गरेको बयान बेहोरा, लास जाँच प्रकृति मुचुल्का, शव परीक्षण प्रतिवेदन, घटनास्थलमा बरामद भएका सरसमानका सन्दर्भमा प्रतिवादी मानबहादुर डाँगीकी श्रीमती पवि डाँगीले गरिदिएको सनाखत कागजसमेतका आधार प्रमाणबाट मृतक तुलबहादुर खड्काको मृत्यु प्रतिवादी मानबहादुर डाँगीको बन्दुकको गोलीबाट नै भएको भन्ने कुरा विवादास्पद रूपमा पुष्टि हुन आउने।

प्रतिवादी मानबहादुर डाँगीलाई जिल्ला अदालत र पुनरावेदन अदालतले अभियोग माग दाबीबमोजिम मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १३(१) बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गरेको फैसला मिले नमिलेको सम्बन्धमा विचार गर्दा मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १३(१) मा “धार भएको वा नभएको जोखिमी हतियार गैहले हानी रोपी घोची ज्यान मारेमा .....सर्वस्वसहित जन्मकैदको सजाय गर्नुपर्छ” भन्ने कानूनी व्यवस्था रहेको छ। प्रस्तुत मुद्दाको घटनाको वारदातमा प्रतिवादी मानबहादुर

डाँगीले आफ्नै साथमा रहेको अनुमति पत्रसमेत नभएको भरुवा बन्दुकले आफ्नै सँग साथमा रहेका तुलबहादुर खड्काको घाँटीजस्तो संवेदनशील ठाउँमा गोली हानी घाइते भएका तुलबहादुर खड्कालाई उपचार गर्न लैजानुको साटो उल्टै घाइते अवस्थामा छाडी भागेकोसमेतबाट निज प्रतिवादीले अभियोग माग दाबीअनुसारको कसुर अपराध गरेको नै देखिने।

तसर्थ माथि उल्लिखित आधार र कारणसमेतबाट प्रतिवादी मानबहादुर डाँगीको उक्त कार्य मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धीको १ नं. तथा १३(१) नं. विपरीतको कसुर भएकाले सोही कसुरमा सोही ऐनको १३(१) नं. बमोजिम सर्वस्वसहित जन्मकैद हुने ठहर गरी सुरु जिल्ला अदालतबाट मिति २०७४।२।३१ मा भएको फैसला सदर गर्ने गरी मिति २०७४।०५।२१ मा उच्च अदालत, सुर्खेतबाट भएको फैसला मिलेकै देखिँदा पेस हुन आएको साधक सदर हुने।

इजलास अधिकृत: विष्णुप्रसाद पौडेल

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७५ साल वैशाख २३ गते रोज १ शुभम्।

**इजलास नं. १८**

१

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७१-CR-०९४९, लागु औषध खैरो हेरोइन, नेपाल सरकार वि. धर्मराज रैदास चमार

मौखिक प्रमाण प्रमाणका रूपमा ग्राह्य हुनको लागि प्रत्यक्ष देखेको, सुनेको वा थाहा पाएको हुनुपर्ने हुन्छ। आफूले प्रत्यक्ष देखेको, सुनेको आधारमा थाहा नपाई अरूले भनेको सुनेको आधारमा व्यक्त गरेको कुरालाई प्रमाणका रूपमा सामान्यतया लिन मिल्ने नदेखिने।

मौकामा बुझिएका व्यक्तिहरूले मौकामा गरिदिएको कागजमा आफूहरूले यी प्रत्यर्थी /

प्रतिवादीले बरामदी लागु औषध बिक्री गरेको भन्ने सुनेर पछि बुझ्दै जाँदा मात्र थाहा पाएको हो भनी लेखाएको र सोही अनुसन्धानको भनाइलाई पनि अदालतमा आई बकपत्र गरी समर्थन गर्न नसकेको अवस्थामा निजहरूको अनुसन्धानको भनाइलाई प्रमाणका रूपमा लिई यी प्रत्यर्थी / प्रतिवादीलाई दोषी ठहर गर्न मिल्ने देखिन आएन । त्यसैले मौकामा बुझिएका व्यक्तिहरूको भनाइबाट यी प्रत्यर्थी / प्रतिवादीले कसुर गरेको देखिन आएको छ भन्ने वादी नेपाल सरकारको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

सहअभियुक्तहरूले यी प्रत्यर्थी / प्रतिवादीउपर पोल गरेको भए पनि निजहरूको पोल अन्य कुनै विश्वसनीय स्वतन्त्र प्रमाणहरूबाट पुष्टि हुन सकेको पाइँदैन । सहप्रतिवादीहरूले यी पल्टु भन्ने धर्मराज रैदासबाट लागु औषध खरिद गरेको भने पनि निजहरूले अनुसन्धानमा र अदालतमा फरक फरक परिमाण खरिद गरेको भनी उल्लेख गरिदिएबाट निजहरूको पोल बेहोरा पनि आपसमा फरक परी मिलेको अवस्था देखिँदैन । मौकामा बुझिएका व्यक्तिहरूले केवल सुनेको आधारमा मात्र निज प्रतिवादीले लागु औषध खैरो हेरोइन बिक्री गरेको भनेकोले माथि उल्लेख भएअनुसार निजहरूको उक्त भनाइलाई प्रमाणका रूपमा लिन मिल्ने नदेखिने ।

प्रतिवादीबाट लागु औषध फेला नै नपरेको जस्ता अवस्थामा प्रमाण पुऱ्याउने भार प्रतिवादीमा नभई कसुर प्रमाणित गर्ने भार वादी पक्षमा नै रहन जाने र वादी नेपाल सरकार पक्षबाट पेस भएका प्रमाणहरूले शङ्कारहित रूपले अभियोग प्रमाणित हुन सकेको अवस्था नहुँदा प्रतिवादीलाई कसुरदार कायम गर्न मिल्ने नदेखिने ।

प्रत्यर्थी / प्रतिवादीको सँगसाथबाट लागु औषध तथा सोमा प्रमाण लाग्ने कुनै चिज वस्तु बरामद नभएको, मौकामा बुझिएका व्यक्तिको भनाइ सुनेको आधारमा मात्र भएको र सो भनाइ पनि अदालतमा

समर्थन हुन नआएको जस्ता कारणबाट यी प्रतिवादीको अनुसन्धानको साबिती बयान र सहप्रतिवादीहरूको यी प्रतिवादीउपरको पोल पुष्टि हुन नसकेकोले प्रतिवादी पल्टु भन्ने धर्मराज रैदास चमारलाई आरोपित कसुरमा कसुरदार मान्न मिल्ने नदेखिने ।

अतः विवेचित आधार, कारण र प्रमाणहरूबाट प्रत्यर्थी / प्रतिवादी पल्टु भन्ने धर्मदास रैदास चमारले अभियोग दाबी अनुसारको कसुर गरेको पुष्टि हुन नआएकोले निजलाई अभियोग दाबीअनुसार सजाय गर्ने ठहऱ्याई सुरु कपिलवस्तु जिल्ला अदालतको मिति २०६९।१२।११ को फैसला सो हदसम्म उल्टी गरी निज प्रत्यर्थी / प्रतिवादीलाई सफाइ दिने ठहऱ्याई पुनरावेदन अदालत, बुटवलबाट मिति २०७१।३।२ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: यदुराज शर्मा

कम्प्युटर: सिजन रेग्मी

इति संवत् २०७४ साल मङ्सिर १० गते रोज १ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री तेजबहादुर के.सी. र मा.न्या.श्री बमकुमार श्रेष्ठ**, ०७३-CI-११०६, अंश नामसारी, सीतादेवी शर्मा तिमिल्सिना वि. लवकुश के.सी.

सनाखत बेहोरा, सोको आधारमा वादीले प्राप्त गरेको नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्र र पञ्जिकाधिकारीको कार्यालयबाट जारी भएको जन्मदर्ता प्रमाणपत्रहरू अन्यथा भएको भन्ने देखिँदैन । एउटी आमाले प्रतिवादी वासुदेवसँगको सम्बन्धका कारण रहेको गर्भबाट वादीको जन्म भएको हो भनी लेखाइदिएको बयान बेहोराले नाता सम्बन्धको मामलामा अहम् स्थान राख्ने हुँदा वस्तुनिष्ठ प्रमाणको अभावमा प्रस्तुत मुद्दाको सन्दर्भमा नाताको विषयलाई लिएर वासुदेव तिमिल्सिना स्वयम्ले भनेको कुरालाई अन्यथा भन्नुपर्ने पनि नदेखिने ।

आफैले गराएको जन्मदर्ता र आफैले सनाखत

गरी नागरिकता बनाई दिइसकेका कुरामा प्रतिवादी वासुदेव विवन्धित हुने नै देखिने ।

DNA परीक्षण एउटा वैज्ञानिक पद्धति हो । जसले नाता सम्बन्धको विवादमा समेत अहम् भूमिका राख्दछ । त्यसमा कुनै द्विविधा देखिँदैन । तर स्वयम् आफैँले सनाखत गरी नेपाली नागरिकता दिलाउने, जन्मदर्ता प्रमाणपत्र बनाउनेजस्ता प्र.वासुदेव तिमिल्सिनाको कार्य र आचरण एवम् व्यवहारबाट प्रतिवादीले स्वीकारीसकेको देखिँदा सो विषयमा प्र.वासुदेव तिमिल्सिना प्रमाण ऐनमा भएको दफा ३४ को व्यवस्थाअनुसार विवन्धित रहेको अवस्था भएकोले DNA परीक्षणको प्रतिवादीको माग स्वाभाविक नभई उपयुक्तसमेत देखिँदैन । किनकि वादीले प्राप्त गरेको नागरिकता जुन प्रतिवादीको सनाखतको आधारमा निजले प्राप्त गरेका छन् । प्रतिवादी स्वयम्को प्रयासले वादीको जन्मदर्ता प्रमाणपत्र जारी भएको अवस्था देखिन्छ । नाता सम्बन्ध कायम हुनको लागि अन्यथा प्रमाणित नभएको ती स्वतन्त्र प्रमाणहरूको अस्तित्वलाई विनाकारण नजरअन्दाज गर्न मिल्ने देखिँदैन । त्यतिमात्र होइन आमा स्वयमूले प्रतिवादी वासुदेव र मेरो सम्बन्धको कारणबाट रहेको गर्भबाट लवकुशको जन्म भएको हो भनी लेखाएको कुराको पनि प्रस्तुत मिसिलमा आफ्नै स्थान रहेको पाइन्छ । एउटी आमाले भनी लेखाएको बेहोरालाई इन्कार गरी अन्यथा भन्नुपर्ने अवस्था र स्थितिसमेत नदेखिने ।

सनाखत कागज, नेपाली नागरिकताको प्रमाणपत्र, जन्मदर्ता प्रमाणपत्र र आमा दिलशेर पूजाले गरिदिएको बयानजस्ता प्रमाणहरूबाट वादी लवकुश प्रतिवादी वासुदेव शर्मा तिमिल्सिना र दिलशेर पूजाबीचको सम्बन्ध भई जन्मेका छोरा हुन् भन्ने कुरा देखिइसकेपछि प्रमाणित भइसकेको कुरालाई प्रमाणित गर्न अरु थप जाँचपडताल र खोजबिनको आवश्यकता देखिँदैन । बाबु-छोराको नाता प्रस्तुत भएका प्रमाणबाट प्रमाणित भइसकेपछि DNA जाँचको थप कारबाहीको

आवश्यकता नदेखिने ।

विवाद निरूपणको लागि अन्य प्रमाण यथेष्ट नरहेमात्र DNA परीक्षणको साहारा लिई विवादको निर्व्योँल गर्न वाञ्छनीय देखिन्छ । त्यसैले नातासम्बन्धी कुरामा यकिन हुन DNA गराउनै पर्ने भनी पुनरावेदकले लिएको जिकिर, पुनरावेदकतर्फका विद्वान् कानून व्यवसायीको बहस जिकिरसँग सहमत हुन सक्ने अवस्था नरहने ।

तसर्थ उल्लिखित आधार कारण र प्रतिपादित सिद्धान्तसमेतबाट वादी लवकुश र प्रतिवादी वासुदेव शर्मा तिमिल्सिनाको बीच बाबु-छोराको नाता सम्बन्ध कायम भई वादीले प्रतिवादी वासुदेव तिमिल्सिनाबाट वादी दाबीबमोजिम ५ भागको १ भाग अंश पाउने ठहर्‍याई नवलपरासी जिल्ला अदालतबाट भएको सुरु फैसलालाई सदर गरी पुनरावेदन अदालत, बुटवलबाट मिति २०७१।१०।२८ मा भएको फैसला मनासिब देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: ढाकाराम पौडेल

इति संवत् २०७५ साल असार २४ गते रोज १ शुभम् ।

इजलास नं. १९

१

मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी र मा.न्या.श्री डम्बरबहादुर शाही, ०६९-CR-०५९०, जबरजस्ती करणी, नेपाल सरकार वि. धनेन्द्र राजवंशी

पीडिताले अदालतमा आई बकपत्र गर्दा प्रतिवादीले मलाई कहींकतै करणी गरेका छैनन्, वारदात मिति र समयमा प्रतिवादीले मलाई छुने, सुम्सुम्याउने, समाउने जस्तो केही कार्य गरेनन्, अनुसन्धानको क्रममा भएका कागजको बेहोरा सम्बन्धमा मलाई थाहा भएन भनी बकपत्र गरेको अवस्था पाइन्छ । साथै जाहेरवालासमेतले अदालतमा आई बकपत्र गर्दा, जाहेरी दिएपश्चात् बुझ्दै जाँदा प्रतिवादीले पीडितालाई

करणि गरेका होइनन् भनी थाहा पाएको भनी आफ्नो भनाइ लेखाएको पाइन्छ । उपर्युक्त आधारहरूलाई दृष्टिगत गर्दा पुनरावेदक वादीको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुने अवस्था र स्थिति नदेखिने ।

पीडिताको हाइमन जाली INTACT रहेको तथा पीडिताको Vagina भित्र No any cells seen भनी उल्लेख भई राखेको अवस्थामा करणी भएको भनी मान्न सकिने अवस्था आउँदैन र करणी नै नभएको अवस्थामा पीडिता चाहे बालिक होस् या नाबालिक त्यसले केही असर गर्दैन र करणी नै नभएको अवस्थामा कसैलाई दोषी मान्न सकिँदैन । किनभने कसैलाई दोषी साबित गर्नको लागि त्यसले कुनै अपराध गरेकै हुनुपर्छ । अपराध नै घटित नभएको अवस्थामा कसैले कसैलाई घटित नै नभएको अपराधको सम्बन्धमा दोषी साबित गर्न वा सजाय गर्न पनि मिल्ने नदेखिने ।

प्रतिवादी आरोपित कसुरमा स्वतन्त्र एवम् शंकारहित तवरबाट पुष्टि प्रमाणित हुन नसकी वादी पक्षका साक्षीकै बकपत्र तथा पीडिताकै मौकाको शारीरिक परीक्षण प्रतिवेदनसमेतबाट अभियोग दाबी खण्डित भई प्रतिवादीको निर्दोषिताको जिकिर समर्थित भई रहेको देखिन आउँछ । यस परिप्रेक्ष्यमा मिसिल संलग्न समग्र प्रमाणको वस्तुनिष्ठ विवेचना नगरी मुद्दाका एक पक्षबाट संकलन गरेको प्रमाणको आधारमा मात्र यी प्रतिवादीले जबरजस्ती करणी गरेको भनी कसुरदार ठहर्‍याई निजलाई मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणीको महलको ३(२) नं. तथा बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) समेतका आधारमा ४ वर्ष कैद सजाय हुने भनी सुरु झापा जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८।१।२० मा भएको फैसलालाई उल्टी गरी प्रतिवादी घनेन्द्र राजवंशीले आरोपित कसुरको अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने गरी पुनरावेदन अदालत, इलामबाट मिति २०६९।३।११ मा भएको फैसलालाई अन्यथा गर्नुपर्ने नदेखिने ।

तसर्थ पीडिताको हाइमन जाली INTACT

रहेको तथा पीडिताको Vagina भित्र No any cells seen भनी उल्लेख भई राखेको अवस्थामा करणी भएको भनी मान्न सकिने अवस्था नभएको र करणी नै नभएको अवस्थामा निर्दोष व्यक्तिलाई दोषी मान्न नमिल्ने हुँदा माथि उल्लिखित आधार कारणसमेतबाट जबरजस्ती करणीको वारदात र घटना भएको भन्ने पुष्टि नभएको अवस्थामा प्रतिवादी घनेन्द्र राजवंशीलाई अभियोग दाबीबमोजिम कसुरदार ठहर्‍याई निजलाई ४ (चार) वर्ष कैद सजाय गरी पीडितालाई रु.५०,०००।- (पचास हजार रुपैयाँ) क्षतिपूर्ति भराइदिने भनी सुरु झापा जिल्ला अदालतबाट भएको मिति २०६८।१।२० को फैसलालाई उल्टी गरी प्रतिवादी घनेन्द्र राजवंशीले आरोपित कसुरको अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने गरी पुनरावेदन अदालत, इलामबाट मिति २०६९।३।११ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: दिपेन्द्र तिवारी

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७५ साल वैशाख १० गते रोज २ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी र मा.न्या.श्री डम्बरबहादुर शाही, ०६९-CR-०६९०, कर्तव्य ज्यान, नेपाल सरकार वि. चौतिराज राईसमेत**

प्रतिवादी गोपी माया राईलगायतका अन्य प्रतिवादीहरूले अनुसन्धान अधिकारीसमक्षको बयानमा निज मृतकको चाल चलन राम्रो नभई मृतक चतुरमान राईले गाउँ घरमा गाई वस्तुको दूध, दही, हाँस, कुखुरालगायतका ससाना चीजवस्तुहरू चोरी गर्ने र घरमा नआई बाहिर बाहिर भागी हिँड्ने गरेकोमा मिति २०६७।४।९ मा फेला परेको हुँदा निजको बाबु नआउन्जेलसम्मको लागि भाग्न नसक्ने गरी बाँधेर राखेकोमा बाँधेकै ठाउँमा निज चतुरमान राईको मृत्यु भएको भन्ने देखिन आउँछ । प्रतिवादीहरूले अदालतमा बयान गर्दा तथा घटना विवरणका व्यक्तिहरूले घटनाको बारेमा उल्लेख गर्दा तथा वस्तुस्थितिका



मानिसहरूले वस्तुस्थितिका बारेमा स्पष्ट गर्दासमेत यी प्रतिवादीहरूले अधिकारप्राप्त अधिकारीसमक्ष गरेको बयान बेहोरालाई समर्थन गरेको पाइएबाट र पोस्टमार्टम रिपोर्टबाट Most Probable cause of death is asphyxia due to ligature अर्थात् श्वासप्रश्वासमा अवरोध भएको कारण मृत्यु भएको भन्ने उल्लेख भएको देखिँदा मृतकको मृत्यु प्राकृतिक नभई प्रतिवादीहरूले मृतकलाई लामो समयसम्म बाँधी छाडी गएको अवस्थामा पीडा भई सोही पीडाको कारणले मृत्यु भएको देखिन आउने ।

प्रतिवादीहरूको कुनै आपराधिक कार्यमा संलग्न रहेको देखिएकसुरदारकायमगर्नमनसायतत्वको विद्यमानता प्रमाणहरूबाट नै देखिनुपर्छ तर प्रस्तुत मुद्दाको वारदातमा प्रतिवादीहरूको मार्नेमनसायसम्मको आपराधिक मनसाय रहेको तथ्य वादी पक्षबाट स्वतन्त्र र वस्तुनिष्ठ प्रमाणहरूबाट पुष्टि गराउन सकेको पनि पाइँदैन । मार्नको लागि कुनै पूर्वयोजना बनाएको नदेखिई मृतक छोराले नै गर्ने गरेको गलत कार्यमा सुधार गर्न छोरालाई सम्झाउन निमित्त बाबु नआउन्जेलसम्मको लागि यी मृतक भाग्न नपाउने गरी बाँधेर राख्ने क्रममा निसासिएर मृतकको मृत्यु भएको देखिएको अवस्थामा प्रतिवादीहरूले गरेको कसुरजन्य कार्यलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. को दायराभित्र पर्छ भन्नु न्यायसङ्गत देखिन नआउने ।

मृतक र प्रतिवादीहरूबीच कुनै पूर्वरिसइवीलाग रहेको देखिन्न । मृतकलाई मार्ने कुनै पूर्व सोचाइ, योजना एवम् तयारी रहेको देखिन्न । मृतकको गलत आचरणलाई सुधारने हेतुले निजले गाउँ घरमा गाई वस्तुको दूध, दही, हाँस, कुखुरालगायतका ससाना चीजवस्तुहरू चोरी गर्ने गरेको अवस्थामा निजलाई सचेतसम्म गराउने उदेश्य राखी आफ्नै घरको बाहिरी दलानको थाममा खराने काठको किल्ला बाँधी सोही किल्लामा टसाई बाँधेको कारण मृतकको मृत्यु हुन सक्ने नदेखिए पनि सोही कारणले मृतकको मृत्यु भएको

अवस्थाले वारदातको पृष्ठभूमि अवस्था र परिस्थिति मनसाययुक्त र आवेशले प्रेरितको प्रकृतिको नभई मुलुकी ऐन, ज्यानसम्बन्धी महलको ५ नं. बमोजिम भवितव्यको कसुरको दायराभित्र पर्न देखिन आउने ।

अतः विवेचित आधार प्रमाणबाट तथा मनसाय तत्वको अभावमा आफ्नै छोरालाई आमासमेत भई होस नपुन्याई बाँधछाँद गरेको कारणबाट मृतकको मृत्यु भएको देखिँदा प्रतिवादीहरूलाई ज्यानसम्बन्धी महलको १३(३) नं. बमोजिम सजाय गर्ने गरी भएको सोलुखुम्बु जिल्ला अदालतको फैसला उल्टी गरी यी प्रतिवादीहरू चौतिराज राई, मचिन्द्र कुलुङ, बसन्त कुलुङ, जोडबुधन कुलुङ र गोपीमाया राईसमेतलाई ज्यानसम्बन्धी महलको ५ नं. को कसुरमा ऐ. को ६(२) नं. बमोजिम जनही २ वर्ष कैद र रु.५००१- जरिवाना हुने ठहर्न्याई पुनरावेदन अदालत, राजविराजबाट मिति २०६९।१।२० मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: दिपेन्द्र तिवारी

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७५ साल वैशाख १० गते रोज २ शुभम् ।

३

मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी र मा.न्या.श्री डम्बरबहादुर शाही, ०७०-CR-०४५९, वैदेशिक रोजगार ठगी, किरण नेपाल वि. नेपाल सरकार

प्रतिवादीले मिति २०६९।३।१८ मा श्री कृष्ण श्रेष्ठलाई गरिदिएको लिखतमा म किरण नेपालले श्री कृष्ण श्रेष्ठबाट आजैको मितिमा वैदेशिक रोजगारको लागि साइप्रस देशमा पठाई होटलमा कामसमेत लगाई दिने भनी रु.७,००,०००।- लिएको ठीक साँचो हो भनी लेखी सहीछाप गरी दिएको लिखत र निज प्रतिवादीले नै मिति २०६९।३।१८ मा नै श्री कृष्ण शाही खडगीलाई गरिदिएको लिखतमा म किरण नेपालले श्री कृष्ण शाही खडगीबाट आजैको मितिमा वैदेशिक रोजगारको लागि साइप्रस देशमा पठाई

होटलमा कामसमेत लगाइ दिने भनी रु.७,५०,०००।- लिएको ठीक साँचो हो भनी लेखी सही छाप गरिदिएको लिखतका सम्बन्धमा कही कतै उजुर बाजुर नगरेको वा सम्बन्धित अड्डा अदालतमा मुद्दासमेत नगरेको अवस्थाले उक्त लिखतलाई यी प्रतिवादीले स्वीकार नै गरेको देखियो । त्यसैगरी यी जाहेरवालाहरूले अदालतमा आई बकपत्र गर्दा निज प्रतिवादीले हामी जाहेरवालाहरूलाई साइप्रसको होटलमा काम गरेबापत ७५० युरो हुन्छ भनेर भिषा तथा कन्ट्र्याक्ट पेपर देखाई वैदेशिक रोजगारमा पठाउन भनी म श्रीकृष्ण श्रेष्ठबाट रु.७,००,०००।- र म श्रीकृष्ण शाही खड्गीबाट रु.७,५०,०००।- लिई लिखतबमोजिम वैदेशिक रोजगारमा नपठाई रकमसमेत फिर्ता नगरेको भनी मौकाको जाहेरीलाई समर्थन हुने गरी बकपत्र गरी राखेको अवस्थामा यी प्रतिवादीले वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० विपरीतको कार्य गरेको अवस्था देखिन नआउने ।

प्रतिवादीले अनुसन्धान अधिकृतसमक्ष तथा वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बयान गर्दा मैले कन्सल्टेन्सीको इजाजत मात्र लिएको हो वैदेशिक रोजगार व्यवसाय सञ्चालनको लागि इजाजतपत्र लिएको छैन भनी बयान गरेको देखिन्छ भने अर्कोतर्फ प्रतिवादीले जाहेरवालाहरूलाई मिति २०६९।३।१८ मा गरी दिएको लिखतमा साइप्रसमा काम लगाइदिन्छु भनी बेहोरा उल्लेख गरी रकम लिई लिखतसमेत गरिदिएको देखिँदा निज प्रतिवादीले विना इजाजत जाहेरवालाहरूलाई वैदेशिक रोजगारको लागि नै साइप्रस पठाउन लागेको भन्ने कुरा पुष्टि भइराखेको आधारसमेतबाट निज प्रतिवादीले वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० विपरीतको कार्य गरेको छैन भनी लिएको पुनरावेदन जिकिरसँग सहमत हुन नसकिने ।

जाहेरवालाहरू विदेश पुगी सकेका अवस्था छैन भने प्रतिवादीले अदालतमा गरेको बयानमा यी

प्रतिवादीको १ जना बच्चा १४ महिनाको र अन्य २ जना बच्चाहरू पनि १० र ११ वर्षको मात्र रहेको देखिँदा यी प्रतिवादीलाई वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा ४३ बमोजिम २ वर्ष कैद र रु.१,५०,०००।- तथा लिखत बमोजिमको रकम रु.१४,५०,०००।- र सोको ५०% प्रतिशतले हुने हर्जाना रकमसमेत प्रतिवादीबाट भरी पाउने ठहर्‍याई वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७०।२।१९ मा भएको फैसलालाई अन्यथा भन्न नमिल्ने ।

अतः यी प्रतिवादीले वैदेशिक रोजगार व्यवसाय सञ्चालनको लागि इजाजतपत्र नलिएको र वैदेशिक रोजगारको लागि साइप्रस देशमा पठाई होटलमा कामसमेत लगाइदिन्छु भनी रु.१४,५०,०००।- रूपैयाँ लिई लिखत गरेको तथा निजले अनुसन्धान अधिकृतसमक्ष बयान गर्दा साइप्रसमा काम लगाइदिन्छु भनी यी जाहेरवालाहरूसँग रु.१४,५०,०००।- लिएको भनी कसुरलाई स्वीकारी बयान गरेको तथा सो बेहोरालाई पुष्टि गर्ने गरी यी जाहेरवालाहरूले वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणमा बकपत्र गरेको देखिँदा प्रतिवादीले वैदेशिक रोजगार ऐन, २०६४ को दफा १० विपरीतको कसुर अपराध गरेको कुरा मिसिल संलग्न कागज प्रमाणहरूबाट पुष्टि हुन आएकोले यी प्रतिवादी किरण नेपाललाई २ वर्ष कैद र रु.१,५०,०००।- (एक लाख पचास हजार) जरिवाना हुने र जाहेरवालाहरूले लिखतबमोजिमको रकम रु.१४,५०,०००।- (चौध लाख पचास हजार) र सोको ५०% प्रतिशतले हुने हर्जाना रकमसमेत प्रतिवादीबाट भरी पाउने ठहर्‍याई वैदेशिक रोजगार न्यायाधिकरणबाट मिति २०७०।२।१९ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: दीपेन्द्र तिवारी

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७५ साल वैशाख १० गते रोज २ शुभम् ।

**मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी र मा.न्या.श्री डम्बरबहादुर शाही**, ०७०-CR-१३५५, आगोलागी, नेपाल सरकार वि. सोनेलाल महतोसमेत

प्रतिवादीहरूले रामविनय महतोको कटघेरामा आगो लगाई रहेको हामीले देखेको हो भनी मौकामा कागज गर्ने भोला राय, सरोज दास, भगिया देवी दास र रामहृदय महतोसमेतले सो वारदात तथा आफ्नो बेहोरालाई पुष्टि एवं प्रमाणित गर्न हेतु अदालतमा उपस्थित भई बकपत्र गरेको देखिँदैन । उक्त घटना विवरणका सम्बन्धमा कागज गर्ने ईन्द्रदेव वैठा, रामवृक्ष महतो, किशोर राउत र भिमकुमार सापकोटालगायतका व्यक्तिहरूले यी प्रतिवादीहरूले रामविनय महतोको कटघेरामा आगो लगाएको भनी सुनी थाहा पाएको भन्ने बेहोरा लेखाएको र सो बेहोरालाई पुष्टि गर्न वादी पक्षले अन्य स्वतन्त्र सबुत प्रमाण पेस गर्न सकेको नदेखिँदा शंकाको भरमा मात्र यी प्रतिवादीहरूलाई दोषी ठहर गर्न मिल्ने नदेखिने ।

अनुमान, आशंका र जाहेरवालाको जाहेरी बेहोराको आधारमा मात्र कुनै पनि व्यक्ति आपराधिक कार्यमा संलग्न छ नै भनी निष्कर्ष निकाल्नु न्यायोचित हुँदैन । प्रतिवादीको कुनै आपराधिक कार्यमा संलग्न रहेको देखिए निजहरूको संलग्नता संकलित प्रमाणहरूबाट शंकाहित तवरले ठोस तथ्ययुक्त आधार प्रमाणहरूबाट प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा २५ अनुसार पुष्टि प्रमाणित भएको हुनुपर्दछ तर प्रस्तुत मुद्दाको वारदातमा प्रतिवादीको संलग्नता रहेको तथ्य वादी पक्षबाट स्वतन्त्र र वस्तुनिष्ठ प्रमाणहरूबाट पुष्टि गराउन सकेको पनि पाइँदैन । यस अवस्थामा प्रतिवादीहरूले मुलुकी ऐन, आगो लगाउनेको १ नं. र ४ नं. बमोजिमको कसुर अपराध गरेको भनी भन्न कानूनसङ्गत देखिन नआउने ।

तसर्थ प्रतिवादी उक्त घटना वारदातमा आफ्नो संलग्नता नरहेको भनी इन्कारी रहेको र वादी

पक्षले सो घटनालाई पुष्टि गर्ने साक्षी सबुदलगायतका कुनै ठोस सबुत प्रमाण पेस गर्न नसकेको तथा प्रतिवादीहरूले मुलुकी ऐन, आगो लगाउनेको १ नं. र ४ नं. को कसुर अपराध गरेको कुरा मिसिल संलग्न कागज प्रमाणहरूबाट पुष्टि हुन नआएकोले ठोस सबुद प्रमाणको अभावमा यी प्रतिवादीहरू सोनेलाल महतो, वीरेन्द्र महतो, हरेन्द्र महतो र जयनारायण महतोलाई मुलुकी ऐन, आगो लगाउनेको महलको १ नं. र ४ नं. बमोजिम कसुरदार ठहर्‍याई जनही ६ महिना कैद र बिगो रु.१,३५,०००।- प्रतिवादीहरूबाट दामासाहीले भराउने गरी सुरु सर्लाही जिल्ला अदालतबाट मिति २०६८।१२।२२ मा भएको फैसला उल्टी गरी प्रतिवादीहरूलाई अभियोग दाबीबाट सफाइ पाउने ठहर्‍याई पुनरावेदन अदालत, जनकपुरबाट २०७०।५।१९ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: दिपेन्द्र तिवारी

कम्प्युटर: पद्मा आचार्य

इति संवत् २०७५ साल वैशाख १० गते रोज २ शुभम् ।

**मा.न्या.श्री पुरुषोत्तम भण्डारी र मा.न्या.श्री डम्बरबहादुर शाही**, ०७२-CR-०३१२, जबरजस्ती करणी उद्योग, नेपाल सरकार वि. सर्वेश लोनिगा

पीडित अदालतमा समेत उपस्थित भई बकपत्र गर्दा प्रतिवादीले आफ्नो कट्टु खोली मोबाइलमा फोटो देखाई मलाई काखमा राखेको हो र पछाडी लिङ्ग लगाएको हो भन्ने बेहोरा लेखाई मौकामा गरेको कागजलाई पुष्टि गरेको देखिन्छ । त्यसैगरी जाहेरवाली सबाना खानले अदालतसमक्ष आई आफ्नो जाहेरीमा भएको बेहोरा र सहीछाप मेरो नै हो भनी सनाखत गरी बकपत्र गरेकोसमेतका आधार प्रमाणहरूबाट प्रतिवादीले पीडितलाई जबरजस्ती करणी उद्योग गरेको पुष्टि हुन आउने ।

प्रतिवादीको उमेर वारदात हुँदाको मिति

२०७५।४।२ सम्म १४ वर्ष १० महिना ७ दिन रहेको देखिँदा निज प्रतिवादी १४ वर्ष पूरा भई १६ वर्ष ननाघेको अवस्थामा ५ वर्ष उमेरकी पीडितालाई १४ देखि १६ वर्षबीचको उमेरका पीडकले जबरजस्ती करणी उद्योगको कसुर अपराध गरेको देखियो । यस अवस्थामा मुलुकी ऐन, जबरजस्ती करणी महलको ३(६) नं. बमोजिम हुने सजायको आधा सजाय गर्नुपर्नेमा सो नगरी जबरजस्ती करणी महलको ३(१) नं. बमोजिम उमेर पुगेको व्यक्तिसरह न्यूनतम् १० (दश) वर्षको आधा अर्थात् ५ (पाँच) कैद सजाय हुने ठहर्न्याएको मिति २०७५।७।१६ को सुरु कैलाली जिल्ला अदालतको फैसलालाई केही उल्टी गरी बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) बमोजिम २ वर्ष ६ महिना कैद सजाय हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत, दिपायलको मिति २०७२।१।२३ को फैसलालाई अन्यथा भन्न मिल्ने नदेखिने ।

तसर्थ प्रस्तुत मुद्दामा संकलित तथ्य, प्रमाण, अनुसन्धानको काम कारबाही तथा प्रतिवादीको कसुर गर्दाको उमेर अवस्थालाई समेत विचार गर्दा निज प्रतिवादीलाई जबरजस्ती करणी महलको ३(६) नं. बमोजिम हुने सजायको आधा सजाय गर्नुपर्नेमा सो नगरी जबरजस्ती करणी महलको ३(१) नं. बमोजिम उमेर पुगेको व्यक्तिसरह न्यूनतम् १० (दश) वर्षको आधा अर्थात् ५ (पाँच) वर्ष कैद सजाय हुने ठहर्न्याई सुरु कैलाली जिल्ला अदालतको फैसला केही उल्टी गरी बालबालिकासम्बन्धी ऐन, २०४८ को दफा ११(३) बमोजिम २ वर्ष ६ महिना कैद सजाय हुने ठहर गरेको पुनरावेदन अदालत, दिपायलबाट मिति २०७२।१।२३ मा भएको फैसला मिलेकै देखिँदा सदर हुने ।

इजलास अधिकृत: दिपेन्द्र तिवारी

इति संवत् २०७५ साल वैशाख १० गते रोज २ शुभम् ।

**“मेलाभिलाप गरौं, विवाद ढाँढाऔं”**

**- सर्वोच्च अदालत, मेलाभिलाप समिति**